अहल्या विमर्श
- श्रवण कुमार उपाध्याय

अहल्या विमर्श

सम्पादक
श्रवण कुमार उपाध्याय

सम्पादक वृन्द
राजेन्द्र श्रौत्रिय
सुनील दत्त साँखी
विक्रम दत्त साँखी
नवनीत साँखी

शब्द संधान, जोधपुर

पुस्तक प्राप्ति अन्य स्थल :

गीता प्रेस पुस्तक भण्डार
दुकान नं. 28, गीता भवन, जोधपुर
☎94149 19884 (विष्णु जोशी)

इस पुस्तक का प्रकाशन बेहद सावधानीपूर्वक किया गया है, फिर भी इस पुस्तक में कोई त्रुटि रहती हैं तो इसके लिये प्रकाशक, सम्पादक और लेखक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी प्रकार के परिवाद के लिये न्यायिक क्षेत्र जोधपुर ही मान्य होगा।

प्रकाशक :

शब्द संधान
प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
427 'ए' प्रथम 'सी' रोड़ सरदारपुरा
जोधपुर – 342003 (राजस्थान)
☎ 0291-2640109, 72208-24564
अणु डाक – shrawanupadhyay@gmail.com

© शब्द संधान

ISBN - 978-81-942333-1-2

पहला संस्करण : 2021

मूल्य : ₹**200** (दो सौ रुपये मात्र)

आवृत्ति : 1000

आकल्पन : गोरी सुताय

आवरण परिकल्पना : अवधेश कुमार उपाध्याय

शब्द संधान के लिए टाईप सेटिंग परिहार डीटीपी एवं मुद्रण भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर द्वारा

'AHILYA VIMARSH'
Edited by Sharwan Kumar Upadhyay
Publisher: **Sabdh Sandhan,** Jodhpur (Raj.)

First Edition : 2021 Price : ₹200

अपेक्षा

आपसे - सबसे
अत्यन्त व्यस्त जीवन
के कुछ पल निकालकर
'अहल्या विमर्श' पुस्तक
पढ़कर अनुग्रहित कीजिए।

आत्मीय साधुवाद

उन सभी रचनाकारों का जिन्होंने इस पुस्तक के लिए
अपनी रचनाएँ भेज कर हमें अनुग्रहित किया।

"अर्पित"

भगवद् भक्ति परायणाः प्रातः वन्दनीया, पूजनीया,

मातृचरण श्यामा देवी उपाध्याय

जिन्होने पंचमहाभूत तत्वों से
मुझको अस्तित्व प्रदान किया।
माँ जिन्होने मुझे सद्-संस्कार दिये और
उन्हीं संस्कारों के कारण
मेरे अंतस्थः में संस्कृति के संवर्द्धन की
प्रेरणा व शक्ति प्राप्त होती हैं।
उनके ही आशीर्वाद एवं अभीष्ट की पूर्ति के रुप में
प्रस्तुत यह कृति सादर अर्पित।

"आशीर्वाद"

ऋषिवत् हमारे प्रेरणा स्रोत

श्री नन्दकिशोर शर्मा नेक (जाजड़ा)

जिनका आशीर्वाद एवं ज्ञान

हमारा पथ प्रदर्शक है।

आभार अभिव्यक्ति-सृजन में सहयोगियों के प्रति

'अहल्या विमर्श'

के सृजन का विचार
भले ही मेरे भीतर उठा हो लेकिन
इसकी साकार अभिव्यक्ति में
प्रबुद्ध शब्द-शिल्पकारों, चिंतकों, विचारकों
और मनीषियों का योगदान हैं ।

अर्पित भाव कुसुम
जिनकी
मंगल-मूर्ति में मातृत्व की
स्नेहल छाया के सुखद स्पर्श का
अनुभव किया
उन्हीं मामी जी

स्व. श्रीमती अम्बादेवीजी साँखी

(धर्मपत्नी स्व. श्री छोटेलालजी साँखी, डेरियावाले)

के
श्री चरणों में
श्रद्धा, भक्ति और नम्रता के साथ
भाव कुसुम अर्पित है।

- श्रवण कुमार उपाध्याय

‘अहल्या’

''विवाह और उससे उत्पन्न जिम्मेदारियाँ स्त्रियों का सर्वोच्च कार्य है। बाबा भगवानदास ने कहा, 'स्त्रियों की बहु-संख्या स्वभावत: अविवाहित कुमारियाँ बनने के बजाय घर की लक्ष्मियाँ, सरस्वतियाँ और अन्नपूर्णायें बनने के अधिक उपयुक्त हैं, जहाँ उनकी उपस्थिति ही घर के लोगों के जीवन में प्रसन्नता और शक्ति लाती और अपने कार्यों को सफलता-पूर्वक करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करती है।'' यह ठीक ही कहा गया है कि - 'मातृत्व सारी पुरोहिताइयों में सर्वोत्तम है।'

- आचार्य ध्रुव

''जिस देश अथवा राष्ट्र में नारी-पूजा नहीं, वह देश या राष्ट्र कभी महान या उन्नत नहीं हो सकता। नारी-रूपी शक्ति की अपगणना करने से ही आज हमारा अधः पतन हुआ है। जहाँ स्त्रियों का आदर न हो, जहाँ स्त्रियाँ दुःख में समय बिता रही हों, उस समाज अथवा देश की उन्नति की आशा करना दुराशा-मात्र है। अतएवं, स्त्रियों को जागृत करना चाहिए। स्त्रियाँ महामाया की प्रतिभा है। जब तक उनका उद्धार न होगा, हमारे देश का उद्धार होना असम्भव है।''

❍ ''स्त्रियों का प्रश्न पुरुषों का प्रश्न है, क्योंकि, दोनों का एक-दूसरे पर असर पड़ता है। चाहे भूतकाल हो या भविष्य, पुरुषों की उन्नति बहुत-कुछ स्त्रियों की उन्नति पर निर्भर है। प्राचीन हिन्दू-धर्म नारियों से वास्तविक न पैदा करने की आशा करता है पर उन स्त्रियों से आप निश्चय ही वास्तविक नर पैदा करने की आशा नहीं कर सकते, जो कि गुलामी की जंजीरों से जकड़ी हुई हैं और प्राय: सभी बातों में पराश्रित हैं।'' हम इसीलिए नर नहीं है, क्योंकि स्त्रियाँ वास्तविक नारियाँ नहीं है। इसीलिए, पुरुषों से मैं कहता हूं, तुम स्त्रियों को अपने दासत्व से पूर्णत मुक्त होने दो। उन्हें अपने बराबर समझो।''

– लाला लाजपतराय

❍ Let the husband render unto the wife due benevolences and likeunse also the wife unto the husband.

- Holy Bible

❍ ''जो पिता, भाई, पति और देवर अपना कल्याण चाहें, उन्हें अपनी पुत्री, बहन, स्त्री और भावज का अपमान नहीं करना चाहिए।''

– मनुस्मृति

❍ ''यदि पूछा जाय कि एक शब्द में वह लक्ष्य बताओ, जिसको ध्यान में रखने से विद्यापीठों में-क्या पुरुषों के और क्या महिलाओं के-भूल न होगी, तो वह शब्द 'मातृ-पूजा' है।

–श्री भगवानदास (काशी)

❍ ''जिस घर में स्नेह और प्रेम का निवास है, जिसमें धर्म का साम्राज्य है, वह सम्पूर्णत: सन्तुष्ट रहता है- उसके सब उद्देश्य सफल होते हैं।''

– तामिलवेद

शुभकामना संदेश

02 अक्टूबर, 2020

श्रीमान् श्रवण कुमार उपाध्याय
सम्पादक

मान्यवर,

चिरकाल से माता अहल्या के प्रति भ्रांति पूर्ण, कपोल-कल्पित, आधारहीन आख्यान का प्रचलन इतिहास में समाहित है। जैसा कि पाँच कन्याओं की स्तुति में देवी अहल्या का नाम प्रथम स्थान पर है 'अहल्या, मंदोदरी, तारा' आदि। यह श्लोक देवी अहल्या के उद्दात चरित्र को प्रतिष्ठित करता है यह सर्वमान्य है।

आप द्वारा चिरकाल से प्रचलित भ्रांति को विलोपित कर देवी अहल्या के निष्कलंक चरित्र को प्रतिष्ठित करने का जो बीड़ा उठाया गया है, वह स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है। आपके इस प्रयास से समाज की शुद्ध सोच को स्थापित किया जाए ऐसा मेरा मत है।

मैं आपके इस प्रयास की भूरी-भूरी प्रशंसा करती हूं एवं आपके इस पुण्य लक्ष्य की प्राप्ति की कामना करती हूँ एतदर्थ आपको साधुवाद।

अध्यक्षा

ममता शर्मा
अध्यक्षा, अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महिला महासभा
राजस्थान प्रदेश

शुभकामना संदेश

02 अक्टूबर, 2020

आदरणीय सम्पादक
श्री श्रवण कुमार उपाध्याय

सादर नमस्कार

यह जानकर अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हुई कि 'शब्द संधान संस्था' द्वारा माता अहल्या के जीवन पर प्रकाश डालने वाली पुस्तक 'अहल्या विमर्श' का प्रकाशन जोधपुर से किया जा रहा है। कुछ दुराग्राही व विक्षिप्त मानसिक तत्त्वों ने हिन्दू धर्म के विरूद्ध ऐतिहासिक तथ्यों से छेड़छाड़ कर हमारे प्राचीन इतिहास को धूमिल करने की कोशिश की है। माता अहल्या एक सती नारी थी। इन्द्र के साथ उनका जबरन प्रसंग उनके सतीत्व व गरिमा के विरूद्ध जानबूझ कर रचा षड्यंत्र है। सती स्त्री का तेज, पर-पुरुष को छूने भी नहीं दे सकता। सीता माता की एक तिनके ने रावण से रक्षा की थी। 'अहल्या-इन्द्र-प्रसंग' माता अहल्या का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण नारी जाति का अपमान है।

'अहल्या-विमर्श' पुस्तक नि:संदेह इस प्रकार की भ्रांतियां दूर कर माता अहल्या पर लगाये गये आरोप का प्रत्युत्तर होगी।

पुस्तक प्रकाशन की आपको बहुत-बहुत बधाई तथा विसंगति व भ्रांति फैलाने वाले प्रसंग का खण्डन करने के लिये बहुत-बहुत साधुवाद।

डॉ. वीणा जाजड़ा
संरक्षक, अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महिला महासभा
पावटा, जोधपुर

शुभकामना संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री श्रवण कुमार उपाध्याय के सम्पादन में शब्द संधान, जोधपुर द्वारा 'अहल्या विमर्श' का प्रकाशन हो रहा है।

भारतीय संस्कृति ने संसार में जो ऊँचाई प्राप्त की, वह अप्रतिम है। मानवीय एवं नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत भारतीय संस्कृति में सदैव सत्य, आदर्श एवं आध्यात्मिक अनुशीलन पर बल दिया गया है किन्तु इसे विडम्बना ही कहा जायेगा कि विकृत मानसिकता के कुछ तत्वों द्वारा तथ्यों को भ्रामक तरीके से प्रस्तुत कर भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को दूषित करने का कुत्सित प्रयास करके भ्रमपूर्ण स्थिति पैदा की गयी। देवी अहल्या के प्रसंग में भी ऐसा ही दुराग्रही प्रयास किया गया है।

यह हर्ष का विषय है कि श्रवण कुमार उपाध्याय के सम्पादन में प्रकाशित 'अहल्या विमर्श' में देवी अहल्या के बारे में वास्तविक तथ्य प्रस्तुत करके वस्तुस्थिति को स्पष्ट करने का सार्थक प्रयास किया है। इस अभूतपूर्व कार्य के लिए सम्पादक श्री श्रवण कुमार उपाध्याय सहित सभी विद्वान लेखक बधाई के पात्र है।

'अहल्या विमर्श' के प्रकाशन पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं अनन्त शुभकामनाएं।

– **त्रिलोक सिंह ठकुरेला**
(साहित्यकार एवं सम्पादक)
बंगला संख्या–99,
रेलवे चिकित्सालय के सामने,
आबू रोड़ – 307026

अहल्या-द्रौपदी-कुन्ती-तारा-मन्दोदरी तथा।
पंञ्चकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्।।

अहल्या को पुराणों में पातक नाशिनी के रुप में याद किया जाता है। उसका नाम उन पंचकन्याओं में सबसे पहले आता है, पातक-नाश के लिए जिनका नित्य-स्मरण किया जाता है।

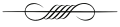

अहनि स्वपतौ सूर्ये, अहल्या लीयते, उषा।
कथमपि न जारत्वं, स्वपतौ रमणाल्लयः।
इन्द्रः सूर्यः अहन्, चैव, पर्यायवाचिनो यतः।
तसमान्नास्त्येव जारत्वमहल्या चेन्द्रयोर्मिथः।

Since Sun in Indra, dawn in Ahalya,
Ahalya meets with sun in early morning
Meeting husbend is not wrong to Ahalya
And after raising sun meats in morning.
Vedic story described as above is nice.
But later on it is not naturally seen nice.

देवी अहल्या, द्रौपदि, तारा, कुन्ती, मन्दोदरि धन्या।
प्रभुकी परम अनुग्रहभाजन पावन ये पाँचों कन्या।।

नारी अस्य समाजस्य कुशलवास्तुकारा अस्ति।
Woman is the perfect Architect of the Society.

आलेख आँगन

क्र.	शीर्षक	पृ.
1.	**आमुख** –श्रवण कुमार उपाध्याय	19–20
2.	**आत्म निवेदन** –श्याम सुन्दर भट्ट	**21–22**
3.	**प्राक्कथन** – सीताराम जोशी	23–24
4.	**भूमिका** – राजेन्द्र कृष्ण जोशी 'फौजी'	25–32
5.	**अहल्या प्रसंग : एक रूपक कथा** – महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री	33–36
6.	**अहल्या विमर्श** – प्रो. रहस बिहारी द्विवेदी	37–42
7.	**अहल्या इन्द्रजार विषय पर प्रामाणिक समाधान** – प्रो. डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री	43–47
8.	**इन्द्र और अहल्या के संबंध** – श्याम सुन्दर भट्ट	48–52
9.	**इन्द्र के कितने रूप** – देवदत्त पटनायक	53–55
10.	**सती अहल्या** – पं. सत्यनारायण शास्त्री 'काव्यतीर्थ'	56–58
11.	**वन्दनीय अहल्या** – डॉ. बद्रीप्रसाद पंचौली	59–61

12. **जीवन, समाज और राष्ट्र का अभिवर्धन करने वाला अक्षपाद गौतम** 62–64
‘ डॉ. बद्रीप्रसाद पंचौली

13. **अहल्ययौ इन्द्र जार** 65–69
– जब्बरमल शर्मा

14. **देवी अहल्या परम पवित्र पंचकन्या** 70–76
– डॉ. पं. जितेन्द्र व्यास

15. **श्रीराम द्वारा अहल्या की वन्दना अहल्या – महापातक नाशिति** 77–82
– पं. कृष्णानन्दोपध्याय

16. **मातेश्वरी अहल्या** 83–88
– श्रवण कुमार उपाध्याय

17. **अहल्या प्रसंग** 89–92
– पत्रकार सुनील दत्त साँखी

18. **अहल्या चित्र व कविता कलाप** 93–96
– व. पत्रकार राजेन्द्र कुमार श्रौत्रिय

19. **वाल्मीकि रामायण में अहिल्या प्रसंग : एक दृष्टि** 97–114
– डॉ. डोली जैन

20. **अहल्या** 115–119

21. **अहल्या–गौतम त्र्यम्बकेश्वर आश्रम** 120–125
– नवनीत सांखी

22. **पंच कन्यायें** 126–137
– डॉ. वीणा जाजड़ा

23. **अहल्योपख्यान** 138–141
– राजराजेश्वरी उपाध्याय

24. **विश्व का गौरव : महर्षि गौतम** 142–144
– माला शर्मा

आमुख

अहल्या-द्रोपदी-कुन्ती-तारा-मन्दोदरी तथा।
पञ्चकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातक-नाशनम्।।

अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मन्दोदरी का नित्य स्मरण करना चाहिए। इससे महापातक नष्ट हो जाते हैं। यह श्लोक पातक नाश के लिए स्मरण किया जाता है।

गौतम नारी अहल्या का वर्णन हमें, शतपथ ब्राह्मण, विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्मपुराण, स्कन्द पुराण, पद्म पुराण, लिंग पुराण, गणेश पुराण आदि पुराणों एवं बाल्मीकि रामायण व रामचरित मानस में मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में अहल्या को मैत्रेयी अहल्या कहा गया है। यह मुद्गल ऋषि व मेनका के संयोग से उत्पन्न हुई बताई गई है। अहल्या को ब्रह्मा की मानस पुत्री कहा गया है।

अहल्या शब्द के शाब्दिक अर्थ की बात करे तो इसका अर्थ हैं दोष रहित, दूसरा अर्थ जिस भूमि पर हल न चला हो अर्थात कुमारी 'हल' कहते है पाप को तथा हल 'हा' भाव 'हल्य' जिसमें पाप न हो उसे 'अहल्या' कहा जाता है। जिसकी उत्पत्ति बिना मैथुनी सृष्टि से होती है। उसे 'अहल्या' कहा जाता है।

इस पुस्तक के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य इन्द्र-अहल्या जार की घटना का खण्डन करना है। इन्द्र-अहल्या की घटना एक कपोल कल्पित घटना है। मध्य काल में वेदों के अनर्थक भाष्य में अनेक कहानियां बनाकर हमारे धार्मिक ग्रन्थों को दूषित करने का प्रयास किया गया। जिसके कारण लोग धर्म से विमुख होने लगे। हमें धर्मग्रन्थों का निरुक्त के अनुसार निरुपण करना होगा।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए अनेक विद्वानों को पत्र भेजकर शोध व चिन्तन पूर्ण लेखों के लिये निवेदन किया। विद्वानों के शोधपूर्ण आलेख प्राप्त हुए। इन संकलित लेखों में कुछ बातों की पुनरावृति है, किन्तु विचारों की भिन्नता है। हम इन विद्वानों के अभारी है। जिनके शोध पूर्ण लेख से इस पुस्तक को रत्नवत सुसज्जित करके अपनी आभा से चमका रहे हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए प्रथम आहुति के रूप में मुझे राजस्थान सरकार द्वारा प्रेरणा स्त्रोत पुरस्कार (वर्ष 2018) के रूप में मिली 10,000 (दस हजार रुपये) की राशि अर्पित की। यह प्रभु प्रेरणा है ताकि इस पुस्तक का प्रकाशन हो सके। आशा है, यह पुस्तक पाठकों को पसंद आएगी और उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सम्पादन यात्रा में मुझे अनेकानेक सज्जनवृंद का स्नेह और सहयोग मिला। मैं सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

- श्रवण कुमार उपाध्याय
श्री सन्देश, जोधपुर (राज.)
जंगम वाणी-7220824564

आत्म निवेदन

मैं वही अहल्या हूँ, जिसे आप महर्षि गौतम की पत्नी, शतानन्द एवं अंजना की माता के रूप में पहचानते हैं। मैं सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी की आयोनिजा पुत्री हूँ। आप मेरी, इंद्र की ओर गौतम ऋषि की उन घटनाओं से परिचित है, जिन्हें पुराणों एवं काव्यों में गाया गया है। पुराणों के अनुसार मैंने इन्द्र के साथ जारकर्म किया था। मेरे पति जिन्हें आप महर्षि कहते हैं, वे जारकर्म हेतु आए इन्द्र की उपस्थिति को नहीं भांप पाये। क्या ऐसा व्यक्ति महर्षि कहे जाने योग्य है? जगत्पति ब्रह्मा जी की पुत्री मैं इतनी कमजोर थी, कि मैं गौतम ऋषि का स्वांग कर के आए किसी बहरुपिये को नहीं पहचान सकी। आपकी मान्यताओं पर यदि विश्वास किया जाए तो देवताओं का अधिपति व्यभिचारी है। इससे यह भी ध्वनित होता है कि देवताओं का अधिपति यदि भ्रष्ट है तो वे देवता कैसे होंगे जिन्हें हम अपना सर्वस्व समझते हैं। क्या यह उदाहरण एक सर्वथा भ्रष्ट संस्कृति का नहीं है?

आप इस पर भी विचार करें, कि वैदिक साहित्य में हमारे परिचय के साथ ऐसी किसी घटना का उल्लेख नहीं है, जिसे आधार बनाकर आपने हम लोगों को स्तरहीन आचरण करने वालों के रूप में पाला हुआ है। भगवान राम मुझे ठोकर लगाएंगे और शिलारूप में, मानवी स्वरूप में बदल जाऊँगी। मर्यादा रक्षक राम ऋषिपत्नि से परिचय, पैरों के स्पर्श जैसी नई विधि से करेगा, क्या यह विवेचन आपको तर्कसंगत लगता है? जो कहानी सुनी है, उसका विवरण बोद्धावतार के पश्चात निर्मित पुराणों एवं काव्यों में मिलता है। बुद्धकाल के पहले हम पवित्र थे, परंतु बाद में हम भ्रष्ट हो गए। शोधकर्ताओं को इस विषय पर गंभीरता से सोचना चाहिए कि सनातन सोच की लकीरों को छोटा करने करने वाले नए सम्प्रदायों ने हमारी कहानी को क्षेपक श्लोकों के माध्यम से ग्रन्थों में समाहित तो नहीं किया है?

मुझे प्रसन्नता है कि भारत के प्रतिष्ठिन विद्वानों का ध्यान हमारी छवि की ओर गया है। हमारी गाथा को माध्यम बनाकर ऋषियों ने दिन रात जैसी कई प्राकृतिक अवधारणाओं को स्पष्ट किया गया है। अहल्या एक नाड़ी का भी नाम है, जिसका संबंध सुषुम्ना नाड़ी से है। गौतम, चन्द्र नाडी का नाम है। जब अहल्या नाड़ी एवं गौतम अर्थात् चन्द्र नाड़ियाँ आपस में मिलकर उस समय अपना स्वतंत्र अस्तित्व खो देती है, जब उन्हें इंद्ररूप सूर्य के प्रकाश का दर्शन होता है।

इसी प्रकार इंद्र रूप आत्मदर्शन का आभास भी तभी होता है, जब मन एवं बुद्धि अर्थात गौतम एवं अहल्या अपना अस्तित्व मिटा देते हैं।

विद्वानों द्वारा लिखे गए लेख आपकी वृद्ध धारणाओं में बदलाव लाऐंगे इसी कामना के साथ... अहल्या

- श्याम सुन्दर भट्ट

प्राक्कथन

शब्द-संधान जोधपुर द्वारा प्रकाशित 'अहल्या विमर्श' पुस्तक में भारत के ख्यात-विख्यात मनीषी, शोधकर्ता, प्रखर विचारक, लेखक एवं वेद, पुराणों के अध्येता विद्वानों यथा देवर्षि कलानाथ शास्त्री, प्रो. रहस बिहारी द्विवेदी, उस्मानिया विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री, श्यामसुन्दर भट्ट, पं. सत्यनारायण शास्त्री, डॉ.बद्रीनारायण पंचोली, जब्बरमल शर्मा आदि विद्वानों व सम्पादक श्रवण कुमार उपाध्याय तथा उनके सहयोगी सम्पादक मण्डल के सदस्यों के 'इन्द्र अहल्या जार' की कपोल कल्पित चिरकाल से जन-मानस को उद्वेलित करती इस घटना का खण्डन करना रहा है।

विद्वानों ने 'इन्द्र अहल्या जार' कथा पर विमर्शात्मक अनुशीलन किया है। चिरकाल से जन-मानस में प्रचलित इस कथा को उसी स्वरूप में मान्यता न देते हुए गम्भीर विचार विमर्श व उन कारणों की शोध करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। यही इस पुस्तक का उद्देश्य है। शतपथ ब्राह्मण से लेकर राम चरित मानस तक अहल्या की कथा पाया जाना किन्तु उसके पिता के नामों में विभिन्नता होना देवर्षि कलानाथ शास्त्री के मतानुसार यह कथा ऐतिहासिक अभिलेख के रूप में मान्य नहीं है। प्रो. डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री ने भी वेद-पुराणों आदि ग्रंथों के माध्यम से इस आधारहीन व भ्रांतिपूर्ण कथा का खण्डन किया है।

अत: हजारों वर्षों से प्रचलित भ्रांतियुक्त कथा का खण्डन करते हुए माता अहल्या के निष्कलंक चरित्र को प्रतिष्ठित करने का अहल्या विमर्श पुस्तक में जो विद्वानों ने गहन शोध व अनुशलीन के माध्यम से कार्य किया है, वह ऐतिहासिक है।

धर्म प्रेमी बंधुओं के लिए हर्ष व संतोष का विषय है। इस श्रम साध्य प्रयास के लिए सम्पादक व प्रकाशक श्रवण कुमार उपाध्याय अवश्य ही बधाई के पात्र है।

- सीताराम जोशी
(साहित्यकार)
शांति सदन, 7 पानी दरवाजा
पाली- मारवाड़ (राजस्थान)

भूमिका

भूतं भविष्यत् भुवि वर्तमानं,
समस्त कार्याप्तिनिबन्धनं यत्
शास्त्रं विनिर्श्चत्य विचक्षणेन,
धार्य्यं हृदि स्वान्यहितैकहेतुः।।

अर्थात भूत भविष्य और वर्तमान में, संसार में सम्पूर्ण कार्यों को प्राप्त करने का एक मात्र साधन शास्त्र है विद्वानों को अपना और दूसरों के हित करने के लिए भी एक मात्र साधन शास्त्र है। विद्वानों को अपना और दूसरों के हित करने के लिए भी एक मात्र साधन शास्त्र ही सहारा है। यह बात सभी बन्धुओं को अपने हृदय में धारण कर लेनी चाहिए। जैसा कि पण्डित जीवन्धर अपने ग्रंथ 'अमरसार' में इस बात का प्रकटीकरण करते हुए लिखते है कि-

तत् किं कार्यं यत् न शास्त्रज्ञ साध्यम्, स्वर्ग भूमौनागलोकेपिकिंचित्।
तस्मादभ्यासं प्रकुर्यान्नितान्तं, प्राज्ञः शास्त्रस्येप्सितार्थाप्तयेत्र।।

ऐसा कौन सा कार्य है जो स्वर्ग, भूलोक या नागलोक में शास्त्र के ज्ञान द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता, इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति अपनी अभीप्यित इच्छाएँ पूर्ण करने के लिए शास्त्रों का निरन्तर अध्ययन करते रहे।

किसी भी देश का साहित्य उसकी संस्कृति का एक सर्वमान्य एवं महीन रूप से रेखांकित करने वाला संकेतक माना जाता है। वेद भारतीय संस्कृति के ध्वजवाहक के रूप में पूरे विश्व में समादृत है, सर्वमान्य है, दुनिया के तमाम देशों के सांस्कृतिक जिज्ञासु, ज्ञान पिपासु इस थाती की तह तक पहुंच पाने को लालायित रहते है। मैक्समूलर जैसे

विदेशी विद्वानों ने जब दुनियाभर के लिए इसे अपनी लेखनी से उद्घाटित किया तो हमारी संस्कृति की अद्भूत वैचारिक पहुंच ने सबको अभिभूत करके रख दिया।

साहित्य सर्जक विद्वान साथी श्री युक्त श्रवणकुमार उपाध्याय की पैनी नजर भी साहित्य अध्ययन के दरम्यान लगभग अछूते पात्र 'अहल्या' कि तरफ गयी, तो एक विचार उनके मानस पटल पर उभरा कि इस पावन पवित्र चरित्र की वास्तविकता है क्या। फिर प्रारम्भ होता है अनुसंधान शास्त्र पठन, साहित्यक संगोष्ठियां, विद्वानों से सम्पर्क और जब उन्हें अपनी ज्ञान पिपासा का कुछ छोर मिल जाता है, तो अंकुरित होता है एक शास्त्र निर्माण के विचार का।

''अहल्य्या विमर्श'' उसी विचार की पूर्णाहुति के रूप में हमारे सामने है। मैं विद्वानों द्वारा लिखी गई बातों का दोहराव करने का कतई ईच्छुक नहीं हूँ उन्हें तो सुधीजन यथास्थान ही पढ़ने का श्रम करे, मैं कुछेक तथ्यों पर अपने विचार अवश्य ही प्रस्तुत करूंगा जो शास्त्राध्ययन के समय मेरे संज्ञान में आए।

प्रथम तो अहल्य्या किसकी पुत्री थी, लगभग सभी शास्त्रो और विद्वानों में इस पर एक सी राय है कि ब्रह्माजी की।

ब्रह्माजी ने अपनी इस मानस पुत्री अहल्या के लालन-पालन का दायित्व तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ ऋषि गौतम के सुर्पुद किया इस बारे में विस्तार से आप पुस्तक में पढ़ पायेगें, जिस व्यक्ति पर स्वयं ब्रह्माजी विश्वास जताते है, तो स्वीकार करने वाले व्यक्ति का तो दायित्व अत्यंत बढ ही जाता है, महर्षि गौतम ने कुमारी अहल्या की परवरिश में कोई कोर कसर नहीं रखी। अहल्या ने भी अपने पालनकर्त्ता की छत्रछाया में खूब विद्याध्ययन किया, तप किया, योग साधना की और अपने गुरु की सेवा की।

विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः।
अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम्।।

इस प्रकार पूर्णरुप से संस्कारित करने और यौवनावस्था प्राप्त करने पर महर्षि गौतम ने ब्रह्माजी को उनकी कन्या वापस सुपुर्द कर दी।

जैसा कि शास्त्रों में वर्णित है, इस अत्यंत सुन्दर सुशील सर्वगुण सम्पन्न कन्या के रूप लावण्य पर सभी देवता मंत्रमुग्ध थे, और सभी उसे अपनी गृहस्वामिनी बनाने के सपने संजोए हुए थे, देवराज इन्द्र भी उनमें से एक थे, और देवताओं के राजा होने के कारण अपना हक भी सर्वोपरि मानते थे, मगर ब्रह्माजी ने अहल्या का विवाह कर दिया महान् तपस्वी योगनिष्ठ महर्षि गौतमजी के साथ और इन्द्र हाथ मलता ही रह गया।

महर्षि गौतम के तपोबल से इन्द्र भयभीत भी रहने लगा और उसे अपना इन्द्रासन जाने का डर भी सताने लगा, एक तो अहल्या पहले से गौतमजी की गृहस्वामिनी बन चुकी थी, जिसकी दाह अभी इन्द्र की शांत भी नहीं हुई थी कि इन्द्रासन छिन जाने का डर वह भी गौतम जी की तपस्या के कारण। इन्द्र को अब अहल्या को तो भूलना ही पड़ा मगर अपना इन्द्रासन बचाने के लिए महर्षि गौतम की तपस्या को भंग करना नितांत जरूरी था। इस हेतु वह योजना बनाने लगा और कई बार ब्रह्माजी इत्यादि देवताओं से गुहार भी लगायी, मगर कौन ऐसा मूर्ख होगा जो महर्षि गौतम की तपस्या भंग कर कोपभाजन का शिकार हो। अतः सभी ने अपनी असमर्थता जता दी, इससे तो इन्द्र और ज्यादा चिन्तित व भयभीत हो गया।

सबसे क्षमा हूँ मांगता, मैं मुक्तमन कर जोड़कर।
अहल्या व्यथा गाथा कहूँ, कुल-जाति सीमा तोड़कर।।

गुजराती में गिरधर रामायण के अध्याय 29 के पद (दोहा) 7 में वर्णित है कि

कोई कहे छे रामे चरणनो, स्पर्श कर्यो साक्षात्।
ए तो जूठुं जाणजो, घटे नहिं ए बात।।

अर्थात् कुछ व्यक्ति कहते है कि राम ने (शिला-रूप अहल्या का) प्रत्यक्ष पद स्पर्श किया, इसे तो विवेकशील मनुष्यों को झुठ ही समझना चाहिए, क्योंकि ऐसा घटित हो ही नहीं सकता इसके पीछे तर्क कारण जताते हुए कवि लिखता है

धरम धोरी धर राम छे, गौ ब्राह्मण प्रतिपाळ।
क्षत्री धरम शुभ आचरे, एवा दीनदयाळ।।

अन्य क्षत्री ऐवुं नव करे, आ तो धरम अवतार
चरण स्पर्श ते क्यम करे? ब्राह्माणी ने निराधार''

अर्थात् राम धर्म-धुरूंधर, गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक हैं। वे क्षत्रियों के शुभ धर्म का आचरण करने वाले दीन दयालु है। जब भला अन्य क्षत्रिय भी ब्राह्मण को पैर से छुने का पापकर्म नहीं करते तो फिर मर्यादा पुरूषोतम धर्म अवतार राम ऐसा कार्य कैसे कर सकते है। दशरथ नन्दन राम ने तो माता अहल्या के चरण स्पर्श ही किए थे, मगर पुरुष प्रधान समाज ने अयोध्या के राजकुमार राम को ऊंचा दिखाने के चक्कर में मर्यादाओं को कुचलने में जरा सी भी समझ नहीं दिखाई और मर्यादा पुरुषोतम राम को भी इसमें घसीट लिया।

अहल्या कभी सिला (शिला) बनी ही नहीं तो राम के द्वारा पाद स्पर्श की बात ही झुठी है प्रश्न पैदा होगा कि फिर क्या वाल्मिकी रामायण, रामचरित्रमानस, ब्रह्मपुराण,स्कन्द पुराण, कथा सरितत्सागर, पद्म पुराण, अध्यात्म रामायण, बलरामदास रामायण, कंब रामायण, आनन्द रामायण इत्यादि इत्यादि ग्रंथों में लिखी गई अहल्या के शिला बनने की बात नितांत असत्य है। हाँ असत्य नहीं तो असत्य के निकट अवश्य ही है।

ब्रह्म पुराण (8, 7, 5, 9) में शाप इस प्रकार है शुष्कनदी भव तथा आनन्द रामायण (1, 3, 23) के अनुसार अहल्या जनस्थान में नदी के रूप में प्रकट हुई। अपभ्रंश में सिरा (सिला) का अर्थ 'शिला'' तथा 'नदी' दोनो हो सकता है संभव है इसी कारण से गौतम के शाप का यह रूप प्रचलित हुआ हो अर्थ का अनर्थ होते देर की क्या लगती है। घटनाक्रम इस प्रकार है कि एक बार महर्षि गौतम और माता अहल्या सूर्य ग्रहण के दिन गंगा स्नानादि के लिए गए स्नान करने के बाद अहल्या तो आश्रम लौट आयी और महर्षि गौतम ध्यानास्त हो गए। सभी विद्वान पुरूष जानते है कि ग्रहण काल में सिद्धियों की प्राप्ति हेतु विशेष अनुष्ठान करने का कार्य आज भी किया जाता है। कुछ

कार्य तो ग्रहण काल में किए जाते है इन्द्रासन छिन जाने का भय तो इन्द्र को पहले से ही था और अब सूर्य ग्रहण के समय महर्षि गौतम के तपस्या में लीन होने से इन्द्र की बुद्धि और विवेक ने जबाव दे दिया।

इन्द्र येनकेन प्रकारेण गौतम जी की तपस्या भंग करने की ठानकर गौतम जी के वेश में आकर माता अहल्या से भोग की ईच्छा प्रकट करता है यह जानते हुए भी कि महान तपस्विनी अहल्या के कोपित होने व समूल नष्ट हो जाएगा, मगर इन्द्र को तो जान बुझकर गौतम की तपस्या में खलल डालना था। जब इन्द्र आश्रम में गौतम ऋषि का रूपधारण करके पहुंचता तो अहल्या कहती है, हे! मुनिवर श्रेष्ठ आज नित्य कर्म पूर्ण किए बिना आप घर कैसे लौटे, तब अहल्या को बरगलाने के लिए गौतम का रूपधारी इन्द्र कहता है कि मन चंचल हो गया है और भोग की इच्छा प्रबल हो गयी है। अत: इस वक्त सवाल जबाब नहीं करके मुझे तुम उपभोग दो। अहल्या को समझते देर नहीं लगी कि दाल में कुछ काला है अहल्या ने भी सावधानी पूर्वक इन्द्र को बरगलाने हेतु मधुरवाणी में कहा हे मुनिवर अभी तो मध्याह्न की बेला है ऊपर से सूर्य ग्रहण इस समय तो अघटित कर्म नहीं करना चाहिए।

इन्द्र जो अहल्या के सौन्दर्य का पहले से ही दास था, उस पर मोहित था, अहल्या की मधुरवाणी से और काम पीड़ित हो गया और तनिक क्रोध करके बोला एक स्त्री को यह विचार करने का हक है कि क्या शुभ है क्या अशुभ पति की आज्ञा की अवहेलना करने का फल तुम्हें पता है। तुम्हारा धर्म तो यही है कि अपने पति की आज्ञा का पालन करो। अहल्या ने तनिक विचार किया कि यदि पति धर्म के रास्ते से हट रहा हो तो उसे सन्मार्ग दिखाने का काम पत्नी का है यह सोचकर कि मेरे पति महर्षि गौतम जल्द ही अपना नित्यकर्म पूर्ण करके आते होंगे, तब तक इस बहुरूपिये को बातों के उलझाकर रखना चाहिए। अहल्या कहती है हे स्वामी! आप सर्वज्ञ हो अत: शास्त्र का विचार करके देखो, इस समय यदि भोग करेंगे तो निश्चय ही हम नरक में जायेंगे। इस प्रकार तर्क वितर्क चलता रहा और महर्षि गौतम को देवादिदेव महादेव का आदेश होता है आकाशवाणी होती वत्स शीघ्र आश्रम लौटो कुछ अनहोनी से पूर्व आकाशवाणी सुनकर महर्षि का आश्रम में आगमन हो जाता है। इन्द्र को अपने रूप में देखकर महर्षि को अत्यंत क्रोध आता है और वह क्रोधवश ही इन्द्र को शाप दे देते है इन्द्र तो चाहता ही यह था कि महर्षि को क्रोध आएं ताकि उनकी तपस्या निष्फल हो जाए, उसका सिंहासन बच जाये। इन्द्र ने तुरन्त प्रायश्चित की

मुद्रा में क्षमायाचना करली और शाप से मुक्ति का मार्ग भी पूछ लिया। तब फिर अहल्या का क्या हुआ, न्याय शास्त्र के प्रेणता क्या किसी के साथ अन्याय कर सकते है कदापि नहीं स्वाभाविक ही है कि महर्षि गौतम ने भी अहल्या के साथ अन्याय नहीं किया और ना ही कोई शाप दिया। इन्द्र पर कोप करने से क्रोध करने से उनकी तपस्या अवश्य ही निष्फल हो गयी, तब महर्षि गौतम ने पुनश्च तपस्या प्रारम्भ करके देवादिदेव महादेव को प्रसन्न करने का संकल्प लिया और हिमालय पर प्रस्थान का निर्णय लिया, फिर अहल्या ने भी संकल्प किया कि है! मुनिश्रेष्ठ आप जब तपस्या करने हेतु अपने आत्मकल्याण हेतु हिमालय प्रस्थान कर रहे हो तो मुझे भी आज्ञा प्रदान करे कि मैं भी तपस्या करके आत्म दर्शन कर सकूं। महर्षि ने तनिक विचार किया और सोचा अहल्या का पालन पोषण मैंने इसके बाल्यकाल से किया है, यौवनावस्था होने पर ब्रह्माजी ने अहल्या का विवाह मेरे साथ कर दिया। इसने अपना सम्पूर्ण जीवन मेरी सेवा में बिता दिया, अब इसने प्रथम बार ही अपने आत्मकल्याण की कामना से कुछ आग्रह किया है तो उसे स्वीकार लेना ही न्यायोचित है।

महर्षि ने सम्पूर्ण विचार करके कि अहल्या की तपस्या में किसी प्रकार की कोई बाधा उत्पन्न नहीं हो तो उन्होनें अहिल्या को समाधिस्थ होने का आदेश देकर कहा –

यदि ग्लानि हुई है इन्द्र के आने से, तो तप से तन करो शुद्ध।
मैं भी अब तप में लीन रहूँगा, क्योंकि इन्द्र पर हुआ क्रुद्ध।
जब इन्द्र यहाँ आया इससे ही, आश्रम भी हो गया भ्रष्ट।
पशु पक्षी रहित बना इसको मैं, कर दूंगा सम्पूर्ण नष्ट।

महर्षि गौतम ने अपने आश्रम को उजड़वन में तब्दील कर हिमालय की तरफ प्रस्थान किया और अहल्या वहीं समाधि में लीन होकर तप करने लगी।

कई हजार वर्षों की तपस्या के बाद महर्षि गौतम को तो आत्म दर्शन हो गए देवादिदेव महादेवजी ने भी प्रसन्न होकर साक्षात् दर्शन दे दिया तक महर्षि गौतम ने अहल्या की तपस्या के बारे में पुछा तो भगवान शंकर ने अपने प्रिय भक्त की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा कि

अहल्या ने हठ ले रखा है कि मुझे तो चतुर्भुजधारी भगवान विष्णु साक्षात् रूप में दर्शन देगें तब ही मैं अपनी समाधि से उठकर उनका स्वागत करूंगी अन्यथा नहीं। बालहठ, राजहठ, योगहठ, त्रियाहठ आप तो सर्वज्ञ है महर्षि, इतना कहकर शिवशंकर भोलेनाथ तो चले गए। महर्षि ने फिर समाधि लगाकर तप प्रारम्भ किया तो पता चला कि त्रैतायुग में रामावतार होगा, तब ही अहल्या का तप पुरा होगा उस समय सतयुग चल रहा था, सतयुग के बाद द्वापर फिर त्रैतायुग आता, अतः महर्षि गौतम ने अपने पुत्र शतानन्द को कहकर घोर तपस्या करके भगवान शंकर को प्रसन्न करके द्वापर से पहले त्रैतायुग आने का वरदान प्राप्त किया, लगभग 20 हजार वर्षों की तपस्या के बाद जब त्रैतायुग में रामावतार हुआ, तब गौतम आश्रम में राम के आगमन पर समाधिस्त अहल्या के राम द्वारा चरण स्पर्श करने पर अहल्या की तपस्या पूर्ण हुई, और जिस प्रकार पारस के स्पर्श मात्र से लोहा कंचन बन जाता है, वैसे ही विष्णु अवतार रामजी के अहल्या के चरण स्पर्श करने से अहल्या अपने पूर्ववर्ति रूप में आ गयी। उसी समय भगवान शंकर की प्रेरणा से महर्षि गौतम का वहाँ आगमन होता है, महर्षि भी रामजी के दर्शन करके धन्य हो जाते है। अब यहाँ यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक है कि बिना किसी वजह के गौतमजी आश्रम में आये कैसे तो इसका सीधा सा उत्तर है कि उनके पुत्र शतानन्द महाराज जनक के प्रधानमन्त्री थे, जब जनक ने सीता स्वयंवर का ऐलान कर दिया तो विवाह में आशीर्वाद प्रदान करने हेतु अनेकानेक ऋषियों को आमंत्रित किया था और महर्षि का ध्येय भी महाराज जनक के दरबार में जाने का ही था, रास्ते में अपना आश्रम आया तो एक बार देखकर चलने की ईच्छा से महर्षि का आगमन वहाँ हो जाता है।

महर्षि गौतम के दर्शन से रामजी अत्यंत प्रसन्न हुए और लौकिक मनगड़त बातों को भुलाकर सत्यता को स्वीकार करके अपने गृहस्थ को सुचारू रूप से चलाने की बात श्री रामजी के मुख से सुनकर अहल्या और महर्षि गौतम पुनः अपने आश्रम में रहने लगे।

अरे ''यत्रनार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यंते सर्वास्तत्राफला क्रिया।।

अब महर्षि गौतम के भी समझ में आ गया कि भगवान तो वहीं

जाते है जहाँ नारी की पूजा की जाती है, उसका सम्मान किया जाता है। तभी तो गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरित्र मानस में प्रारम्भिक वन्दना में नारी को ''उद्भवस्थिति संहारकारिणी क्लेशहारिणी'' बताते है।

अहल्या तो दया, क्षमा, ममता, सहिष्णुता, करूणा, सहानभूति की प्रतिमूर्ति है, जो कि ईश्वर प्रदत्त गुण है ये सभी देवोचित गुण है, ऐसे गुणों से सम्पन्न देवी पर लांछन लगाना कितना कुटिल है झुठा है अक्षम्य है समझा जा सकता है। फिर प्रश्न उपस्थित होगा कि क्या रामायण इत्यादि ग्रंथों में लिखा गया असत्य है, मैं इसे सिरे से नहीं नकार सकता मगर अर्थ के अनर्थ की तरफ आपका ध्यान खींचकर आपसे ही जबाब चाहता हूँ।

घर से दरवाजा छोटा है दरवाजे से ताला छोटा है ताले से चाबी छोटी है इस छोटी सी चाबी से सारा घर खुल जाता है, यही प्रयत्न विद्वान साथी श्रवणकुमार उपाध्याय ने किया है। विचार उनका चाबी की तरह छोटा अवश्य ही है मगर अहल्या को लेकर तमाम धारणाओं और भ्रांतियों के निवारण में यह पुस्तक ''अहल्य्या विमर्श'' अवश्य ही मील का पत्थर साबित होगी ऐसी मेरी मान्यता है।

अब पहला प्रश्न पाठको से है कि सर्व प्रथम रामायण की कथा का प्रारम्भ कहाँ से होता है। तो जो पाठक जरा सा भी जानते है उन्हें ज्ञात होगा कि भगवान शंकर ने यह कथा सर्वप्रथम पार्वती को सुनायी थी, उसी समय उसे काकभुसुंडि द्वारा सुना गया था उसके बाद नारदजी ने काकभुंसुडि से सुना फिर नारदजी ने वाल्मीकी जी को

रामायण सुनायी। श्रुत परम्परा से यह कथा आगे बढ़ी सुनकर सम्पूर्ण याद रखना संभव नहीं है उसमें फिर सुनने वाला अपनी तरफ से कुछ मिलाकर आगे सुनाता है और एक समय ऐसा भी होता है कि सुनाने वाले पर तत्कालीन परिरिस्थतियों का प्रभाव देखने को मिल जाता है और मूल विचार या बात गौण हो जाती है। भगवान शिव से वाल्मीकी तक यही हुआ। अहल्या, गौतम और इन्द्र की कहानी का कुछ कपोल कल्पित बातो का समावेश बिना किसी प्रामणिकता तथ्यों के रामायण के लिपिकारों रचियताओं ने कर दिए।

- राजेन्द्र कृष्ण जोशी ''फौजी''

श्रीबालाजी (नागौर)

महामहोपाध्याय – देवर्षि कलानाथ शास्त्री

संस्कृत के जाने माने विद्वान, भाषाविद् एवं बहु प्रकाशित लेखक है। आप राष्ट्रपति द्वारा वैदुष्य के लिए अंलकृत, केन्द्रीय साहित्य अकादमी आदि से पुरस्कृत, अनेक उपाधियों से सम्मानित व कई भाषाओं में ग्रन्थों के रचयिता है। आपने संस्कृत साहित्य का अवगाहन और पोषण करते हुए एक नए छन्द का आविष्कार भी किया जिसका नाम पद्मशास्त्री जी ने उन्हीं के नाम से 'कलाशालिनी' रखा है।

महामहोपाध्याय – देवर्षि कलानाथ शास्त्री राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। इसके साथ ही वे 'भारती' संस्कृत मासिक, सदस्य, संस्कृत आयोग, भारत सरकार के प्रधान सम्पादक भी है। इसी के साथ वे राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा आधुनिक संस्कृत पीठ, ज.स. राज. के पूर्व अध्यक्ष पद पर एवं संस्कृत विश्वविद्यालय, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राज. के पूर्व निदेशक के पद पर अपनी सेवाएं बखूभी दे चुके हैं।

अहल्या प्रसंग : एक रूपक कथा

भारत की पौराणिक कथाओं में गौतम ऋषि की तथाकथित पत्नी अहल्या की वह कथा प्रसिद्ध है जिसका प्रचार रामकथा के साथ जुड़ने के कारण अधिक हुआ है। कथा यह है कि गौतम की पत्नी अहल्या एक बार इन्द्र के संसर्ग में आ गई थी। जिससे ऋषि ने कुद्ध होकर उसे शिला बन जाने का शाप दिया। अनन्तकाल तक शिला बनी रही। श्रीराम और लक्ष्मण जब विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा हेतु उनके आश्रम गए तब श्रीराम के चरण का स्पर्श पाकर उसका उद्धार हुआ। अहल्या (जिसे भ्रमवश अहिल्या भी कहा जाता है) की यह कथा सुनिश्चित है। यह अहल्या कौन थी, वह अनन्तकाल तक शिला कैसे बन गई और वापस सुन्दरी कैसे बन गई इस पर अधिक ऊहापोह न कर सामान्यत: इसे प्रभु राम की असीम चमत्कार धारिणी कृपा मानकर इस कथा का ज्ञान दिया जाता है।

शोध की दृष्टि से कुछ विद्वानों ने जब इस पर गहन विमर्श किया तो कुछ विशिष्ट तथ्य सामने आए जिनका संकेत मात्र करना पर्याप्त होगा। तुरन्त शिला बन जाना और पाद स्पर्श होते ही पुन: ऋषि पत्नी बन जाना क्या वास्तविक घटना हो सकती है? विद्वानों का यह अभिमत है कि यह सत्यकथा न होकर प्रतीक कथा है। इसके अनेक प्रमाण है। यद्यपि ''अहल्या'' नाम शतपथ ब्राह्मण से लेकर विष्णु पुराण, ब्रह्मपुराण आदि पुराणों में भी मिलता है, रामायण में भी, भागवत में भी, रामचरित मानस ने तो इसे जन जन में फैला ही दिया है, किन्तु इन कथाओं में अहल्या की जो पहचान वर्णित है वह सर्वत्र अलग-अलग है। प्राचीन पुराणों में उसे मुद्गल की पुत्री, दिवोदास की बहन, शतानन्द की माता बताया गया है। विष्णु पुराण में वृहदृश्व की पुत्री, (मुद्गल की पौत्री) बताया गया है। ब्रह्मपुराण में वह अयोनिजा बताई गई है। ब्रह्मा ने उसकी सृष्टि कर दी, पालन पोषण हेतु गौतम को सम्भलाया, युवती होने

पर इन्द्र, अग्नि, वरूण तीनों उसके संपर्क के इच्छुक हुए, ऐसा वर्णन मिलता है। वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड में भी उसे इसी प्रकार ब्रह्मा की सृष्टि बताया गया है।

इस विवरण से स्पष्ट होता है कि यह अवश्य ही प्रतीक कथा है जो इन नामों से भी प्रमाणित होता है। अहल्या शब्द की व्युत्पत्ति है ''जिस पर हल न चल सके'' अर्थात् बंजर धरती। मूलत: जब पृथ्वी की सृष्टि ब्रह्मा ने की तो उस पर हल नहीं चलता था। सूरज के ताप से वह शिला की तरह जड़ रहती थी। अहल्या थी। वृष्टि होने पर, हल चलने पर, हल चलाने वाले ''गौ'' तमों ने (बैलों ने) उसे पाला-पौसा। वह सुन्दर हो गई किन्तु अधिक ताप होने पर, सूर्य राशियों के अधिक्य से वह बंजर हो गई। वेदकालीन प्रतीकों में विष्णु, इन्द्र और वरूण सूर्य के प्रतीक है यह सुविदित है। विष्णु का ''गौ लोक'' गौंओं का (रश्मियों का) लोक है। इसी आधार पर रश्मियों को गौ (गाय) का रूप भी दिया गया, रश्मि को ''गौ'' पर्याय दिया गया । प्राचीन काल में हलवाही गौओं (बैलों) के बल पर ही प्रमुखत: खेती होती थी। उन्हें 'गौतम' कहकर खेत जोतने का संकेत प्रतीकात्मक रूप से किया गया है। हल के संपर्क से पृथ्वी युवती होती है यह तथ्य गौतम को अहल्या के संभालने की कथा में प्रतीकात्मक रूप से सूचित किया गया हो यह संभव ही है। इन्द्र के अर्थात् सूर्य के सीधे सम्पर्क से वह शुष्क हो सकती है, बंजर हो सकती है, शिला जैसे बन सकती है। उसे पुन: उपजाऊ और सुन्दर बनाने के लिए सुयोग्य, शक्तिशाली रक्षक की आवश्यकता होती है। राम कथा में प्रतीकात्मक रूपक को मानवीकरण के द्वारा अहल्या के उपाख्यान के रूप में वर्णित कर दिया गया है यह शोध विद्वानों का चिन्तन मननीय एवं संग्रहणीय प्रतीत होता है।

शतपथ ब्राह्मण से लेकर रामचरित मानस तक अहल्या की कथा का पाया जाना किन्तु उसके पिता के नामों में विभिन्नता होना यह तो स्पष्ट करता ही है कि यह कथा ऐतिहासिक अभिलेख के रूप में मान्य नहीं है।

ब्रह्मा ने अहल्या की सृष्टि सीधे ही कर दी, यह विवरण ब्रह्मपुराण में ओर वाल्मीकीय रामायण में स्पष्ट है जो प्रमाणित करता है

अवश्य ही इसमें कोई प्रतीकात्मक रहस्य अन्तर्निहित है अन्यथा स्वयं ब्रह्मा किसी कन्या को पैदा करने की आवश्यकता क्यों अनुभव करेंगे ? इसी दृष्टि से ''अहल्या'' शब्द की व्युत्पति का समर्थन लेते हुए विद्वानों ने इसकी उपर्युक्त प्रतीकात्मक व्याख्या की है यह स्पष्ट है।

यह हर्ष का विषय है कि कुछ विचारकों ने तथा कुछ संस्थानों ने इस कथा पर विमर्शात्मक अनुशीलन किया है और जिस मानवीय घटना के रूप में यह कथा सामान्य जन में फैली है उसे ज्यों की त्यों न मानकर उसके पीछे कारणों पर विचार करने की प्रेरणा दी है। उसी क्रम में एक यह अभिगम संकेतात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है।

- महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री

प्रो रहस बिहारी द्विवेदी

कृतकार्य आचार्य, अध्यक्ष, संकायाध्यक्ष – रानी दुर्गावती विश्वविधालय, जबलपुर (म.प्र.)

पूर्व निदेशक शोध संस्थान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

आपके द्वारा लिखित पुस्तकें, संस्कृत महाकाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन, अर्वाचीन संस्कृत महाकाव्यानुशीलनम्, साहित्य विमर्शः, स्वस्तिसन्देश, स्वरितसन्देश संस्कृतवाङ्गमये विज्ञानम्, तीर्थ भारतम् ।

सम्प्रति – 615, ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जबलपुर – 482002 (म.प्र.)

सम्पर्क – 9425383962, 8808998743

अहल्या विमर्श

अहल्या सतयुग की ऐतिहासिक नारी है जो महर्षि गौतम की पतिव्रता पत्नी है। पंचकन्याओं में उसकी भी गणना की जाती है। जिन कन्याओं के स्मरण से महापातक भी नष्ट हो जाता है। जैसा कि कहा गया है-

अहल्या द्रोपदी कुन्ती तारा मन्दोदरी तथा।
पञ्चकन्या स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्।।

अहल्या का परिचय 'शब्दकल्पद्रुम' में हरिवंश पुराण को उद्घृत करते हुए इस प्रकार दिया गया है-

दिवोदासश्च राजर्षिरहल्या च यशश्विनी।
शरद्वतश्च दायादमहल्या समसूयत।।

पञ्चकन्याओं के रूप में प्रथम परिगणित अहल्या ही है। कन्या-अविवाहित कुमारी को कहते हैं। कुत्सितो मारो यस्यां सा कुमारी, कुत्सितो मारो यस्मिन्निति कुमार:। अर्थात् जिसमें काम कुत्सित हो (संयम के कारण दबा हो)। जब अहल्या द्रौपदी, तारा मन्दोदरी ये सब क्रमश: गौतम, पञ्चपाण्डव, बालि और रावण की पत्नी के रूप में वर्णित हैं, तब इन्हें कन्या (कुमारी) क्यों कहा जाता है।

'स्थितस्य गतिश्चिन्तनीया' अर्थात् जो हो चुका है उस स्थिति पर चिन्तन कर उसका समाधान करना चाहिए। प्राक्तन अनेक वर्णन ऐसे हैं जहाँ सामान्य जन को भ्रांति होती है तथा भारतीय अध्यात्म, अवतार तथा सारे ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाली परा सत्ता पर हार्दिक आस्था न रखने के कारण अल्पज्ञ अध्येता कुछ पौराणिक प्रसंगों की कटु आलोचना करते हैं।

इसमें भाषा इतिहास बोध तथा परा सत्ता में विश्वास का अभाव बहुत बड़ा कारण है। कई बार किसी आलोच्य विषय की चर्चा, जो समाधान या असत्य सिद्ध करने के लिए प्रारंभ की जाती है वह जिसे सहज रूप से ज्ञात नहीं है अथवा विस्मृत हो चुकी है, उसे भी पुनरुज्जीवित कर दिया जाता है। अपराध करके बिना पूंछे भी अपनी सफाई देना भी अपराधी का अपराध स्वीकार करना अवान्तर रूप से सिद्ध होता है। जब प्राक्तन मनीषियों ने इस चर्चित विषय का पटाक्षेप करने के लिए-

अहल्या द्रौपदीकुन्ती तारा मन्दोदरी तथा।
पञ्चकन्या स्मरेनित्यं महापतकनाशनम्।।

जैसा प्रतिदिन पूजा के समय पढ़ने का श्लोक बना दिया है, तब गड़ा मुर्दा उखड़ने से क्या लाभ? आज जब हम सभी को थोड़ा बहुत ज्ञान प्राक्तन मनीषियों के ग्रंथों के पढ़ने के कारण है। उन रामायण और महाभारत तथा पुराणों के ऐतिहासिक सत्य को नकारने से क्या लाभ। ऐसा विश्वास करना ही श्रेयस्कर है कि जिन उचित या अनुचित व्यवहारों का वर्णन प्रावत्तन ग्रन्थों में प्राप्त है उसे तैत्तिरीयोपनिषद् की शिक्षावल्ली में प्रोक्त- 'यानि मया सुचारितानि नानित्वयोपास्यानि नेतराणि।' (जो मेरे आचरण अच्छे हैं उन्हें ग्रहण करें अन्य को न स्वीकार करें।)

एक नीति श्लोक भी प्रसिद्ध है-

वित्तनाशंमनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।
वञ्चनं चापमानं च मतिमान् न प्रकाशयेत।।

इन्द्र एक भौतिकवादी मनुष्य का प्रतीक है जो नहीं चाहता कि उससे बड़ा कोई हो। गौतम, विश्वामित्र आदि की तपस्या से इन्द्रासन छिनने के भय के कारण ऐसा करता है। गणेश के सिर पर हाथी और वाहन के रूप में मूषक इस तथ्य की प्रतीकात्मक रुप में अरेखित करता है कि पिता ओर पितामह आदि (बड़ों) गुरुजनों को सरमाथे रखे अर्थात् उनका सम्मान करें और (चूहा) छोटे बच्चों को भी संरक्षण दें शिक्षित करें जो आगे आपके सहयोगी (कर्णधार) का वे कार्य करेंगे। दुर्गाजी की मुण्डमाला इसकी प्रेरणा देती हैं कि आतंकवादी दुष्टों का सिर काटकर

कुछ दिन के लिए बिजली तारों में लटका दें जिससे लोगों को लगे कि निरपराधजनों के मारने वालों की ऐसी ही दुर्गति की जानी चाहिए। जब पूजा पद्धति का श्लोक यह भी है 'पञ्चकन्या स्मरेनित्यं महापातक-नाशनम्' सिद्ध है कि ये वरदानी महिलाएँ हैं जिनका कौमार्य नष्ट नहीं होता तब वे दोषी कहाँ है? यह प्राक्कथन ग्रन्थकारों की विवशता थी कि इतिहास की घटनाओं को उन्होंने छिपाना उचित नहीं समझा। बाद के मनीषियों ने उसका समाधान भी उक्त श्लोक द्वारा किया । श्रीकृष्ण की कथा यदि किसी ने पढ़ी है तो उसे ज्ञात है कि वे जब सात वर्ष से कम आयु के थे, तब उन्होंने रास क्रीड़ा की है, ऐसे बच्चों को तो गोदी में भी उठाया जा सकता है।

एक बार करपात्री जी से किसी विश्वविद्यालय के छात्र ने उनके श्रीमद्भागवत के प्रवचन के समय पूछें कि हम किसी लड़की को छू देते है, तब भी प्राचार्य कुलपति दण्डित करता है तब श्रीकृष्ण ने तो अनेक गोपिकाओं के साथ रास क्रीड़ा की तब उन्हें भी क्यों नहीं दण्डित किया गया? उन्होंने उस मंच के पास बुलाकर कहा-वे तो सात वर्ष के थे तुम बीस वर्ष के हो, गोवर्धन पर्वत नहीं एक दस किलो का पत्थर एक अंगुली पर रखकर दिखाओं, दावाग्रि (जंगल की आग) नहीं एक जलता अंगारा ही हाथ पर रखना, तब तुम्हें भी छात्राओं के साथ रास क्रीड़ा करने का अवसर प्राचार्य से कहकर दिला दूंगा। मनुष्येतर पात्रों के पूर्व स्वयं की अल्पज्ञता या अशक्ति पर भी विचार करना चाहिए।

कुछ ना समझ आलोचक ढोल गवार सूद्र पशुनारी, सकल ताड़ना के अधिकारी की आलोचना कर तुलसीदास को शुद्र और नारी का विरोधी सिद्ध करते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि सृष्टि के इतिहास में कभी नारी के अपहरण की सजा क्या ऐसी दी गई है क्या? कि अपहर्ता के राष्ट्र की (शरणागत को छोड़कर) सभी नागरिकों को मार दिया गया है? राष्ट्र को जला दिया गया है। अथवा विश्व में कोई राष्ट्रपति (चक्रवर्ती) सम्राट है तो जानता हो कि पत्नी की बात ना मानने पर उसकी मृत्यु हो जायेगी तब भी क्या पत्नी की बात मान लेगा। जिस कथा में ऐसा नारी सम्मान वर्णित हो, जहां शबरी के बैर खाकर शुद्रा को सम्मान दिया गया हो, ऐसी भावना शूद्र और नारी के सम्मान की हो उस कथा में कोई विक्षिप्त ही कवि की आलोचना करेगा।

'ताड़ना' शब्द हिन्दी का है जो अंग्रेजी के वाच शब्द का अर्थ देने वाला प्रचलितम शब्द है यथा–

अवधि : बहुत मेल्हाइक बोतत रहेनि तबइताड़ि लिहा कि रुपया माँगइ बरे आइ हयेनि।

भोजपुरी : बबुआ ! अमनी पहिलइ ताड़ि, गइली रहँली।

बघेली : दाद् ! अपना पंचन त पहिलेनि ताड़ि लिहे रहेंनि।

बुन्देली : ताड़ लवो हतो।

अवधि भाषी क्षेत्र से लगी भोजपुरी, बघेली, उपभाषाओं का 'ताड़ना' शब्द का प्रयोग इस तथ्य को आरेखित करता है कि यह शब्द 'समझ जाने' आभास कर लेने' अथवा जान लेने के लिए प्रयुक्त होता है। जब अवधि भाषा का ज्ञान नहीं है तब 'रामचरित मानस' जैसे विश्वश्रेष्ठ काव्य को (जिसे एक करोड़ से अधिक लोग चौबीसों घण्टे पढ़ते रहते हैं) उसकी आलोचना निश्चित ही आलोचक के अज्ञान को ही सूचित करती है वस्तुत: 'गगन समीर अनल जल घरनी। इनके नाथ सहज जड़ करनी। जो 'ढोल गवार' की तीन चौपाई ऊपर तुलसीदास ने लिखी है, उसी के उपमान के रूप में क्रमश: ढोल गवार सूद्र पशु और नारी का उल्लेख कवि ने किया है। मैंने इसका निरूपण अपनी पुस्तक 'श्रीराम कथा और नारी विमर्श' में किया है अत: दिष्ट प्रेषण यहाँ उचित नहीं है।

अहल्या पतिव्रता है, इन्द्र ने गौतम का रूप धारण कर उसके साथ संयोग स्थापित किया, अत: वह पवित्र है इसी प्रकार द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मन्दोदरी की परिस्थितिया है। जिसका वर्णन तत् समय के ग्रन्थों में पढ़ा जा सकता है। वर्तमान में भी बलात्कार पीड़ित कोई कन्या अपवित्र नहीं होती है, श्रीराम ने अहल्या का उद्धार कर यही मार्गदर्शन किया है। जिसकी कोई गलती नहीं है जो महिला धोखे की शिकार हुई है आध्यात्मिक रूप से भावना से पवित्र है उसे तुच्छ या हेय न माना जाय यही श्रीराम आदि का सन्देश है।

भारत राष्ट्र त्याग तपस्या और तपोवन की संस्कृति का देश रहा है पाश्चात्य प्रवृत्ति के अनुकरण ने इसकी संस्कृति को भौतिक समृद्धि और दिखावे में बदल दिया है। विश्व व्यापार के अन्तर्जाल में आज

जनता वैसे ही गिरफ्त में है जैसे जाल में फँसी मछली हो। कार, भवन, साज सज्जा आदि के लिए वेतनभोगी कर्ज लेकर करोड़पतियों की समृद्धि को प्रतिमाह बढ़ाता है, वह तो बैक से उसी दिन पूरी राशि प्राप्त कर लेता है किन्तु वेतनभोगी गरीब कहीं घर या वाहन नीलाम न हो जाय इसके लिए भोजन और वस्त्र में कटौती कर कर्ज को पाटता रहता है। गहराई से विचार करें तो मानव रूप में विद्यमान भौतिकवादी इन्द्र की गिरफ्त में पूरी जनता है। इस पर गहराई से विचार करना उचित है।

'गतं न शोच्यम्' के सिद्धान्त के अनुसार पुराकथाओं के उन अंशों को ही विचारार्थ ग्रहण करें जो सभी के मार्गदर्शक और उपकारक हो।

- प्रो. रहस बिहारी द्विवेदी

प्रो. डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री

प्रो. डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री। फैकल्टी ऑफ मेडिसिन (आई.एस.एम.) व पदेन सदस्य अकादमिक काउंसिल उस्मानिया युनिवर्सिटी हैदराबाद। एम.डी. (जनरल मेडिसीन) एवं पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शताधिक स्नातोकोत्तर चिकित्सानुसंधान शोध प्रबन्धों के प्रत्यक्ष व परोक्ष में निदेशक/ दशाधिक भारतीय विश्वविद्यालयों के बोर्ड ऑफ स्टडीज (यू.जी.पी.जी. मेडिकल एजुकेशन) में विशेषज्ञ सेवाएं। डॉ. शास्त्री वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ ख्यात विख्यात चिन्तक, उत्कृष्ट शिक्षा शास्त्री, लब्ध प्रतिष्ठित चिकित्सक एवं महान विचारक है। 'वेद मन्त्रों के मन्त्रदृष्टा ऋषि गौतम' जैसे अनेक ग्रन्थों का लेखन कर साहित्य की सेवा की। - प्रोफेसर डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री 'जाति रत्न' द्वारा सम्मानित हो चुके हैं।

पता - डॉ. आई.डी. शास्त्री
ब्लॉक - ए, फ्लेट नं. 202,
गोकुलधाम सोसायटी, बरकतपुरा
हैदराबाद - 500 027
संपर्क- 8886420348

अहल्या इन्द्रजार विषय पर प्रामाणिक समाधान

भारतीय साहित्य में वेदों को सर्वोच्च ज्ञान का भण्डार माना व स्वीकार किया गया है। अथर्ववेद के 10-8-32 पर यह पद्य है कि- ''**देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति**'' अर्थात् ईश्वर प्रदत्त ज्ञान न कभी नष्ट होता है ना ही कभी क्षीण होता है। वस्तुतः इस आधार पर उपरोक्त विषय साहित्य अनुसंधान की अपेक्षा रखता है। वैसे भी यह अनुसंधान का युग है। ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों में अनुसंधान की चर्चा एवं क्रियाएँ हो रही हैं। वस्तुतः अनुसंधान सत्य का अन्वेषण करता है, जो सतत् परीक्षा का पथ कहलाता है। सत्य सूर्य का प्रकाश है, जो सभी निकषों पर खरा उतरता है और उसकी सिद्धि के लिए कोई सांप्रदायिक निकष या कपोल-कल्पना नहीं चाहिए। आवश्यकता है केवल अज्ञान के आवरण को हटाने की।

अतः कहा गया है कि- ''**हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यसाऽपहितं मुखं, तत्त्वं पुषन्नापावृणु- सत्यधर्माय दुष्टये।**'' ऐसी ही महिमा है त्रिकालाबाधित आप्रवचनों की, किन्तु आप्तता की प्राप्ति के लिए कठोर तप एवं अनुशासन के मार्ग से गुजरना ही पड़ता है और यही अनुसंधान है।

वस्तुतः ''**अनुसंधान के स्वरूप**'' को जानना प्रासंगिक है। ''अनुसंधान'' शब्द खोज के अर्थ में प्रयुक्त होता है। (अनु त्र अनन्तर, संधान त्र खोज या सम्यक् ज्ञान) दूसरा पर्याय है ''अन्वेषण'' यह (अनु त्र अनन्तर, एषण त्र खोज)। तीसरा पर्याय है ''पर्यर्वेषण'' यह (परि त्र चारों ओर, ऐषण त्र खोज) अर्थात् विषय या वस्तु का सर्वांगीण अध्ययन। ये सब अनुसंधान शब्द के सारगर्भित पयार्यवाची शब्द हैं। ''गवेषण'' शब्द भी इस हेतु प्रयुक्त होता है। अतः लुप्त विषयों या वस्तुओं अथवा विचारों की खोज को ''गवेषण'' कहा जाता है। अद्यत्वे ''शोध'' शब्द का प्रचलन अधिक है।

अत: भ्रान्त विचारों या विषयों का शोधन कर नवीन युक्तियुक्त विचारों की शृंखला स्थापित करना शोध की परिधि में आता है। वस्तुत: अनुसंधान लोक कल्याण की कामना से प्रवृत्त होता है। यह यथार्थ-ज्ञान के बिना संभव नहीं! अत: उपरोक्त विषय पर संशय का निवारण तथा जिज्ञासा की पुष्टि इस विषय का मूल प्रयोजन है। अत: सैधान्तिक ज्ञान का उपयोग व्यावहारिक क्षेत्र में लोक-कल्याण के कार्यो में होता है। अस्तु!

''अहल्या इन्द्र जार'' विषय पर आक्षेप के समाधान हेतु उपरोक्त पृष्ठभूमि में साहित्यानुसंधान के आधार पर विषय-प्रवेश किया जाता है कि ताकि-कपोलकल्पित घटना पर प्रामाणिक रूप से सदा के लिए विराम लगाया जा सके। शब्द संधान का उपरोक्त जाज्वल्यमान विषय पर समाधान हेतु प्रयास स्तुत्य है। अस्तु!

1. पद्मपुराण-

सृष्टि खण्ड के अध्याय 54 एवं पृष्ठ संख्या 168 पर भगवानुवाच: यह कहते हुए सती अहल्या का 50 श्लोकों में विवरण दिया है। इस विवरण का सारांश यह निकलता है कि जो अहल्या-इन्द्रजार की विस्तृत कथा का द्योतक है और यही दर्शाने का भी प्रयास किया गया है कि-देवों का राजा इन्द्र देवलोक में देहधारी देव था। वह गोतम ऋषि की स्त्री अहल्या के साथ जार कर्म क्रिया में लिप्त था। एक दिन जब उन दोनों को गोतम ने देख लिया, तब इस प्रकार शाप दिया कि- ''हे इन्द्र! तू हजार भग वाला हो जा तथा अहल्या को शाप दिया कि तू पाषाण रूप हो जा।'' इस पर उन्होंने गोतम से प्रार्थना की कि - ''हमारे शाप का मोक्ष कैसे व कब होगा?'' तब इन्द्र से कहा कि - ''तुम्हारे हजार भग के स्थान पर हजार नेत्र हो जायें'' और अहल्या को वचन दिया कि- ''जिस समय श्रीरामचन्द्र अवतार लेकर तेरे पर अपना चरण लगायेंगे, उस समय तू फिर अपने स्वरूप में आ जावेगी।''

इस प्रकार पुराणों में यह कथा बिगाड़कर लिखी गयी है। जबकि सत्य ग्रन्थों में ऐसा नहीं है। प्रमाण देखें-

1) **इन्द्रागच्छेति। गौरावस्कन्दिन्नहल्यायै जारेती। तद्यान्यैवास्या चारणानि तैरेवैनमेतत् प्रमुमोदयिद्यति** (शतपथ ब्राह्मण का.3/अ.3/ब्रा.4/कं.18)

2) **रेतः सोमः।।** (शतः कां. 3/अ. 3/ब्रा. 2/के. 1)

3) **रात्रिरादित्यस्यादित्योदयेऽन्तर्धीय ते।।** (311-) निरुक्त अ. 12, खण्ड 11.

4) **सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गंधर्व इत्यपि निगमो भवति। सोऽपिगौरुच्यते**।।4।। निरूक्त अ. 3, खं. 16।।

5) **जार आ भगम् जार एव भगम्। आदित्योऽत्र जार उच्यते, रात्रेर्जरयिता।।** (5) निरूक्त अ. 3, खं. 16 ।।

6) **एष एवेन्द्रो य एष तपति।** (6) शतपथ कां. 1, अ. 6, ब्रा. 4, कं. 18 ।

इन्द्रागच्छेति -

उपरोक्त प्रमाणों का सारांश यह है कि (अर्थात् उनमें इसी रीति से है कि)- सूर्य का नाम इन्द्र, रात्रि का नाम अहल्या तथा चन्द्रमा का नाम गौतम है। यहाँ रात्रि और चन्द्रमा का स्त्री-पुरुष के समान रुपालंकार है। चन्द्रमा अपनी स्त्री रात्रि से सब प्राणियों को आनन्द कराता है। और रात्रि का जार-आदित्य है, अर्थात् जिसके उदय होने से रात्रि अन्तर्धान हो जाती है, और जार अर्थात् सूर्य ही रात्रि के वर्तमान रूप श्रृंगार को बिगाड़ने वाला है। इसलिए यह स्त्री-पुरुष रुपालंकार बांधा है, कि जैसे स्त्री पुरुष मिलकर रहते हैं, वैसे ही चन्द्रमा और रात्रि भी साथ-साथ रहते हैं। चन्द्रमा का नाम गौतम इसलिए है कि वह अत्यंत वेग से चलता है। और रात्रि को अहल्या इसलिए कहते हैं कि उसमें दिन का लय हो जाता है, तथा सूर्य रात्रि को निवृत कर देता है, इसलिए जार कहलाता है।

इस उत्तम रूपालंकार विद्या को अल्पबुद्धि पुरुषों ने बिगाड़ के सब मनुष्यों में हानिकारक फल प्रसारित व प्रचारित कर दिया है। इसलिए

सब सज्जन लोग पुराणोक्त मिथ्या कथाओं को पूर्णतः त्याग देना चाहिये और सत्य ज्ञान को विवेकपूर्ण ग्रहण कर आचरण करना चाहिए। विद्वानों ने भी कहा है कि-

प्राचीनमित्येव न साधुसर्वं पाश्श्चात्यमित्येव न सर्व सत्यम्।
सन्तः परीक्षान्यतभजन्ते मूठः परः प्रत्ययनेय बुद्धिः।।

पुनश्चः

जब हम पुराणादि को प्रमाण या कथन के रूप में उद्धत कर स्वपथ की स्थापना को बलवान बनाने का प्रयास करते हैं तब सर्वप्रथम हमारी दृष्टि वेदों पर जाती है, क्योंकि संसार भर के उपलब्ध साहित्य में वेद सर्व प्राचीन ग्रन्थ है, यह एक सर्वसम्मत आर्ष विचार है। फिर अधिकांश भारतीय विद्वजनों के विश्वास के अनुसार तो वेद ईश्वरीय ज्ञान है, जो अनादि व अनन्त है। सृष्टि का प्रलय हो जाने पर जब सारा जगत् प्रकृति के गर्भ में समा जाता है, तब भी वेद ईश्वर के भीतर ज्ञान- रूप में विद्यमान रहते हैं ''क्या धर्म है क्या अधर्म है, क्या सत्य है क्या असत्य है, क्या आर्ष है क्या अनार्ष है?'' इसके निर्णायक वेद और स्मृति माने जाते हैं, पर वेद और स्मृति में भी यदि कहीं पारस्परिक विरोध हो तो तब वेद का कथन ही प्रामाणिक माना जाता है, स्मृति का नहीं। अतः ''श्रुति स्मृति विरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसी'' कहा है। अतः वेद स्वतः प्रमाण है, अन्य धर्मशास्त्रों की प्रामाणिकता वेद मूलक होने पर होती है। जब भारतीय धर्मशास्त्रों में वेदों की इतनी अधिक महत्ता है, तब किसी भी विषय में यह देखना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि-वेद उस विषय में क्या कहते हैं।

उपरोक्त पृष्ठभूमि में पुराणोक्त ''अहल्या इन्द्र जार'' की काल्पनिक कथा का सुस्पष्ट खण्डन हो जाता है और यर्थाथ चित्रण ही सर्वमान्य प्रमाण बन जाता है, बन जाना भी चाहिए।

इति।। शुभमस्तु!

- प्रोफेसर डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री

श्याम सुन्दर भट्ट

राजस्थान के प्रतिष्ठित शिक्षक, प्रशासक एवं ऐतिहासिक पात्रों को ओपन्यासिक विधा से उकेरने में सिद्धहस्त लेखक है। आपकी अब तक 22 प्रकाशित पुस्तकों में से 14 ऐतिहासिक उपन्यास है। मेवाड़ एवं सिंध के महापुरुषों के अतिरिक्त फीजी के प्रवासी भारतीय समाज पर भी आपका उपन्यास है। 'सांस्कृतिक भूगोल कोष' आपकी विशेष देन है।

विभिन्न पुराणों में छितराए भगवान श्री परशुराम के जीवन की विविध घटनाओं को उपन्यास विधा के सूत्रों में बांधने का सफल प्रमाण है। 'कालजयी श्री परशुराम' नामक उपन्यास।

पता - 15/6, सागर एन्कलेव
फतहपुरा, विद्याभवन रोड़
उदयपुर (राज.) 313 001
संपर्क- 0294 245178
94136 66395

इन्द्र और अहल्या के संबंध

महर्षि श्री गौतम, इन्द्र, चन्द्रमा ओर अहल्या को लेकर एक कथा पुराणों में वर्णित है, जिसका सारांश यह है कि इन्द्र ने अहल्या के साथ सहवास किया था। यदि यह कथा ज्यों की त्यों सत्य है तो इसका अर्थ यह समझा जाना चाहिए कि हमारे ऋषियों को यह भी पता नहीं लगा कि उनके घर में इन्द्र नामक कोई व्यक्ति गलत इरादों के साथ आया है और उसका एक सहायक भी साथ है। इससे तो हमारे ऋषि जैसी उच्चतम स्थिति तक पहुँचे व्यक्ति का उपहास ही होगा। चंद्र और इन्द्र का देवत्व भी प्रश्नों के घेरे में आ जाएगा। ब्रह्माजी जिन्हें हमें सृष्टि का सर्जक मानते है। उनकी मानस पुत्री व्याभिचार की दोषी कही जाएगी। यदि ये सब दोषी है तो इन सबकी कथा को पुराणों और स्मृतियों में स्थान क्यों दिया गया? अथवा यों भी कह दें कि हमारे समस्त प्राचीन ग्रंथ क्या मानवीय दुर्बलताओं के परिलेखन के कोश हैं।

इन्द्र और अहल्या की गाथा का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण (3.3.5. 18) तैत्तरियोपनिषद् (1.12.4) तथा षड्विंश (1–1) में मिलता है। इसी आशय को उल्लेख अर्थववेद (12.2.17 सहसाक्षपतिपश्यं पुरस्तात्) से भी मिलता है। यहां यह भी समझ लेना आवश्यक है कि वेद और पुराणों में वर्णित विषयों में असंबद्धता, असंगति तथा व्यवहार विरुद्धता नहीं है। वेद सूत्रात्मक शैली में विषय की उद्घोषणा करते हैं, जबकि कालान्तर में पुराणादि ग्रंथ उन सूत्रों की सामान्य लोगों के लिए व्याख्या करते हुए दिखाई देते हैं। वैदिक प्रतीकात्मक सूत्र ही पुराणों की कथाओं के रूप में परिलक्षित होते हैं। अहल्या की गाथा को देवीभागवत (1.5.46), ब्रह्मवैवर्तपुराण (कृष्ण जन्म खण्ड (61.44.46) तथा वाल्मीकीय रामायण से (बालकाण्ड अध्याय 49) भी विवेचित किया गया है। यह कथा एक रूपक है। दैनन्दिन घटने वाली एक नैसर्गिक घटना है जिसे प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से स्पष्ट होती रहती है। आइए इस गाथा के पात्रों के अर्थ को समझने का प्रयास करें।

अहल्या-

इसका अर्थ है- ''अब्रह्म यम्यते अहो यमयति वा सा अहल्या'' अर्थात् जो रात्रि के द्वारा समाप्त किया जाए अथवा जिसको दिन समाप्त करे वह अहल्या है। इस प्रकार अहल्या का अर्थ रात्रि हुआ। अहल्या का एक अर्थ यह भी है कि वह जिसका जन्म हल द्वारा जोती गई भूमि से नहीं हुआ हो अर्थात् यह कन्या अर्योनजा थी।

गौतम -

गौतम का शाब्दिक अर्थ है- गो- पृथ्वी से प्रादूर्भूत होने वाली काली किरणें। पृथ्वी का स्वयं का प्रकाश नहीं है किन्तु चंद्रमा के माध्यम से सूर्य के परावर्तित प्रकाश से वह रात्रि में चमकती है, अत: पृथ्वी से निकलने वाली काली किरणें दब जाती हैं। निरुक्तकारने कहा है- सुषुम्ण: सूर्यरश्मिचन्द्रमा गन्धर्व इत्यादि निगमोभवति। सोऽपि गौरूच्यते.... सर्बेपि रश्मयो गाव: उच्यन्ते। (निरुक्त 2/2/2) कुमारिलभट्ट ने तन्त्रवार्तिक के अनुसार गौतम ही चंद्रमा है।

चंद्रमा -

इन्द्र ने चंद्र को कुकुट पक्षी बनाया। सभी जानते है कि चन्द्रमा दो पक्ष होते हैं अत: चन्द्र पक्षी है।

इन्द्र -

इन्द्र प्रकाश का देवता है। श्रुति कहती है- यथाग्निगर्भा पृथिवी तथा धोरिन्द्रेण गर्भिणी। अर्थात् जिस प्रकार पृथिनी अग्निगर्भा है, उसी प्रकार अंतरिक्ष इन्द्र के द्वारा गर्भवान बना हुआ है। अंतरिक्ष का गर्भ इन्द्र है अत: इन्द्र प्रकाश का देवता है। इन्द्र और सूर्य के एक्य को शतपथ ब्राह्मण में कहा हैं- ''य एष सूर्यस्तपति, एषनु एवं इन्द्र:।'' सूर्य ही परम ऐश्वर्यशाली है अत: वह इन्द्र है।

जार -

जर्जर करना, परिसमाप्त करना। जारकर्म का सुर्य्य है। निरूक्त (3-3-4) के अनुसार ''आदित्योऽत्र जार उच्यते रात्रेर्जरयिता। जार का अर्थ उत्पति भी होता है।

कथा की प्रतीकात्मकता का विश्लेषण-

उपरोक्त विवरण के अनुसार कथा का जो स्वरूप उभरकर आता है वहां इस प्रकार है। आख्यान के अनुसार इन्द्र रात्रि में अहल्या के पास जाता है। चंद्र पक्षी रुप में उसकी सहायता करता है। भौगोलिक घटना ही इसका आधार है। रात्रि का स्वामी चंद्र है अर्थात् गौतम है। इन्द्र अर्थात् सूर्य रात्रि का उपपति प्रतीत होता है अर्थात चंद्रमा के माध्यम में रात्रि को अपना प्रकाश फैलाता है इसका अर्थ है कि रात्रि का उपभोग सूर्य (इन्द्र) करना है, विशेषत पूर्णिमा को पूर्णरूप से।

गौतम (चन्द्र) अपनी कलाओं (कृष्ण शुक्ल पक्षों) के माध्यम से गंगा स्नान करने जाता है अर्थात् कलाओं के उतार चढ़ाव के कारण असमय में (अर्द्धरात्रि में) डूब जाता है। जब वह पुनः अगले दिन उदय (आश्रम में पुनः आगमन) होता है तब तक इन्द्र रात्रि (अहल्या) के साथ (सूर्य) जार कर्म (रात्रि की समाप्ति और प्रकाश का फैलाव) कर चुका होता है अर्थात् रात्रि जर्जरित हो चुकी होती है।

गौतम इन्द्र को देखकर श्राप देता है कि वह सहस्र भगवाला हो जाए। सहस्त्रनेत्र का अर्थ है- 'सहसेषु भेषु नक्षत्रेषु गच्छति'' अर्थात हजार ताराओं में गमन करके टिमटिमाने वाला। यही कारण है कि इन्द्र सहस्त्रनेत्र वाला कहा गया है। यहां ''भग'' नेत्ररूप में परिणत मानलिए गए है। ऋषि अपनी पत्नि को शिला हो जाने का शाप देता है, उसका अर्थ है सूर्यास्त के समय जगत् की स्थिति पाषाण जैसी रहती है। उस समय न प्रकाश रहता है, न गौतम अर्थात् अन्धकार ही। कुमारिल भट्ट (आठवी शती) एवं इससे भी एक हजार वर्ष पूर्ण यास्काचार्य ने भी रात्रि के साथ होने वाली घटना को इसी प्रकार समझाया है । स्वामी दयानन्द भी इसी विवरण को सत्य मानते थे।

यदि इस घटना को वास्तविक मानें तो - इसका 'तो' का उत्तर वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड-49) द्वारा दिया गया है। श्लोक इस प्रकार हैं-

कुर्वतां तपसो विघ्नं गोतमस्य महात्मनः।
क्रोधमुत्पाद्य हि मया सुरकार्य मिदं कृतम्।।

अफलोस्मि कृतस्तेन क्रोधात्मा च निराकृतः।
शापमोक्षेण महता तपोस्यापहृतं मया।।
तन्मां सूरवराः सर्वे ऋषिसंघाः सचारणाः।
सुरकार्यकरं यूयं सफलं कर्तुमर्हतः।।

गौतम ऋषि उग्र तपस्वी थे। उनका तप जनस्थान एवं गोदावरी के उद्‌गम के आसपास के क्षेत्रों को ध्वस्त एवं दग्धकरने में समर्थ था। तपस्या की तीव्रता से देवों का भयभीत होना स्वाभाविक था। वे गौतम की तपस्या को भंग करना चाहते थे। बिना क्रोध को उद्दीप्त किए उनकी तपस्या निष्फल नहीं हो सकती थी। इसलिए इन्द्रादि देवगणों ने देवों की स्वीकृति से योजना बनाई। इन्द्र स्वयं इस षड़यंत्र में प्रवृत हुआ। सूक्ष्मदेहाधारी दिव्यादेव इन्द्र एवं अयोनिजा अहल्या को भी इस योजना में अपनी भूमिका का निर्वहन करना था। योजना सफल हुई। इन्द्र ओर अहल्या शापित हुए। पति के प्रति किए गए देव षड़यन्त्र के अनुताप से अहल्या जड़वत हो गइ। यह जड़त्व भगवान श्रीराम एवं विश्वामित्र जैसे घोर तपस्वी के समक्ष टूटा।

इन्द्र को जार (उपपति) बताकर भी वेद उसके दोषों के मार्जन की व्यवस्था नहीं करता है। दूसरी ओर पुराण मानवीय मर्यादा की रक्षा के लिए दोषी व्यक्ति के पदाधिकार पर बिना ध्यान दिए ही उचित दण्ड की व्यवस्था करता है। इन्द्र को वृषणहीन होना पड़ा तथा कालान्तर में सहस्र भग होना पड़ा किन्तु इन्द्र द्वारा किए कर्म से देव गण संतुष्ट हुए और उन्होंने इन्द्र को मेष का वृषण (अण्डकोश) लगाकर उसे 'सवृषणा'' बना दिया गया। एवं सहस्त्रभग का श्राप सहस्रनेत्र में बदल गया।

रुपक दृष्टि से देखने पर यह प्रकरण दैनन्दिन घटने वाली भौगोलिक घटना का प्रतीक रूप है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह राष्ट्रहित का कार्य कहा जा सकता है। उभय दृष्टि को ध्यान में रखने पर पुराण की इस घटना से कोई भी विप्रतिपत्ति दृष्टिगोचर नहीं होती है।

- श्याम सुन्दर भट्ट

देवदत्त पटनायक

अनेक पुस्तकों के लेखक इसके साथ ही पौराणिक कथाकार, नेतृत्व सलाहकार, लेखक और संपादक भी है। इनका कार्य धर्म, पुराण, मिथक और मुख्य रूप से प्रबन्धन के क्षेत्रों पर केन्द्रित है।

इन्द्र के कितने रूप !

आजकल जब हम इंद्र की बात करते है तो वह अधिकतर पौराणिक कथाओं के इंद्र के बारे में होता है-वह इंद्र जो स्वर्ग में रहता है, अप्सराओं और गंधर्वों से घिरा रहता है, सोमपान करता है, ऐरावत पर बैठा है, जिसका हाथ में वज्र है और जिसके गुरु का नाम बृहस्पति है। एक ऐसा 'अय्याश' राजा जो असुरों से डरता है और हमेशा ब्रह्मा से असुरों का संहार करने का कोई न कोई उपाय पूछता रहता है। वह ऋषियों से भी डरता है और उनकी तपस्या को भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजता है। वह उन राजाओं से भी डरता है जो यज्ञ करते हैं और वह उनके घोड़े चुरा लेता है। अर्थात् हमें इंद्र की बतौर एक असुरक्षित राजा की कथा ही प्राप्त होती है। ये पौराणिक कथाएं करीब 1500 वर्ष पुरानी है, जब पुराण लिखे गए थे ।

लेकिन इसके 2000 वर्ष पहले जब हम वेदकालीन इंद्र के बारे में सोचते हैं, तब उनका एक अलग ही रूप दिखाई देता है। पौराणिक इंद्र, विष्णु, शिव और दुर्गादेवी से प्रार्थना करते हैं, अपनी रक्षा के लिए। लेकिन वे ऋग्वेद के रक्षक भी है। वे वृत्र और वाला जैसे असुरों के साथ अपने वज्र से युद्ध करते हैं और पानी व नदियों को घेरने वाली बाधाओं को तोड़कर उन्हें फिर से मुक्त करते हैं। अर्थात् वे जल को मुक्त करने का काम करते हैं। इंद्र को लेकर रची गई वैदिक कविताओं या वैदिक संहिताओं में इंद्र की प्रशंसा की गई है। यहां पर इंद्र एक बड़े शक्तिशाली योद्धा है। वे युद्ध से नहीं डरते। यहां पर न स्वर्ग का वर्णन है, न ऐरावत का और न ही उनकी असुरक्षा की भावना का।

वैदिक और पौराणिक काल के बीच में हमें बौद्ध, जैन और तमिल परंपराओं के बारे में भी पता चलता है। 2000 वर्ष पहले हमें बौद्ध, जैन और तमिल ग्रंथों में इंद्र का वर्णन मिलता है। लेकिन ये इंद्र न तो वैदिक इंद्र जैसे हैं और न ही पौराणिक इंद्र जैसे। बौद्ध ग्रंथों में इंद्र

को 'शक्र' कहा गया है। कहते है कि जब बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ था, तब वे ब्रह्मा के साथ इंद्र के सामने प्रस्तुत हुए और उनसे यह इच्छा व्यक्त की कि वे अपने ज्ञान का प्रचार विश्व भर में करें। इंद्र के स्वर्ग को 33 देवताओं का स्वर्ग माना जाता है जो मेरु पर्वत के ऊपर है। वेदों में इंद्र की पत्नी का नाम इंद्राणी बताया गया है। बौद्ध ग्रंथों में कहा गया है कि उनकी पत्नी असुर पुत्री है और इंद्र उनमें विवाह करते हैं। इसके बावजूद असुरों के साथ उनके हमेशा मतभेद और युद्ध होते रहते हैं।

जैन ग्रंथों में इंद्र हमेशा तीर्थंकरों की सेवा करते दिखाई देते हैं, इंद्राणी या सची के साथ। जब किसी तीर्थंकर का जन्म होता है, तब उस घटना स्थल पर इंद्र हमेशा प्रस्तुत होकर उनकी सेवा करते हैं। मंदिरों में भी वे सेवक के रूप में दिखाए गए हैं। इसका अर्थ है वे देवों के राजा हैं, लेकिन जैन तीर्थंकरों के सेवक।

तमिल ग्रंथों में वरुण को समुद्र का देवता माना गया है, मुरुगन को पहाड़ों के देवता तो इंद्र को मैदानों के देवता। मरु भूमि, मरुस्थल को काली देवी के साथ जोड़ा गया है और जंगलों को विष्णु के साथ। यहां पर इंद्र का अधिक वर्णन ना होते हुए वे एक क्षेत्र से जुड़े हुए हैं, न की पानी या स्वर्ग से।

इस तरह पांच प्रकार के इंद्रों का वर्णन मिलता है-वैदिक काल के इंद्र, पौराणिक काल के इंद्र, बौद्ध धर्म के इंद्र, जैन धर्म के इंद्र और तमिल परंपरा के इंद्र। कौन-से इंद्र सत्य हैं? आजकल ऐरावत वाले इंद्र को हम ज्यादा मानते हैं- जो शिव, विष्णु और देवी की आराधना करते हैं। इंद्र के कोई मंदिर नहीं होते, लेकिन इंद्र की सबसे पुरानी छवि हमें पुणे के पास भाजा नामक एक बौद्ध गुफा में मिलती है। यह गुफा लगभग 2200 वर्ष पुरानी है और यहां पर इंद्र ऐरावत के ऊपर बैठे दिखाई देते हैं। संभवतः यह ऐसी पहली छवि होगी जिसमें वे ऐरावत पर बैठे हैं।

- देवदत्त पटनायक

साभार-रसरंग दैनिक भास्कर

(दिनांक 6 जनवरी, 2019)

पण्डित सत्यनारायण शास्त्री
महामहिम राष्ट्रपति सम्मानित संस्कृत मनीषी

शिक्षा कवि कुलगुरु महाकवि कालीदास की तरह ही हुई। आप ज्योतिष-कर्मकाण्ड, पौरोहित्य विषयों में सिद्धहस्त है। आपने विविध यज्ञों में आचार्य पद ग्रहण किया। आप अनेक पुस्तकों के मत्प्रणीत है यथा मनोवृत्ति - सुधार, निम्बार्कोदयखण्ड काव्य, मेवाड़ मार्तण्ड, यौतुकयातु एकांक, राष्ट्र केशरी शिवाजी एकांक, नागकन्या-सुलोचना, संस्कृत दोहा शतकम्, चन्द्रशेखर - गद्यकाव्य, कटुसत्य खण्डकाव्य, भारतकुवलयम्, संस्कृतदोहा - सप्तशती काव्य, रहीम दोहावली, परशुराम दोहावति आदि।

सम्मान - राष्ट्रपति सम्मान (भारत के राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा दिनांक 6 जुलाई, 2011 को)

पता - ज्योति जीवन, शास्त्री सदन,
शिवपुरी, पीपल गली, हाथी भाटी
अजमेर (राज.)
संपर्क- 0145 5131016

सती अहल्या

गौतम शब्द का निर्वचन अनेक प्रकार से हुआ है जिसमें एक यह भी है यथा- गौतमः गोषु द्वादशादित्येषु तमःश्रेष्ठः यहाँ व्याकरण का यह सूत्र लगा है ''अतिशायने तमबिष्ठनौ'' (2/3/35) अतिशायन याने उत्कृष्ट अथवा श्रेष्ठ अर्थ को प्रकट करने के लिए यह तमप् प्रत्यय लगता है। उत्कृष्टता तथा आगे रहना यह अर्थ संस्कृत हिन्दी-वामन-आप्टे-कोष बतलाता है। रात्रि के अन्त में प्रातः काल सूर्योदय-समय यह रात्रि दिन के सहयोग से सूर्य में विलीन हो जाती है। इस तरह रात्रि, सूर्य के अन्तरात्मा (हृदय) में मिलकर प्राणप्रिया सहयोगिनी बन जाती हैं। रात्रि की रवि के साथ यह विलयस्थिति नैसर्गिक दृश्य के रूप में प्रतिदिन बनती है। यही स्थिति सूर्यरूपी पुरुष (गौतम) एवं रात्रिरूपिणी स्त्री (अहल्या) इस भाव-सूचक पति-पत्नी स्वरूप का दर्शन कराती है। यहाँ पर गौःशब्द का अर्थ सूर्य है तथा अहल्या का अर्थ रात्रि है। वैदिक-निर्वचन यह है कि अहिन-दिने लीयते प्रविशति या सा अहल्या यानी यही रात्रि दिवस वेला के समय सूर्य में समाविष्ट होती है।

यह नैसर्गिक घटना प्रति दिवस घटती है इसी को अनेक कथाओं में अनेक प्रकार से रूपान्तरित किया गया प्रतीत होता है। ऐसे ही विविध प्रसंग पुराणों में लिखितरूप से विद्यमान है। विशुद्ध रूप तो यह वैदिक घटना-प्रसंग ही सत्यविवेचक प्रतीत होता है। सूर्य ही यहाँ गौतम है तथा रात्रि ही अहल्या है। एक शब्द यह भी मिलता है कि ''अहल्याया जारः'' लौकिक अर्थों यह जार शब्द याने यारशब्द को प्रकट करता है जो दुराचार-सूचक है। किन्तु इस शब्द का सत्यार्थ भिन्न है यानी अहल्या रात्रि उसका समापन करने वाले, सूर्य की विद्यमानता में रात्रि समाप्त याने पलायन कर जाती है जू-वयोहानौ इस चुरादिगणीय-धातु से ''दारजारौ कर्तारि णिच्च'' (3/3/20) इस वार्तिक से घञ्प्रत्यय करने पर जारशब्द सिद्ध होता है।

जारयति नाशयति इति जार: यानी रात्रि का समापक सूर्य, यह सूर्य ही यहां गौतम है तथा अज्ञान-तमोमयी रात्रि ही अहल्या है। यह विशुद्ध नैसर्गिक दृश्य है तो प्रतिदिन दृष्टिगत होता है। यहाँ पर सांसारिक अन्यथा भावना की कल्पना करना या व्यभिचार-शंका करना नितान्त हेय है। महर्षि गौतम त्रिकालदर्शी महान् दिव्यात्मा व योगेश्वर सत्ययुगीय दैवपुरुष थे तथा माता अहल्या निष्कलंक होने के कारण पाँच सतियों में सर्वप्रथम पद प्राप्त करती है यथा ''अहल्या द्रोपदी तारा, सीता, मन्दोदरी तथा'' आदि गौतम के समकालीन ऋषियों ने अहल्या को निष्कलंक प्रतिपादित किया है। अत: हमारे तथा समग्र विश्व के सपत्नीक महर्षि गौतम वन्दनीय तथा अभिनन्दनीय युग पुरुष है। श्रावणमास के सूर्य का नाम ही इन्द्र है और सूर्य ही गौतम है।

हल्या हल से जोतने योग्य भूमिका नाम हल्या है। जो हल्या नहीं हो उसे अहल्या कहते है याने जो हल से नहीं जीती गई हो अथवा हल से स्पर्श नहीं हुई हो याने काम में नहीं ली गई तो अथवा दूसरों से छुई तक न गई हो। उसे अहल्या कहते है याने किसी के भी द्वारा जो अस्पृष्ट रही यहां तक की गौतम के द्वारा भी रक्षणावस्था में अस्पष्ट ही रही। गौतम के धैर्य के परीक्षण के पश्चात् ब्रह्मा ने अपनी मानसी सृष्टि स्त्रीरत्न-रूपी कन्या पत्नी रूप में उपहार स्वरूप याने ब्रह्मविवाह के द्वारा गोतम ऋषि को समर्पित कर दी। यहां कहीं भी दुराचार/दुर्गन्ध नहीं दिखलाई देता है। फिर नीतिवाक्य यह है कि यदि कन्या स्त्रीरत्न हो तो दुष्कुल (खराब-खानदान) से भी स्वीकार्य है। जबकि अहल्या उत्तम वंशजन्मा थी ब्रह्मा की स्त्री-सृष्टि की आद्य स्त्रीरचना थी। वंश व आचरणशुद्धि के कारण ही पाँच सतियों में अहल्या की प्रथम गणना बताई गई है। यथा-अहल्या, द्रोपदी, तारा, सीता, मन्दोदरी तथा।

स्त्रीपञ्चकं स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्।।

लोकोक्ति भी है- ''माँ पापिणी सो आपणी'' यहां अहल्या जी का चरित्र पूर्णतया विशुद्ध उदात तथा अग्निपरीष्कृत सुवर्ण-सुदृश है।

अत: अनाधार, शंकायें तथ्यविरुद्ध होने से अविचारणीय व हेय है। ''गुणगृहया विषये विपच्श्रित:'' विवेकीजन तथ्य व गुण ही ग्रहण करते हैं। जैसे हंस दुग्धजल-मिश्रण से केवल दुग्ध ही पीते हैं न कि जल। ज्ञानिजनों के लिए तो संकेत ही पर्याप्त होता है।

- पण्डित सत्यनारायण शास्त्री

डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली

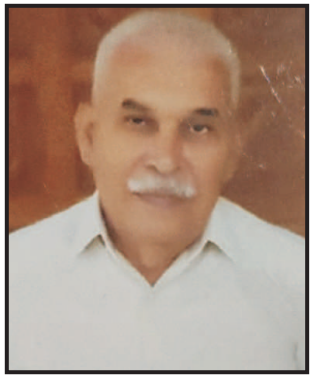

प्राध्यापक – अजमेर विश्वविद्यालय, अजमेर (वर्तमान में स्वामी दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर)

कॉलेज शिक्षक, शिक्षाविद्, साहित्यकार।

पता – बी/6, दातानगर, रेम्बल रोड़
अजमेर (राज.) 305 001

संपर्क– 0145 2425664

वन्दनीया अहल्या

अहल्या महर्षि गौतम की तेजस्विनी पत्नी थी। महर्षि गौतम स्वयं धनुर्वेद के प्रवर्तक मंत्र द्रष्टा ऋषि थे। अहल्या के बेटे गौतम शतानन्द राजर्षि जनक के प्रधानमंत्री थे और न्यायदर्शन के प्रवर्तक थे। अहल्या की बेटी अञ्जना हनुमान की माता थी।

देवता शरीरधारी नहीं होते थे। इसलिए इन्द्रादि देवों को ब्रह्मा ने 'द' कहा तब उनके लिए द का अर्थ 'दमध्वम्' था जबकि असुरों के लिए 'द' का अर्थ 'दयध्वम्' और मनुष्यों के लिए 'दान' अर्थ था।

अहल्या श्राप से पत्थर की हो गई और राम ने लात मार कर उसे मानवी बना दिया-यह सब गप्य है। राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे। वे अहल्या जैसी पूजनीया के लात कैसे मार सकते थे। विश्वामित्र राम को अपने साथ इसलिए नहीं ले गए थे कि वे अहल्या के लात मारें। वे राम और लक्ष्मण को तपोवनों की रक्षा करने के लिए ले गए थे। राम ने ताड़का को मारा भी। मारीच भाग गया।

गौतम के तपोवन में नित्य अग्निहोत्र होता था। गौतम का दाम्पत्य जीवन सानन्द चलता था। अकेले-अकेले यज्ञ नहीं हो सकता-अर्याज्ञयो वै एषः यो अपत्नीकः। यजमान सत्य स्वरूप होता है और यजमान पत्नी अच्छा स्वरूप। यह उत्तम जोड़ा होता है। इसी रूप में महर्षि गौतम और अहल्या नित्य यज्ञ करते थे।

इन्द्र यज्ञकर्ताओं से भी डरता है। यज्ञ भंग करने का प्रयास करता है। पदमोह ही इसका कारण है। वह भी यज्ञ स्थल में आया होगा। अहल्या ने सदय होकर रोका और महर्षि ने कुपित होकर, शाप दिया जिससे सहस्राक्ष-सहस्र भग वाला हो गया।

पति मंत्र दर्शन में व्यस्त हो और पुत्र राजकाज में व्यस्त अहल्या क्या करें? अकेली, अन्नयनस्क होकर बैठी रहे-यही तो अहल्या के

जीवन में एक मात्र मुख्य समस्या थी। उससे मुक्ति दिलाई राम और लक्ष्मण ने। उन्होंने जाकर ज्यों ही 'माता कह कर प्रणाम किया, अहल्या का मातृत्व जाग उठा। उसने महर्षि गौतम को पत्नी होने के अधिकार से पुत्रवत् राम-लक्ष्मण को यजुर्वेद में पारंगत करने का आदेश दिया।

महर्षि गौतम शिक्षण के प्रसंग में तीर दूर फेंक देते। राम-लक्ष्मण दौड़कर तीर लाते तो पसीना-पसीना हो जाते थे। इस लिए स्नेह वत्सला अहल्या ने दोनों पुत्रों के लिए जूतियों ओर छाते का आविष्कार किया। पति जितने कठोर हो जाते पत्नी उतनी ही सद्य हो उठती थी। जीवन की कठोरता में भी राम-लक्ष्मण खरे उतरे तो जनकपुर में धनुर्यज्ञ की रचना करने की प्रेरणा अपने पुत्र को (शतानन्द गौतम को) कदाचित् अहल्या ने ही दी हो ओर विश्वामित्र को राम और लक्ष्मण के धनुर्यज्ञ में ले जाने के लिए भी संकेत किया हो। ऐसी चिन्ताएँ माताओं के ही हिस्से में आई हैं।

एक तेजस्विनी महिला के आदर्श चरित्र को अन्ध श्रद्धा ने किस तरह अपकर्ष की ओर ढकेला इसका यह उदाहरण है। मर्यादा पुरुषोत्तम को भी लांछित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अहल्या का उद्धार कोई क्या करेगा। वह तो स्वयं सबका उद्धार करने वाली है।

महिला का अर्थ है- यहस्य इला- उत्सव की जन्म भूमि। जिसके होने मात्र से जीवन उत्सव बन जाता है। उत्सव उत्कृष्ट सव अर्थात् श्रेष्ठ यज्ञ। आयुर्यज्ञेन कल्पताम्- अपनी आयु को यज्ञ बनाएँ। यह प्रेरणा तो मातृतया अहल्या से ही मिल सकती है।

राजा जनक सीरध्वज कहलाते थे। खेती करते थे। यह प्रेरणा वेदज्ञ गौतम और शतानन्द गौतम से मिली होगी। वेदमाता की उक्ति है-कृषि ही करो । कृषि नहीं करने पर जीवन जुआ बन जाता है। कृषि के प्रेरक और जुआ के पासे (अक्ष) को पैरों तले रखने वाले शतानन्द गौतम इसीलिए अक्षपाद कहलाते हैं। माता अहल्या और पिता गौतम के संस्कारों ने ही उनको अक्षपाद बनाया। शब्द अक्षिपाद नहीं है अक्षपाद है। इस त्रुटि को भी ठीक किया जाये।

- डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली

जीवन, समाज और राष्ट्र का अभिवर्धन करने वाला अक्षपाद गौतम

वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर के सत गौत्र प्रवर्तक ऋषियों में महर्षि का नाम उल्लेखनीय है। अहल्या गौतम की पत्नी थी। मिथिला में गौतम का आश्रम था। न्याय शास्त्र के प्रणेता शतानन्द गौतम महर्षि गौतम के पुत्र थे। वे जनक के सभा पण्डित और कुल पुरोहित थे। गौतम शांति प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। गौतम परम तपस्वी और संयमी थे। गौत्र प्रवर्तक ऋषि वह होता है जो वेदवाणी की रक्षा के लिए जीवन व्रत धारण करता है। अपने शिष्यों के माध्यम से वे मंत्र रक्षा की परम्परा को आगे बढ़ाते हैं। वे स्वयं दृष्टा होते हैं। गौतम गौत्र के दो ऋषियों नौधा और वत्स ऋग्वेद के शतर्ची ऋषियों में गिने जाते हैं। इससे पता चलता है कि गौतम कितने प्रभावशाली ऋषि होंगे। संवत्सर-प्रतिपदा महर्षि गौतम की जन्मतिथि मानी जाती है। वैसे यह युगादि तिथि है। महर्षि गौतम ने धनुर्वेद पर भी ग्रन्थ लिखा था।

'गौतम' शब्द का अर्थ है - 'सबसे तेज चलने वाला।' शरीर की गति की तो एक सीमा होती है। असीम गति तो मानसिक की हो सकती है। मनस्विता और चिन्तनशीलता के कारण ही उनको गौतम नाम से जाना जाता है। वेद जीवन का संविधान है, उसमें अनेक दृष्टियां हैं, जिनको व्यक्ति अपनी चाह के अनुरूप पाकर अपना सके। वेद का एक मंत्र भी जीवन के लिए सर्वस्व बन सकता है।

जो गौतम जीवन दृष्टि को जीवनधार बनाए वही गौतम की संतान गौतम है। गौतम की पत्नी अहल्या प्रात: स्मरणीय मानी जाती है। उनको अहल्या इसलिए नाम दिया गया है कि वे 'हल न चलाए जाने योग्य कठोर भूमि' की तरह हो गई थीं - न हल्या इति इहिल्या। एक दिन ऐसा भी हुआ, जिस दिन उसकी कठोरता का आवरण टूट गया। राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने के लिए तपोवन में आए

तब उनका सम्पर्क अहल्या से हुआ। राम ने माता कहकर अहल्या को प्रणाम किया। ताड़का और सुवाहु जैसे अनाचारी राक्षसों को मारने वाले धनुर्धर राम माता कहें और अहल्या अहल्या बनी रहे ऐसा कैसे संभव है? अहल्या का मातृत्व जाग उठा। अहल्या ने बड़ा आग्रह करके राम लक्ष्मण को धर्नुविधा का प्रशिक्षण दिलवाया। विश्वामित्र ने दिव्य अस्त्र-शस्त्र दिए, तब राम में रावण जैसे पराक्रमी से टकराने की क्षमता पैदा हुई। राम ने अहल्या में मातृत्व के संस्कार जगाए। उसके कारण उसका जीवन ही परिवर्तित हो गया। गौतम को भी अपनी मनस्विता को प्रकट करने का अवसर मिला। अहल्या अंजना की माता थी। हनुमान अंजना के पुत्र थे। ऋग्वेद के गौतम रहूगण (रह-त्यागे धातु से उत्पन्न रहू-त्यागी, त्यागियों में अग्रगण्य) का जीवन दर्शन बड़ा प्रेरणाप्रद है। प्रथम मण्डल में सूक्त संख्या 74 से 93 तक उनके दर्शन के रूप में उल्लेखित है। गौतम एक मंत्र है -

अभित्वा गौतमा गिरा जातवेदा विचर्षणे।

द्युम्नैरभि प्रणोनुमः। (1/78/1)

अर्थात् हे जातवेदा अग्नि! तुम्हारे लिए गौतम की वाणी समर्पित है। द्युम्नो के द्वारा हम नमन करते हैं। वेद में सुखवाची द्युम और सम्नु दो शब्द है। द्युम्न मन की सुखकारी स्थिति का नाम है। सुम्न मन की दिव्यता की स्थिति है। गौतम मन को दिव्यगुणों से भर कर उसमें सौन्दर्य को पाने के समर्थक हैं। निःय नवीनता से यह सौन्दर्य पैदा होता है।

गौतम का एक सूक्त (ऋग्वेद 1/8) स्वराज्य सूक्त है। जिसके दस मंत्रों में अन्तिमांश टेक की तरह अर्चत्रनु स्वराज्यम् अर्थात् स्वारूज्य की अर्चना करते हुए हैं। यह सूक्त इन्द्र देवता को लक्षित हैं। इन्द्र के पराक्रम का बखान करते हुए कहा गया है कि वह स्वराष्ट्र के रूप में प्रकाशित होता है उसी तरह साधक भी आत्मालोक को प्रकाशित कर स्वराज्यसेवी बने। एक मंत्र देखिए -

इत्थाहि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्।

शविष्ठ वर्जिन् ओजसा पृथिव्या निःशशा अहिमर्चन्नतु स्वराज्यम्।

सोम के आनंद में ब्रह्मा ने सृष्टि विस्तार किया। इन्द्र ने पराक्रम

प्रदर्शित करते हुए ओज से व्रज धारण करते हुए पृथ्वी के अहि को स्वराज्य की अर्चना करते हुए समाप्त किया। यह अहि को समाप्त करना ही अहिंसा है।

गौतम की ब्रह्म करने वाला (ब्रह्म कृण्वन्ता गौतमासः) कहा गया है। ब्रह्म का अर्थ उन्नति, उत्थान, विकास है। जीवन समाज और राष्ट्र का अभिवर्धन करने वाला ही गौतम कहा जाता है।

गौतम का एक सिद्धान्त वाक्य है - सब ओर अच्छे विचार और कर्म प्राप्त हों - आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वासः। वे कामना करते हैं कि देवों की भद्र सुमति हमें सादा जीवन जीते हुए प्राप्त हो-देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयाताम्। वे देवसखा बनने के लिए प्रेरणा देते हैं - देवानां सख्यम् उप सेदिया वयम्।

स्वस्ति कामना का मंत्र (स्वस्तिन इन्द्रो...) गौतम का दर्शन है। भद्रता सम्पादन का मंत्र (भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः...) गौतम का दर्शन है। सादा जीवन (ऋजुनीति) उच्च विचार के प्रवर्तक गौतम ऋषि है। वे जीवन में मधुरता भरने की कामना करते हैं।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीःङ्क ।।

(ऋग्वेद 1/9/6)

-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली

जब्बरमल शर्मा

बी.ए., एम.एम. (हिन्दी, अंग्रेजी)

विशेष अध्ययन राजस्थानी साहित्य

सेवानिवृत – सहायक निदेशक (राजभाषा) भारतीय दूरसंचार निगम लि. जयपुर।

प्रकाशित पुस्तकें – अट्ठारह। जिसमें महर्षि गौतम का जीवन वृत, ऋषि गौतम व उनके ग्रंथ, न्याय शास्त्र, महर्षि गौतम एक दृष्टि में।

25 से अधिक शोध-पत्रों का प्रकाशन। सम-सामयिक पत्रिकाओं में निरन्तर लेखन।

पता – 247 रानीसती नगर
अजमेर रोड़, जयपुर
संपर्क- 0141 2810123
94138 41302

अहल्यायै इन्द्र जारः

अहल्या ब्रह्मा की आद्य सृष्टि, मुद्गल की पौत्री तथा एक सती साध्वी स्त्री थी। अतः ''अहल्यायै इन्द्र जारः'' कहना कदापि उचित प्रतीत नहीं होता। 'हल' कहते हैं पाप को। 'अहल' का तात्पर्य जिसमें पाप न हो अर्थात् पाप से परे। इसीलिए अहल्या को पाँच सतियों में प्रथम माना है। ''जारः'' का अर्थ है - उपपति प्रेमी। (जीर्यति अनने स्त्रियां: सतीत्वम् इतिजारः) अतः इन्द्र को जार कहना पूर्णतया गलत है क्योंकि यदि कुछ धर्म ग्रन्थों को सही मान भी ले तो भी इन्द्र ने छल किया था, गौतम का रूप धारण किया था फिर तो वह धोखेबाज हुआ। फिर जार कैसे हुआ? अतः इन्द्र को अहल्यायै जारः कहना पूर्णतया गलत है।

अहल्या के साथ धोके की जानकारी होने पर यद्यपि अहल्या को शापित किया गया। परन्तु गौतम को इसका भास था इसीलिए तो अहल्या की मुक्ति हेतु गौतम ने कोटितीर्थ पर तप किया। अहल्या सरोवर का निर्माण कराया। गौतमेश्वर लिंग की स्थापना की। अपने तप से शंकर को प्रसन्न किया और गंगा की मांग की। यही गंगा, गोदावरी (गौमती) के नाम से प्रसिद्ध हुई और अहल्या उद्धार का कारण बनी। यही नहीं, गौतम ने अहल्या उद्धार के लिए राम आगमन व पाद स्पर्श का भी उल्लेख किया। यदि अहल्या की गलती होती तो गौतम उसके उद्धार हेतु प्रयत्न क्यों करते? भगवान राम उसका उद्धार करने क्यों आते। अहल्या को निर्दोष व पवित्र क्यों मानते? अर्थात् अहल्या निर्दोष थी।

महर्षि गौतम को अपनी गलती का अहसास भी हुआ। गौतम ने अपने पुत्र शतानन्द से शिव की आराधना करने को कहा। शतानंद ने शिव की आराधना की व शिव से यह वरदान मांगा कि ''द्वापर के पहले त्रेता युग आना चाहिए जिससे रामावतार जल्दी होवे और अहल्या उद्धार

जल्दी हो सके। हुआ भी यही कि द्वापर के पहले त्रेता युग आया और राम ने अहल्या उद्धार किया तथा अहल्या को पवित्र व निर्दोष माना।

राम के उद्धार के बाद गोतम पुनः अहल्या के साथ वरूण कानन में आ गए। यदि अहल्या गलती करती तो महर्षि गौतम उसे पुनः क्यों अपनाते। अहल्या सत्चरित थी। क्योंकि गौतम के शाप देने पर अहल्या ने अपने पतिवर्ता धर्म के बल पर गौतम को भी शाप दे दिया कि तुम पर भी गौहत्या का कलंक लगेगा। अतः गौतम पर गौ हत्या का कलंक लगा। यदि अहल्या दोषी होती तो क्या वह शाप देने में समर्थ होती?

अलग-अलग धर्म ग्रन्थों में कवियों, मुनियों तथा लेखकों अपनी दृष्टि से अलग-अलग कहानियाँ लिख दी। इनमें एक रुपता नहीं है तथा विभिन्नताएं है । अतः इनकी सत्यता संदिग्ध प्रतीत होती है। गौतम कभी मुर्गे की बांग से जागते हैं, कभी गंगा समाचार देती है तथा कभी द्वार पर अहल्या नहीं मिलती आदि आदि। अतः कथा में विभिन्नता संदेह पैदा करती है। इसी प्रकार इन्द्र कभी मार्जार (बिल्ली) बनते हैं, कभी गौतम का रूप धारण करते है अर्थात् अलग-अलग ग्रन्थों में अलग-अलग कथाएं है। इन्द्र व अहल्या को शाप भी अलग-अलग ग्रन्थों में अलग-अलग दिए हैं। अतः एकता का अभाव होने से ये कहानियां मनगढंत लगती है।

महर्षि गौतम त्रिकालदर्शी थे तभी सत्यवान के जीवित होने की बात अपनी तपस्या के बल पर बताई थीं। तो क्या आश्रम की बात का पता नहीं लगा सकते थे? इससे सिद्ध होता है कि ये सब बातें असत्य व कपोंल कल्पित थी।

मैंने महर्षि के बारे में थोड़ा-बहुत पढ़ा है। मुझे लगता है कि किसी सबसे पुराणे धर्मग्रन्थ में यह कथा आयी होगी कि इन्द्र महर्षि गौतम से प्रतिशोध लेना चाहता था तो प्रातः की बेला में जब महर्षि गंगा स्नान करने गए होंगे तो इन्द्र ने मौका देखकर आश्रम में प्रवेश किया होगा। तभी गौतम को पता लग गया होगा और इन्द्र को शाप दे दिया। यही कथा अवान्तर ग्रन्थों के लेखकों को अपने ढंग से कल्पना करके रोचक बनाकर लिखते गए। इसी कारण यह कथा अलग-2 ग्रन्थों में

अलग-अलग प्रकार से प्राप्त होती है। अत: इससे सत्यता का अभाव स्पष्ट रुप से झलकता है।

यह बात इससे से भी स्पष्ट होती है कि गौतम सातवे वैवस्वत मनु के 71वें सत्ययुगादि चौकड़ी के प्रथम सत्ययुगादि चौकड़ी के प्रथम सत्ययुग गोतम का समय था। वर्तमान में 7 वे वैवस्वत: मनु के शासन काल की 28वीं चौकड़ी के कलयुग का प्रथम चरण चल रहा है। इससे स्पष्ट है कि गौतम आज से लाखों वर्ष पहले हुए प्रत्येक, मनु के शासनकाल में 71 चौकड़ियों सत्ययुगादि की गुजरती है। ब्रह्मा के एक दिन में सत्ययुगादि चतुष्टयों की एक हजार चौकड़ियाँ व्यतीत होती है। ब्रह्मा की शतायु के अन्तर्गत 14 मनु व 14 इन्द्र आते हैं। इतने वर्षों में कथा कुछ की कुछ हो जाती है। अरबो वर्ष पूर्व का कथा भी कुछ की कुछ बन जाती है। अत: इस कथा में सत्यता का पूर्ण अभाव प्रतीत होता है।

कुछ विद्वानों ने इस कथा को उदात्त रूपक माना है अर्थात् उदात्त का अर्थ है विषय को प्रिय बनाने हेतु बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करना। कुमारिल भट्ट ने बड़ी दृढ़ता के साथ इसे उदात्त रूपक ही माना है। उनका कहना है कि वेदों में इन्द्र के लिए विशेषण है, ''अहल्यायैजार'' इसी विशेषण के आधार पर यह कथा गढ़ी गई है। इन्द्र सूर्य का प्रतीक है तथा अहल्या रात्रि की और गौतमचन्द्र के। इन्द्र रूपी सूर्य से अहल्या रूपी रात्रि का घर्षण किया गया है। इसे निसर्ग (सहन) दृश्य माना है। इसके अलावा शतपथ ब्राह्मण (3.3.148), जैमिनी (299) तथा षड्विश (1.1) में भी रूपक से मिलता जुलता आख्यान आता है। जो अन्य ग्रन्थों से इतर है। ये दार्शनिक आख्यान है जो अन्य ग्रन्थ से भिन्न है।

अन्य कुछ ग्रन्थों में अहल्या को अनुर्वश भूमि तथा जड़ बुद्धि का प्रतीक माना है। इस ग्रन्थों में इस कथा को रूपक माना है। स्कन्ध पुराण में अहल्या को परम साध्वी व पतिव्रता शिरोमणि बताता है अर्थात् इन्द्र व अहल्या की प्रचलित कथाएं का विकृत रूप मनगढ़त व कपोल कल्पित है। कथाएं सत्यता से परे जान पड़ती है। संस्कृत हिन्दी कोष में भी अहल्या को प्रात: स्मरणीय व विशुद्ध चरित्र वाली महिलाओं में से एक बताया है। जिन धर्म ग्रन्थों में अहल्याको पाँच सतियों में एक माना

है। वह अपना सतीत्व कैसे समाप्त कर सकती है? फिर प्रश्न उठता है कि क्या हमारे पुराने धार्मिक ग्रन्थों जैसे रामायण, महाभारत, पद्मपुराण, भगवत, ब्रह्मपुराण, स्कन्ध पुराण, गणेश पुराण आदि आदि में जो कथाएं आयी है क्या वे असत्य है?

इस संदर्भ में मेरा कहना है कि यह कथा लाखों वर्ष पुरानी है ओर यदि इसे सत्य मान भी लिया जाए तो फिर यह प्रश्न उठता है कि इनमें एक रुपता क्यों नहीं है। इनमें भिन्नताएं क्यों है? ऐसा लगता है कि प्राचीन जनश्रुतियों के लेखों के आधार पर इन कथाओं को गढ़ा गया है। ये सत्यता से परे है। कालान्तर में अलग-अलग लोगों ने अपने-अपने ढंग से कथा को रोचक बनाने हेतु अपनी कल्पना से कुछ न कुछ अपने ओर से जोड़ते रहे हैं। इसी कारण इस कथा में एक रुपता का अभाव है व भिन्नताएं है। अत: ये है कथाएं बनावटी व सत्यता से परे हैं।

अहल्या पाँच सतियों में एक थी। फिर उसका दोषी होना कैसे संभव हो सकता है? फिर सतियों में गिनती कैसे आ सकता। यह बात संदेह पैदा करती है। क्योंकि अहल्या साधारण स्त्री नहीं थी। वह ब्रह्मा की मानस पुत्री थी। मुद्गल की पौत्री तथा सात ऋषियों में एक महर्षि गोतम की पत्नी थी। सतयुग की पतिव्रता नारी थी। उस पर लांछन लगना असंभव लगता है।

अत: ''अहल्यायै इन्द्र जार'' वाक्यांश मेरी दृष्टि से पूर्णतया गलत प्रतीत होता है।

- जब्बर मल शर्मा

डॉ. पं. जितेन्द्र व्यास

ज्योतिष विशारद व ज्योतिष मार्तण्ड है, इन्होंने सामूहिक अनिष्ट, ज्योतिष पाण्डू लिपियों, सूर्य सिद्धान्त, फलित ज्योतिष, अर्धमार्तण्ड, गर्भ-शोधन, न्यूमेरोलॉजी, प्रासाद (मन्दिर) वस्तु, पर्यावरण वास्तु, कर्म काण्ड, यांत्रिक ज्योतिष, प्रश्न कुण्डली विज्ञान, मेडिकल एस्ट्रोलॉजी एवं स्त्री विषयक ज्योतिषीय शोध पर अद्‌भूत कार्य किया है। संस्कृत व ज्योतिष विषयों में इन्होंने एम.ए. और ज्योतिष विषय में पी.एच.डी. की है। डॉ. व्यास 20 वर्षों से ज्योतिष विषय में शोधरत है। इन्होंने कई अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलनों में पत्र वाचन किया। इनके 150 से अधिक शोध लेख व शोध पत्र प्रसिद्ध रिसर्च जर्नल्स में भी प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. व्यास ने 12 पुस्तकों का लेखन व सम्पादन करने का भी कार्य किया है।

डॉ. व्यास संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में ज्योतिष विषय के आचार्य है। इनको संस्कृत वांड्मय में उन्मोत्तम कार्य करने के लिए राजस्थान संस्कृत अकादमी, राजस्थान सरकार द्वारा 'नवोदित प्रतिभा सम्मान', ज्योतिष विषय में विशेष योगदान के लिए 'वीर दुर्गादास ज्योतिष सम्मान' जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं तथा कई उपाधियों से भी सुशोभित किया गया है।

पता - मातृ आशीर्वाद ज्योतिष संस्थान
जयनारायण व्यास कॉलोनी,
न्यू चांदपोल रोड़, जोधपुर (राज.)
संपर्क- 99283 91270

देवी अहल्या परम पवित्र पंचकन्या

अहल्या अथवा अहिल्या हिन्दू शास्त्रों में वर्णित एक स्त्री पात्र है, जो गौतम ऋषि की पत्नी थी। ब्राह्मणों और पुराणों में इनकी कथा कई जगह प्राप्त होती है और रामायण और बाद की रामकथाओं में विस्तार से इनकी कथा वर्णित है। कथाओं के अनुसार यह गौतम ऋषि की पत्नी और ब्रह्माजी की मानसपुत्री थी। ब्रह्मा ने अहल्या को सबसे सुंदर स्त्री बनाया। सभी देवता उनसे विवाह करना चाहते थे। ब्रह्मा ने एक शर्त रखी जो सबसे पहले त्रिलोक का भ्रमण कर आएगा वही अहल्या का वरण करेगा। इंद्र अपनी सभी चमत्कारिक शक्ति द्वारा सबसे पहले त्रिलोक का भ्रमण कर आये। लेकिन तभी नारद ने ब्रह्माजी को बताया कि ऋषि गौतम ने इंद्र से पहले किया है। नारदजी ने ब्रह्माजी को बताया कि अपने दैनिक पूजा क्रम में ऋषि गौतम ने गाय माता का परिक्रमा करते समय बछड़े को जन्म दिया। वेदानुसार इस अवस्था में गाय की परिक्रमा करना त्रिलोक परिक्रमा के समान है। इस तरह माता अहल्या की शादी अत्रि ऋषि के पुत्र ऋषि गौतम से हुआ।

इंद्र की गलती की वजह ऋषि गौतम ने माता अहिल्या शाप देकर पत्थर बना दिया। कालांतर में प्रभु श्रीराम के चरणस्पर्श द्वारा वे पुनः स्त्री बनी। हिन्दू परम्परा में इन्हें, सृष्टि की पवित्रतम पाँच कन्याओं, पंचकन्याओं में से एक गिना जाता है और इन्हें प्रातः स्मरणीय माना जाता है। मान्यता अनुसार प्रातःकाल इन पंचकन्याओं का नाम स्मरण सभी पापों का विनाश करता है।

अहल्या शब्द दो भागों में विभाजित किया जा सकता है – अ (एक निषेधावाचक उपसर्ग, नत्र तत्पुरुष) और हल्याए।[1] जिसका संस्कृत अर्थ हल, हल जोतने अथवा विरुपता से सम्बन्धित है।[2] रामायण के उत्तर काण्ड में ब्रह्मा द्वारा इसका अर्थ बिना किसी असुन्दरता के बताया गया

है।[3] जहाँ ब्रह्मा इन्द्र को यह बता रहे हैं कि किस प्रकार सृष्टि की सुन्दरता रचनाओं से तत्व लेकर उन्होंने अहल्या के अंगों में उनका समावेश करके अहल्या की रचना की।[4] ज्ञानमंडल, वाराणसी प्रकाशित आधुनिक कोश इसी अर्थ को लेकर लिखता है: ''अहल्या- हल का अर्थ है कुरुप, अतः कुरुपता न होने के कारण ब्रह्मा ने इन्हें अहल्या नाम दिया।''[5]

चूँकि, कतिपय संस्कृत शब्दकोश अहल्या का अर्थ ऐसी भूमि जिसे जोता न गया हो लिखते है,[6] बाद के लेखक इसे पुरुष समागम[7] से जोड़कर देखते हुये, अहल्या को कुमारी अथवा अक्षता के रूप में निरूपित करते हैं।[8] यह उस परम्परा के अनुकूल पड़ता है जिसमें यह माना गया है कि अहल्या एकानेक प्रकार से इन्द्र की लिप्सा से मुक्त और उनकी पहुँच से बाहर रही।[9] हालाँकि, रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941), ''अहल्या'' का अभिधात्मक अर्थ ''जिसे जोता न जा सके'' मानते हुए उसे प्रस्तरवत् निरूपति करते हैं जिसे राम के चरणस्पर्श ने ऊर्वर बना दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर भारती झावेरी भील जनजाति की मौखिक परम्परा में मौजूद रामायण के अनुसार रवीन्द्रनाथ के मत का समर्थन करती हैं और इसका अर्थ ''जिसे जोता न गया हो ऐसी जमीन'' के रूप में बताती है।

अहिल्या की कथा -

राम और लक्ष्मण ऋषि विश्वामित्र के साथ मिथिलापुरी के वन उपवन आदि देखने के लिये निकले तो उन्होंने एक उपवन में एक निर्जन स्थान देखा। राम बोले, 'भगवन् ! यह स्थान देखने में तो आश्रम जैसा दिखाई देता है किन्तु क्या कारण है कि यहाँ कोई ऋषि या मुनि दिखाई नहीं देते ?

विश्वामित्र जी ने बताया- यह स्थान कभी महर्षि गौतम का आश्रम था। वे अपनी पत्नी के साथ यहाँ रह कर तपस्या करते थे। एक दिन जब गौतम ऋषि आश्रम के बाहर गये हुये थे तो उनकी अनुपस्थिति में इन्द्र ने गौतम ऋषि के वेश में आकर अहिल्या से प्रणय याचना की। यद्यपि अहिल्या ने इन्द्र को नहीं पहचाना, ऋषि गौतम को जानकर

अहिल्या ने प्रणय हेतु अपनी स्वीकृति दी। जब इन्द्र अपने लोक लौट रहे थे तभी अपने आश्रम को वापस आते हुये गौतम ऋषि की दृष्टि इन्द्र पर पड़ी जो उन्हीं का वेश धारण किये हुये था। वे सब कुछ समझ गये और उन्होंने इन्द्र को शाप दे दिया। इसके बाद उन्होंने अपनी पत्नी को शाप दिया कि रे दुराचारिणी! तू हजारों वर्षों तक केवल हवा पीकर कष्ट उठाती हुई यहाँ राख में पड़ी रहे। जब राम इस वन में प्रवेश करेंगे तभी उनकी कृपा से तेरा उद्धार होगा। तभी तू अपना पूर्व शरीर धारण करके मेरे पास आ सकेगी। यह कहकर गौतम ऋषि इस आश्रम को छोड़कर हिमालय पर जाकर तपस्या करने लगे।[10]

उद्धार–

इसलिये विश्वामित्र जी ने कहा ''हे राम ! अब तुम आश्रम के अन्दर जाकर अहिल्या का उद्धार करो!'' विश्वामित्र जी की बात सुनकर वे दोनों भाई आश्रम के भीतर प्रविष्ट हुये। वहाँ तपस्या में निरत अहिल्या कहीं दिखाई नहीं दे रही थी, केवल उसका तेज सम्पूर्ण वातावरण में व्याप्त हो रहा था। जब अहिल्या की दृष्टि राम पर पड़ी तो उनके पवित्र दर्शन पाकर एक बार फिर सुन्दर नारी के रूप में दिखाई देने लगी। नारी रूप में अहिल्या को सम्मुख पाकर राम ओर लक्ष्मण ने श्रद्धापूर्वक उनके चरण स्पर्श किये। उससे उचित आदर सत्कार ग्रहण कर वे मुनिराज के साथ पुनः मिथिला पुरी को लौट आये।[11]

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशिन्याः।।[12]

अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा और मंदोदरी इनका प्रतिदिन स्मरण करना चाहिए, महापापों का नाश करने वाली हैं। हिन्दू, पत्नियाँ, पंचकन्याओं[13] का स्मरण प्रातःकालीन प्रार्थना में करती है, इन्हें पाँच कुमारियाँ माना जाता है।[14] एक मत के अनुसार ये पाँचों ''उदाहरणीय पवित्र नारियाँ''[15] अथवा हमारी नृत्य परंपरा अनुसार महासतियाँ है,[16] और कतिपय शक्तियों की स्वामिनी भी हैं इस मत के अनुसार अहल्या इन पाँचों में सबसे प्रमुख है जिन्हें छलपूर्वक भ्रष्ट किया गया जबकि उनके अपने पति के प्रति पूर्ण निष्ठा थी। अहल्या को पाँचों में प्रमुख इसलिए

भी माना जाता है क्योंकि यह पात्र कालनुक्रम में भी सबसे पहले हैं। देवी भागवत पुराण में अहल्या को एक प्रकार से उन अद्वितीय कोटि की देवियों में स्थान दिया गया है, जिन देवियों को शुभ, यशस्विनी ओर प्रशंसनीय माना गया हैं ; इनमें तारा और मंदोदारी के अलावा पंचसतियों में से अरुन्धती और दमयन्ती इत्यादि भी शामिल की गयी।[17]

एक गलत मत भी है इनके बारे में जो की सरासर भ्रम है सनातन परम्परा के बारे में कि पंचकन्याओं को कोई आदर्श नारी के रूप में नहीं देखता और इन्हें अनुकरणीय भी नहीं मानता।[18] भट्टाचार्य, जो पंच कन्या: दि फाइव वर्जिन्स ऑफ इण्डियन एपिक्स के लेखक हैं, पंचकन्याओं और पंचसतियों, सती सीता, सावित्री, दमयन्ती और अरून्धती, के मध्य तुलनात्मक विचार प्रकट करते हुये पूछते है, ''तो क्या तब अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी सच्चरित्र पत्नियाँ नहीं है क्योंकि इनमें से प्रत्येक ने अपने पति के अलावा एक (या एकाधिक) पर पुरुष को जाना (संसर्ग किया)?[19] उपरोक्त मत कुछ कम्यूनिस्ट लेखकों द्वारा दिया गया है।

चूँकि, वे ऐसे कामव्यापार का प्रदर्शन करती है जो पराम्परागत आदर्शो के विपरीत है, भारतीय समाज सुधारक कमलादेवी चट्टोपाध्याय इस बात पर विस्मय व्यक्त करती हैं कि अहल्या और तारा को पंचकन्याओं में शामिल किया गया है। हालाँकि अहल्या के इस अत्यंतगमन ने उन्हें पाप का भागी बनाया और उन्हें वह उच्च स्थान नहीं प्राप्त जो सीता और सावित्री जैसी स्त्रियों को मिला, उनके इस कार्य ने उन्हें कथाओं में अमर कर दिया।

वह स्थान जहाँ अहल्या ने अपने शाप की अवधि पूर्ण की और जहाँ शापमुक्त हुई, ग्रन्थों में अहल्या-तीर्थ के नाम से उल्लेखित और पवित्र स्थान के रूप में प्रतिष्ठित है। तीर्थ स्थल वह जगह या जल भंडार होता है जहाँ आमतौर पर हिन्दू तीर्थयात्री स्नान करके अपने पापों से मुक्त होने की मान्यता रखते हैं। अहल्या-तीर्थ की वास्तविक अवस्थिति के बारे में विवाद है: कुछ ग्रन्थों के मुताबिक यह गोदावरी नदी के तट पर स्थित है जबकि कुछ ग्रन्थ इसे नर्मदा के तट पर स्थित मानते हैं। दो ऐसे प्रमुख स्थान[20] हैं जिनके अहल्या तीर्थ होने का दावा

सबसे मजबूती से प्रस्तुत किया जाता है। पहला, मध्य प्रदेश के बालोद के पास नर्मदा के किनारे मौजूद अहल्येश्वर मंदिर: दूसरा बिहार के दरभंगा जिले में स्थित मंदिर।[21] अहिल्या अस्थान नामक मंदिर और अहल्या-ग्राम भी इसी जिले में स्थित हैं जो अहल्या को समर्पित है।[22] मत्स्य पुराण और कूर्म पुराण में, कामदेव के सामान रूपवान बनने और नारियों को आकर्षित करने की कामना रखने वाले पुरुषों को अहल्या तीर्थ में जाकर अहल्या की उपासना करने का मार्ग सुझाया गया है। यह उपासना कामदेव की चैत्र माह में करने को कहा गया है और ग्रंथों के अनुसार इस तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति अप्सराओं का सुख भोगता है।[23]

यह निम्नलिखित मत भी प्रचलित है जो कि सनातन धर्म पर कुठराघात है, भट्टाचार्य के अनुसार, अहल्या नारी के उस शाश्वत रूप का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने अन्दर की अभीप्सा को भी अनसुना नहीं कर पाती और न ही पवित्रता की उच्च भावनाओं को ही जो उसकी शारीरिक कामनाओं की पूर्ति न कर पाने वाले उसके साधु पति में निहित हैं और उसकी निजी इच्छाओं के साथ विरोधाभास रखती हैं। लेखक अहल्या को एक स्वतन्त्र नारी के रूप में देखता है जो अपना खुद का निर्णय लेती है, उत्सुकता के वशीभूत होकर जोखिम उठाती है, और अंत में अपने कृत्य का दंड भी उस शाप के रूप में स्वीकार करती है जो पुरुष प्रधान समाज के प्रतिनिधि उसके पति द्वारा लगाया जाता है।[24] शाप की अविचलित होकर स्वीकृत ही वह कार्य है जो रामायण को इस पात्र की प्रशंसा करने को विवश कर देता है ओर उसे प्रशंसनीय एवम् अनुकरणीय चरित्र के रूप में स्थापित कर देता हैं।[25]

- प्रो. जितेन्द्र व्यास

सन्दर्भ-

1. अष्टाध्यायी- मूल, पाणिनी
2. अष्टाध्यायी- मूल, पाणिनी
3. अष्टाध्यायी- मूल, पाणिनी
4. Gita Press 1998, pg. 681.2 (Verses 7.30 22-23)

5. हिन्दी साहित्य कोश, भाग–2, प्रकाशक–ज्ञानमंडल लिमिटेड, वारावणी–1, द्वितीय संस्करण 1986, पृष्ठ–30
6. अष्टाध्यायी–मूल, पाणिनी अ आ इ ई Bhattacharya March-April 2004, pg. 4-7
7. Doniger 1999, pg. 89, 129
8. Feller 2004, pg. 146
9. Datta 2001, pg.- 56.
10. Jhaveri 2001, pg. 149-52.
11. Sukla, Dinakara Josi : anuvadaka, Trivent Prasada Sukla, Prajna (2011), Ramayana ka patra (रामायण के पात्र) (Samskarana संस्करण), Nai Dilli : Grantha Akadami. pg. 100-102.
12. Sukla, Dinakara Josi : anuvadaka, Trivent Prasada Sukla, Prajna (2011), Ramayana ka patra (रामायण के पात्र) (Samskarana 1, संस्करण), Nai Dilli : Grantha Akadami. pg. 101. आई.एस.बी.ऍन. 9789381063064, अभिगमन तिथि 9 मई 2017
13. Chattopadhyaya 1982, pg. 13-4
14. Devika 29 October 2006, pg. 52
15. Mukherjee 1999, pg. 36
16. Dallapiccola 2002
17. Ritha Devi Sprint-Summer 1977, pg. 25-9
18. हिन्दी साहित्य कोश, भाग–2, प्रकाशक–ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी–1, द्वितीय संस्करण 1986, पृ. 30
19. Mukherjee 1999, pg. 48-9
20. Bhattacharya 2000, pg. 13
21. Kappor 220, pg. 16
22. Ganguli Vana Parva 1883-1896, chap. LXXXIV.
23. Office Site of Darbhanga District 2006.
24. Benton 2006, pg. 79-
25. Bhattacharya November-Dember 2004, pg. 31

पं. कृष्णानन्द उपाध्याय 'किशन महाराज'

निम्बार्क भूषण, दैवज्ञ याज्ञिक, साहित्य विशारद, कर्मकाण्ड भूषण, ज्योतिष केसरी, ज्योतिष सरस्वती, व्याख्यान केसरी, ज्ञान सागर सम्मानोपाधी से सम्मानित। लेखक धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी, श्री सन्तोषी माता उपासना, राजराजेश्वरी व्रतोत्सव पर्व निर्णय, वैष्णव मताब्ज भास्कर। अनेक शोधपत्रों का प्रकाशन व विशेष व्याख्यान।

सम्प्रति

किशनगंज बिहार, संपर्क- 94314 11518

जयपुर, राजस्थान, संपर्क - 94616 82570

छापर, जिला चुरू, राजस्थान - 9461332952

श्रीराम द्वारा अहल्या की वन्दना अहल्या महापातक नाशिति

महापुण्य महापातक के ये दो वाक्य भारतीयों के मानस पटल पर अमिट है, समस्त आस्तिक वृन्द महापुर्ण्याजन हेतु व्रत, जप, दान, संकीर्त्तन हवनादि सत्कर्मानुष्ठानरत रहते हैं तथा इनसे भी अधिक सतर्क सावधान रहते हैं कि कोई ''पाप'' पातक नहीं बन जायें, पातकोपपातकादि कृत्यों से ''नरकाहनरकम्'' की श्रृंखला बनी रहती हैं एतावता नरकादि दु:खद लोकों में नहीं जाना पड़े एतदर्थ सावधानी से कृत्य सम्पादन करते हैं, पुण्यार्जन महाफल की सिद्धि हेतु श्रुति स्मृति पुराण तन्नागम द्वारा निर्दिष्ट सत्पथानुगमन द्वारा स्वर्गादि लोकों का साधन शास्त्रैकगम्य है।

पातक पुज्जों से सर्वथा मुक्तार्थ प्रायश्चित् रुप अनेकों धार्मिक अनुष्ठानों का अनुमोदन श्रुति स्मृति द्वारा प्रतिपादित है, पुण्य श्लोक प्रात: स्मरणीय महापुरुष महाशक्तियों का नामनु कीर्तन भी उसी का अंग हैं

''नाम संकीर्तनं कलौयुगे''

अथवा 'कलियुग केवल नाम आधारा' के आप्त वचनानुसार भगवन्नाम, आचार्यवतार आत्मवार एवं सती साध्वी तपस्वी तप: पूता: अहल्यादि देवियों का नाम स्मरण भी महापातक नाशक कहा गया है यथा–

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पंचक नाम स्मरे नित्यं महापातकनाशनम्।।

पांचों महापातक शमनी देवीयों में अहल्या अग्रगणी है, जैसे सप्तमोक्षदायिनी पुरियों में अयोध्या :-

अयोध्या मथुरा माया काशी कान्ची अवंतिका।
पुरी द्वारा वती ज्ञेया सप्तैता मोक्ष दायिका।।

इसी क्रम में ''महापातक नाशिनी पंच कन्या'' में भी इन्हीं देवियों को ''अहल्या द्रोपदी सीता.....।'' का नाम परिगणन किया गया है। अहल्या देवी के साथ इन्द्र का, द्रोपदी के पांच पति, सीता का हरण, तारा का पुनर्भु-मंदोदरी आदि के साथ कुछ अपवाद लोक विश्रुत है लेकिन इनके पुण्य की ''पराकाष्ठा'' पुण्य की चरमोत्कर्ष स्थिति इतनी प्रबल व उन्नत शिखर पर स्वीकार्य है कि इनका नाम प्रातः कालीन ''मंगलानुशासनम्'' मंगल स्मरण में गाया जाता है क्यों?

यज्ञादि द्वारा उत्पन्न द्रोपदी आदि अहल्या व भूमिजा सीता माता में ''मानवी'' योनिज दोष देखना 'पुदोष' हमारी अल्पज्ञता है, अशास्त्रीयता व धर्माधर्म की अन्तस्तलीय गांभीर्यता का अभाव ही इसका हेतु है।

सनातन धर्म का मर्म समझने के लिए आधुनिक युग की पढ़ाई पर्याप्त नहीं है पुरातन पुण्य महापुरुष संसर्ग और भगवत्कृपा के बिना रस रहस्यमयी ''महारास लीला'' आदि के तात्त्विक विषय का समझ में आना संभव नहीं है।

श्रीकृष्ण का चीरहरण, माखन चोरी तथा ''महारास'' तथा ''अहल्या, द्रोपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी, का कन्यातत्व समझना उतना ही दुष्कर है कि जितना श्रीकृष्ण का गोपा होना- गोपाङ्नाओं के चीर-हरण'' में श्रीकृष्ण को अश्लील था तथा कन्याओं को दुषित करना महापाप है, वैसे ही सती अहल्या में भी ''इन्द्रक्त जारत्व'' आरोप करना महापाप व जघन्य अपराध है।

पुराणों की कथाओं का पौर्वापर्य समझकर मंगलाचरण से उपसंहार तक सम्यक अध्ययन अध्यापन से ही तत्वार्थ निकल पाता है, केवल मात्र सिंहावलोकन कर लेने से पुराण पुरुषोत्तम का तत्वबोध अशक्य है, महाभारत में दुर्योधन व युधिष्ठर दोनों का चरित्र लिखा गया है दुर्योधन आचरण भयावह है-युधिष्ठर रामादिवत् आचरण अनुकरणीय है। इसी न्याय से इन्द्रादि देवताओं का इन्द्रिय लौलुपता पद लिप्तता के प्रदर्शन एवं उनके भी पतन का मार्ग दिखाया गया है न की 'अहल्या' ही 'जारत्व' में सहभागिता।।

परवशात् माया सीता का हरणादि हमारे यहां स्तुत्य है वैसे ही

इन्द्र व चन्द्र की कुटिलता से ''अहल्या विषयक'' अपवाद सुनाई देता है लेकिन यथार्थ का बोध-नहीं होने पर अल्पज्ञों द्वारा ''महापातक नाशिनि'' पंच देवीयों में अग्रगण्या अहल्या देवी का विषय प्रस्तुत किया जाता है। पुनश्चः

''श्री रामावतार'' की कथा प्रसंग में-

श्रीराम द्वारा अहल्या उद्धारक्त प्रंसग भी गोस्वामी जी द्वारा श्रीराम की भगवता के प्रतिपादन में ही है श्रीराम का उत्कर्ष एवं औदार्य है। लेकिन-

गुरु विश्वामित्र जी द्वारा बताये जाने पर श्रीराम ने ''अहल्या'' देवी को प्रणाम किया है ऐसा आर्ष रामायणों में आलेख प्राप्त हैः- मर्यादा पुरुषोत्तम के लिए विख्यात श्रीराम कैसे ब्राह्मणी युवती को पाद स्पर्श कर सकते हैं। ''धर्मारक्षार्थ'' रामोविग्रहवान् धर्मः'' के द्वारा स्तुत्य श्री रामद्वारा ''शीला'', शीलयुक्त-शीलवती अपना तपस्या करते करते शीलत्व में परिवर्तित ''पत्थर सी'' मूर्ति मती जो हो गई उसको चरण स्पर्श करना भी असंगत किंवा विचारणीय प्रतीत होता है-

किंवदन्तियों के आश्रम पर-सूनआरम या आश्रम में श्रीराम का पर्दापण होना सामाजिक समरसता व सहृदयता बोधक हो सकता है, लेकिन पत्थर की मूर्ति बनी, अहल्या का उद्धार राम के चरण स्पर्श से हुआ यह प्रत्युक्त, स्मृत्युक्त व शिष्टानुमोदित नहीं प्रतीत होता है, वैसे भी तुलसीदास जी की मानस के श्रीराम की कथा गोस्वामी के आराध्य देव की स्तुति का काव्य है, लेकिन आदि कवि बाल्मिक एवं व्यासादि महर्षि प्रणीत अन्यायऽपि रामायण या इन्द्रका जारत्व वर्णन नहीं है, अपितु ''श्रीराम द्वारा ''देवी अहल्या का वन्दन प्रसंग प्राप्त होता है-

आवश्यकता है सन्दर्भ ग्रन्थों के अनुशीलन पठन पाठन एवं मनन चिन्तक की, जिससे आज तय बर्हिमुख किंवा उदासीन होते जाते हैं। अशास्त्री अब्राह्मण, स्त्री शुद्रादि द्वारा ''व्यासपीठारुढ'' होकर कथा प्रवचन किया जाता है, बड़े-बड़े कुलीन लोगों के यहा विप्रेतर अथवा अब्राह्मण वक्ता व्यासपीठासीन'' होकर कथा करते हैं- ''वैष्णवों के मुख से कथा श्रवण'' की महिमा बता कर वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था मूलक सदाचार व शिष्टाचार पर ''वैष्णवहीनता'' अवैज्श्रय का वज्रवुधवार्थ

प्रलाप द्वारा कहा जाता है, ब्राह्मण ही वैष्णव है, जन्मना ब्राह्मणों नितरां गुरुत्व को प्राप्त व वैष्णवता का सूचक है किराये की, भाडे की या खरीदी हुई वैष्णवता का मण्डन करके ''श्रुतिपथरत, सत्पथपथियों में एक विशेष हलचल पैदा करके अभियान चला रखा है, अतः माननीय मापदण्डों की रक्षा संरक्षण सुरक्षा के लिए ''अहल्या'' की महापातक नाश्न महिमा'' का मण्डन एवं चित्रण होना आवश्यक है।

कथा वक्ता एवं प्रवचन कर्त्ता की कुलीनता, कुल मर्यादा और दृटत्य है केवल टी.वी. चैनलों पर देखकर गुरु वरण या व्यास वरण भयावह एवं नरक का हेतु है अनधिकारियों द्वारा किया गया धर्मकर्म भी धर्म विरुद्ध सिद्ध होता हैं।

''स्त्रीसन्यास'' एवं स्त्री द्वारा यज्ञादिकृत्यों पर शास्त्रार्थपूर्वक आर्ष साहित्यानुसन्धान पूर्वक की गई मीमांसा-विमर्श आज प्रासंगिक है क्या इन्हें शास्त्राज्ञा है? लेकिन हम लोग ऐसे प्रबन्ध, निधि ग्रन्थ जो विधि निषेध के नियामक एवं लोक परलोक के हित चिन्तक है ऐसे महापुरुषों का अनुगमन हमें अभिष्ट नहीं है तथा सत्य धर्म का दिग्दर्शन कराने वाले सत् शास्त्रों को पठन पाठन भी आज समाज से दूर हो रहा है उसी का परिणाम है कि ब्राह्मणों के सिर पर ब्राह्मणेनरों का ताण्डव उन्नयन की पराकाष्ठा पर आरुढ़ हो रहे हैं, ''अहल्या जैसी महापातक नाशक देवी का महान् प्रभाव लोहा विस्मृत कर रहे हैं, 'मदर टेरेसा' का स्मारक बन रहा हैं, लेकिन ''अहल्या'' भवन या मन्दिर का नाम सुदूर तक नहीं दिखाई देता क्योंकि हम हमारी पूर्व परम्परा की प्राचीन आदिल्क स्तुति प्रातः स्मरण एवं सप्तर्मिगरभों के प्रमुख कश्यपोऽत्रि भारद्वाज विश्वामित्र च गौशमः के प्रभाव व साहित्यानुसन्धान से दूर हैं-

न्यायशास्त्र-धर्म सूत्र, गौतमीय शिक्षा, गौतमीय तन्त्रदि का पठन-पाठन गौतमाश्रमों व गौतम जयन्ती पर होने से हमारी नई पीढ़ी गौतम व अहल्या सम्बन्धी महत्व को जान सकेंगे।

सामाजिक समरसता सामंजस्यता सौमन्स्यता का अभाव ही हमारे पतन एवम् पिछड़ने का कारण है, हम हमारे स्वर्णिम अतीत को भूल गये है- धनार्जन ही मुख्य रह गया है 'ज्ञानार्जन' की प्रवृति विदाई ले रही हैं।

'साहित्य सर्जन' साहित्यानुसन्धान की शून्यता तो भयंकर है, गौतम महर्षि प्रणीत ग्रन्थों का हमारे समाज में अभाव ही है। प्रतियोगिता के माध्यम से जागरण भी शून्य है। ''अहल्या'' विषयक ''उपाख्यान श्रीराम द्वारा की स्तुति या वन्दन जैसे आलेख व प्रसंगों की व्याख्याऐं ''कथा मंचों'' से करवाने का भी प्रयास हमारा शून्य है, हमारे वक्ता तो स्वयम् ब्राह्मण विरोधी ही सिद्ध होते हैं तो वे महर्षि व महर्षि प्रदत्त व्यवस्था तथा अहल्या के विशद गुणानुवाद में प्रवत क्यों होगे। इसलिए समाज में क्रान्ति लानी है तो क्रान्तिकारी न्यासों का अभ्युदय वृद्धि तथा उन्हें पौषण करक ही हम हमारे...

– पं. कृष्णानन्दोपध्याय

श्रवण कुमार उपाध्याय

एम.ए. दर्शनशास्त्र, हिन्दी, समाज शास्त्र, लोकप्रशासन, इतिहास, एलएलबी, बी. एड.।

दशाधिक संस्मारिका व पुस्तकों का सम्पादन, अनेक शोध पत्रों का प्रकाशन।

'स्व नियोजन पुरस्कार - 2005' राजस्थान सरकार । 'प्रेरणा स्रोत पुरस्कार-2018' राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित।

पता - प्लॉट नं. 427
प्रथम सी रोड़, सरदारपुरा
जोधपुर (राज.)
संपर्क- 72208 24564

मातेश्वरी अहल्या

अहल्या द्रौपदी कुन्ती तारा मन्दोदरी तथा।
पंचकन्या स्वरः नित्यम् महापातका नाशका।।

इन पाँच अक्षतकुमारियों अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मन्दोदरी के लिये कहा जाता है, कि इनका स्मरण भी महापापों के समाप्त करने में सक्षम है। एक ऐसा ही श्लोक हमें धर्मग्रन्थों में मिलता है जिसमें सती, सीता, सावित्री, दमयन्ती, अरून्धती। इन पाँचों को पवित्र सतियों कहा जाता है। पर इन पाँचों को अहल्या, द्रोपदी, कुन्ती, तारा और मन्दोदरी के साथ सती शब्द का प्रयोग न कर कन्या शब्द का प्रयोग किया है। पंचकन्याओं के इस समूह में तीन अहल्या, तारा, मन्दोदरी, वाल्मिकी, रामायण से संबंधित है तथा द्रौपदी और कुन्ती का वर्णन हमें महाभारत, हरिवंश पुराण, मार्कण्डेय पुराण, देवी भागवत पुराण में मिलता है। हम सतह से हटकर इन्हें चेतनात्मक तरीके से जानना चाहते है तो हम इनकी पवित्र भावना तक पहुँच सकते हैं।

अहल्या शब्द का अर्थ है दोष रहित, दूसरा अर्थ जिस भूमि पर हल न चला हो अर्थात् कुमारी, 'हल' कहते हैं-पाप को तथा हल 'हा' भाव 'हल्य' जिसमें पाप न हो उसे 'अहल्या' कहा जाता है। जिसकी उत्पत्ति बिना मैथुनी सृष्टि से होती है उसे 'अहल्या' कहा जाता है।

अहल्या की उत्पत्ति को लेकर उपनिषद् में यह कथा मिलती है। एक बार ब्रह्माजी ने अपने तपोबल से अत्यन्त सुन्दर और श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त एक अद्वैत कन्या उत्पन्न की। उसकी देह से दिव्य तेज निकल रहा था, होठों पर सुन्दर मुस्कान खेल रही थी उसे देखकर ब्रह्माजी का हृदय प्रसन्नता से भर उठा। उन्होंने कन्या को हृदय से लगा लिया परन्तु उनके समक्ष कन्या के पालन-पोषण की समस्या का प्रश्न खड़ा हो गया। ब्रह्माजी सृष्टि रचना के कार्य में व्यस्त होने के कारण उस कन्या का

लालन-पालन करने में असमर्थ थे तभी देवर्षि नारद आ पहुँचे। ब्रह्माजी के पास एक सुन्दर बालिका को देखकर नारद अत्यंत विस्मित हुए। वे बोले 'हे पिताश्री ! यह बालिका कौन है और यहाँ क्या कर रही हैं? इसके मुख की भाव भंगिमा और विशिष्ट चिन्ह इसके परम तपस्विनी और सौभाग्यवती होने की भविष्यवाणी कर रहे हैं। इसे देखकर मन में असीम आनन्द और प्रसन्नता हिलोरे ले रही है। कृपया आप मेरी जिज्ञासा शांत करें।'

ब्रह्माजी बोले 'वत्स यह कन्या मेरी मानस पुत्री है। इसका जन्म मेरे तपोबल से हुआ है। परन्तु वत्स इसके पालन-पोषण में मैं असमर्थ हूँ। मुझे सृष्टि में कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई नहीं देता है जो इसका पालन-पोषण कर सके। वत्स, यदि तुम इसका पालन-पोषण का भार अपने कंधों पर ले लो मैं निश्चित हो जाऊँगा।'

नारद जी बोले 'पिताश्री! मैं स्वयं स्थान-स्थान पर विचरण करता रहता हूँ, इसका पालन-पोषण कैसे करूँगा? मेरे जैसे वैरागी और चलायमान तपस्वी के साथ इसका रहना असम्भव है। पिताश्री यदि महर्षि गौतम इसके पालन-पोषण का भार संभाल ले तो आपकी चिन्ता का निराकरण हो जायेगा। महर्षि गौतम के समान श्रेष्ठ तपस्वी, विद्वान, जितेन्द्रिय तथा वेदज्ञ इस संसार में कोई नहीं है। आप द्वारा सौंपे गये कार्य को वे भलीभाँति पूर्ण कर देंगे।

ब्रह्माजी को नारद का परामर्श उचित लगा। वे उसी समय महर्षि गौतम के आश्रम में पहुँचे ओर बोले 'हे गौतम मैं अपनी मानस पुत्री के पालन-पोषण की जिम्मेदारी आपको सौंप रहा हूँ, जब ये कन्या युवा हो जाय तो आप यह मुझे सौंप देना।' यह कहकर ब्रह्माजी ने कन्या की जिम्मेदारी महर्षि गौतम को सौंप दी।

महर्षि गौतम ने कन्या का नाम 'अहल्या' रखा और भलीभाँति उसका पालन-पोषण करने लगे। उन्होंने अहल्या को वैदिक ज्ञान देकर धार्मिक कर्मकाण्डों में भी पारंगत कर दिया। अनेक वर्ष बीत जाने के पश्चात् जब अहल्या युवा हो गई उस समय महर्षि गौतम ने अहल्या को पुनः ब्रह्माजी को सौंप दिया।

अब ब्रह्माजी के समक्ष अहल्या के विवाह की समस्या उत्पन्न हो

गई। महर्षि गौतम द्वारा अहल्या को दिये गए संस्कारों से बहुत प्रसन्न थे। ब्रह्माजी ने अपने मन में विचार कर लिया था कि अहल्या का विवाह महर्षि गौतम के साथ ही करेंगे, परन्तु इससे पूर्व अनेक देवताओं ने अहल्या के रूप-सौन्दर्य से प्रभावित होकर उससे विवाह करने का प्रस्ताव ब्रह्माजी के समक्ष रखा तब ब्रह्माजी ने शर्त रखी कि जो सबसे पहले पृथ्वी की परिक्रमा करके लौट आयेगा, वे अहल्या का विवाह उसके साथ कर देंगे। शर्त को सुनते ही सभी देव गण पृथ्वी की परिक्रमा करने चल पड़े।

महर्षि गौतम वेदों के ज्ञात थे। उन्होंने वेदों में पढ़ा था कि जो गाय आधा प्रसव कर चुकी हो, वह पृथ्वी तुल्य है। यदि उस समय उसकी परिक्रमा कर ली जाय तो इसे पृथ्वी की परिक्रमा मानी जाती है। उस समय गर्भवती कामधेनु आधा प्रसव कर चुकी थी। बछड़ा शरीर से आधा ही बाहर निकला था। महर्षि गौतम कामधेनु की परिक्रमा कर ब्रह्माजी के पास आ गये।

गौतम मुनि की बुद्धिमता से ब्रह्माजी अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने अहल्या का विवाह गौतम के साथ कर दिया। ब्रह्माजी ने ब्रह्मगिरी पर्वत पर रहने का स्थान गौतम और अहल्या को दे दिया।

महर्षि गौतम बाण विद्या में अत्यंत निपुण से जब वे अपनी बाण विद्या का प्रदर्शन करते और बाण चलाते तो देवी अहल्या बाणों को उठाकर लाती थी। एक बार वे देर से लौटी। ज्येष्ठ की धूप में उनके चरण तप हो गये थे। विश्राम के लिए वे वृक्ष की छाया में बैठ गई थी। महर्षि गौतम ने सूर्य पर रोष किया। सूर्य ने ब्राह्मण वेश में महर्षि गौतम को छत्ता और पादत्राण भेंट किये। उष्णता निवारक के यह दोनों उपकरण उसी समय से प्रचलित हुए।

महर्षि गौतम नारी अहल्या को महर्षि गौतम ने पाषाण होने का श्राप दिये जाने की कथा हमें वाल्मीकि रामायण व रामचरित्र मानस में मिलती है। इस प्रसंग का गुढ़ रहस्य इस प्रकार है जो हमें धर्म ग्रंथों में मिलता है। अहल्या के सतीत्व भंग की कथा धर्मविरुद्ध है। कथा वैदिक साहित्य में वर्णित है। ऋग्वेद में कहा गया है कि इन्द्र माया से अनेक रूप बनाकर चलते है।

इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते।

(ऋग्वेद 6/47/18)

शतपथ ब्राह्मण का कथन है कि इन्द्र अहल्या का जार है।

अहल्यायै जारेति।।

(शतपथ ब्राह्मण 3/3/4/18)

कुमारिल भट्ट ने अपने तन्त्रवार्तिक ग्रन्थ में इस कथा का अर्थ सूर्य तथा रात्रिपरक किया है। गौतम की व्युत्पत्ति करते हुए लिखा है-

उत्तमा गावो रश्मयः यस्य सः गौतम।

अर्थात् चन्द्रमा।

अहर्लीयते यस्यां सा अहल्या।

अर्थात् रात्रि।

यः एव तपति स एवं इन्द्र।

अर्थात् सूर्य ही इन्द्र है।

निरुक्तकार यास्क का कथन है कि सूर्य रात्रि को जीर्ण करता है अतः वह जार है।

सुषुम्णः सूर्यरश्मिचन्द्रमा गन्धर्व
इत्यपि निगमो भवति सोऽपि।
गोरुच्यते सर्वेऽपि रश्मयो गाव उच्यन्ते।।

(निरूक्त 2/2/2)

अर्थात् सूर्य की सुषुम्ना नामक रश्मि चन्द्रमा को रूप सम्पन्न बनाती है। यह वैदिक सिद्धान्त है। इसीलिए इस रश्मि को गौ कहते हैं अथवा सभी रश्मियों का नाम गो है।

आदित्योऽत्र जार उच्यते रात्रेर्जरयिता।

(निरूक्त 3/3/4)

अर्थात् सूर्य ही इन्द्र है, रात्रि ही अहल्या है तथा चन्द्रमा ही गौतम है। रात्रि और चन्द्रमा का स्त्री-पुरुष के समान रूपक है। जैसे स्त्री-पुरुष साथ रहते है वैसे ही चन्द्रमा और रात्रि साथ-साथ रहते हैं।

चन्द्रमा अत्यन्त तीव्र गति से चलता है इसलिए भी वह गौतम है। रात्रि का दिन में लय हो जाता है इसलिए वह अहल्या है। सूर्य रात्रि को जीर्ण कर देता है इसलिए वह जार है। अत: यह आक्षेप भी निराधार है।

इस बात को हमें इस प्रकार समझ सकते है। सूर्य का नाम इन्द्र, रात्रि का नाम अहल्या तथा चन्द्रमा गौतम है। यहाँ रात्रि और चन्द्रमा का स्त्री-पुरुष के समान रूपकालंकार है। चन्द्रमा अपनी स्त्री रात्रि के साथ सब प्राणियों को आनन्द करता है और उस रात्रि का जार आदित्य है। अर्थात् जिसके उदय होने पर रात्रि के वर्तमान रूप श्रृंगार को बिगाड़ने वाला है। इसलिए यह स्त्री-पुरुष का रूपकालंकार बाधा है। जिस प्रकार स्त्री ओर पुरुष मिलकर रहते है वैसे ही चन्द्रमा और रात्रि भी साथ-साथ रहते है। चन्द्रमा का नाम गौतम इसलिए है कि वह अत्यन्त वेग से चलता है और रात्रि को अहल्या इसलिए कहते है उसमें दिन लय हो जाता है तथा सूर्य रात्रि को निवृत्त कर देता है। इसलिए यह उसका जार कहलाता है। इस उत्तम रूपकालंकार को अल्पबुद्धि पुरुषों ने बिगाड़ दिया।

एक प्रसंग में अहल्या को मुद्गल की पुत्री कहा गया है। अहल्या की जयन्ती चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को है।

- श्रवण कुमार उपाध्याय

पत्रकार सुनील दत्त सॉखी

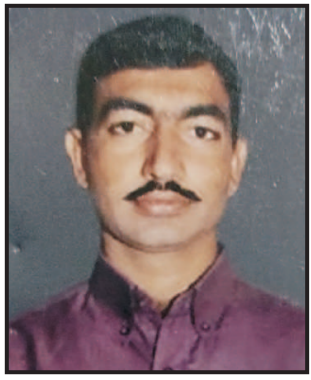

शिक्षा एम.कॉम. पत्रकारिता हिन्दी में इलेक्ट्रोनिक मीडिया में संवाददाता स्टार प्लस, सहारा समय, बी.ए.जी., टाईम्स नाऊ, मिरर, सूर्या समाचार, राज्य सरकार द्वारा अधिस्वीकृत पत्रकार।

वर्तमान में राजस्थान यात्रा का संपादन

पता - 9, गौतम विहार, पावटा
'सी' रोड़, इमरतिया बेरा
जोधपुर (राज.)

संपर्क- 94142 43228

अहल्या प्रसंग

गौतम की पत्नी अहल्या का प्रसंग प्राय: सभी जानते हैं। अहल्या गौतम की पत्नी किस प्रकार बनी, इसकी रोचक ओर गौतम के इन्द्रियनिग्रह प्रभाव का वर्णन करने वाली कथा पुराणों, महाभारत आदि में प्राप्त होती है। उसमें कहा गया है कि -'सर्वप्रथम ब्रह्मा के मन में सभी स्थानों के सौन्दर्य को एकत्र करके एक नारी बनाने की इच्छा हुई। उन्होंने समस्त सौन्दर्य को एकत्र करके एक अभूतपूर्व नारी बनायी। उसके नख से शिख तक सौन्दर्य-ही सौन्दर्य था। उसका नाम उन्होंने रखा 'अहल्या'। 'हल' कहते है- पाप को तथा हल का भाव हल्या और जिसमें पाप न हो वह 'अहल्या' है। यह पृथ्वी पर सर्वप्रथम सर्वांगसुन्दर नारी हुई। इसे पाने की इच्छा सभी ऋषि, देवता आदि करने लगे। इन्द्र ने तो प्रकट रूप से ब्रह्मा से 'अहल्या' की याचना भी की, किन्तु ब्रह्मा ने इंकार कर दिया। तिल-तिल कर सौन्दर्य एकत्रित कर, तिलोत्तमा नामक एक अप्सरा के निर्माण की कथा पुराणों में आती है, जो कि इन्द्र के स्वर्गलोक की सर्वश्रेष्ठ अप्सरा थी। यह संदिग्ध है कि अहल्या और तिलोत्तमा अप्सरा एक ही हैं या अलग-अलग। तिल-तिल सौन्दर्य एकत्र करके अहल्या के रूप का निर्माण करने का उल्लेख वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकाण्ड सर्ग-30 श्लोक-21 से 23 तक में वर्णित है।

अहल्या से गौतम के विवाह का प्रसंग विस्तृत रूप से ब्रह्मपुराण के अहल्या-संगम तीर्थ माहात्म्य प्रसंग में आया है, जो इस प्रकार है- ''पूर्वकाल की बात है कि ब्रह्मा ने अत्यन्त कौतूहलवश कुछ सुन्दर कन्याओं की सृष्टि की। उनमें से एक कन्या सबसे श्रेष्ठ और उत्तम लक्षणों से युक्त थी। उसके सब अंग बड़े मनोहर तथा रूप और गुणों से सम्पन्न थे। उस समय ब्रह्मा के मन में यह विचार हुआ कि कौन पुरुष इस कन्या का पालन-पोषण करने में समर्थ है? बहुत सोचने पर उन्होंने महर्षि गौतम ही समस्त गुणों में श्रेष्ठ, तपस्वी, बुद्धिमान, समस्त

शुभलक्षणों से सुशोभित और वेद-वेदांगों के ज्ञाता प्रतीत हुए। अत: ब्रह्मा ने उन्हीं को वह कन्या दे दी और कहा 'मुनिश्रेष्ठ'! जब तक यह युवती न हो जाय, तब तक तुम्ही इसका पालन-पोषण करो। युवा हो जाने पर पुन: इस साध्वी कन्या को मेरे पास ले आना।' यह कहकर ब्रह्मा ने गौतम को वह कन्या समर्पित कर दी। यह उल्लेख वाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड के सर्ग-30, श्लोक-26 में भी है।

महर्षि गौतम की अभी युवा अवस्था थी, किन्तु तपोबल से निष्पाप हो चुके थे। उन्होंने विधिपूर्वक उस कन्या का पालन-पोषण किया और युवती होने पर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित करके ब्रह्मा के पास ले गये। उस समय उनके मन में कोई विकार न था। अहल्या को देखकर इन्द्र, अग्नि और वरुण, आदि सब देवता बारी-बारी से ब्रह्मा के पास आये और कहने लगे-'सुरेश्वर ! यह कन्या मुझे दे दीजिए।' इन्द्र का तो उसके लिए विशेष आग्रह था। महर्षि गौतम की महत्ता, गम्भीरता और धीरता का विचार करके ब्रह्मा को बहुत विस्मय हुआ। उन्होंने सोचा 'यह सुमुखी कन्या गौतम को ही देने योग्य है, अन्य किसी को नहीं। अत: इसे गौतम को ही दूँगा।' ऐसा निश्चय करके ब्रह्मा ने देवताओं और ऋषियों से कहा - 'यह सुन्दरी कन्या उसी को दी जायेगी, जो सारी पृथ्वी की परिक्रमा करके सबसे पहले यहाँ उपस्थित हो जाय।' वाल्मीकिरामायण के उत्तरकाण्ड, सर्ग-30, श्लोक-26 से 28 तक में वर्णित है कि ब्रह्मा ने गौतम को ही अहल्या प्रदान कर दी।

पत्नी रूप में अहल्या की प्राप्ति

ब्रह्मा की बात सुनकर सभी देवता अहल्या की प्राप्ति के लिए पृथ्वी की परिक्रमा करने चले गये। इसी अवधि में कामधेनु गौ बच्चा प्रसव करने लगी। अभी बच्चे का आधा शरीर ही बाहर निकाला था। उसी अवस्था में गौतम ने उसे देखा और उसी को पृथ्वीभाव से देखते हुए उसकी परक्रिमा की। साथ ही उन्होंने शिवलिंग की प्रदक्षिणा की। इसके बाद सोचा, सम्पूर्ण देवताओं ने पृथ्वी की अभी एक परिक्रमा भी पूरी नहीं की ओर मेरे द्वारा दो परिक्रमाएँ पूरी हो गयीं। ऐसा निश्चय करके वे ब्रह्मा के पास आये और प्रणाम करके बोले- 'ब्रह्मन्! मैंने सम्पूर्ण वसुधा की प्रदक्षिणा कर ली।'

ब्रह्मा ने ध्यान द्वारा सब बातें जानकर गौतम से कहा– 'ब्रह्मर्षि! तुम्हीं को यह सुन्दर कन्या दी जाती है। वास्तव में तुमने पृथ्वी की परिक्रमा पूरी कर ली। जो वेदों के लिए भी दुर्बोध है, उस धर्म का स्वरूप तुम जानते हो। जो गाय आधा प्रसव कर चुकी हो, वह सात द्वीपों वाली पृथ्वी के तुल्य है। शिवलिंग की प्रदक्षिणा का भी यही फल है। गौतम ! मैं तुम्हारे धैर्य, ज्ञान ओर तपस्या से बहुत संतुष्ट हूँ।' यों कहकर ब्रह्मा ने गौतम के हाथों अहल्या को सौंप दिया। गौतम और अहल्या का विवाह हो जाने पर देवता लोग पृथ्वी की परिक्रमा करके धीरे–धीरे आने लगे। आने पर सबने अहल्या के साथ गौतम का विवाह हुआ देखा। इससे उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। अन्त में सब देवता स्वर्ग में चले गये, किन्तु इन्द्र के मन में इससे बहुत ईर्ष्या हुई। ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर गौतम को रहने के लिए ब्रह्मगिरि पर स्थान प्रदान किया। मुनिश्रेष्ठ गौतम अहल्या के साथ वहाँ विहार करने लगे। वा.रा.उत्तरकाण्ड के श्लोक 29–30 में भी इन्द्र के क्रोधित होने का उल्लेख है।

– **सुनील दत्त साँखी (पत्रकार)**

वरिष्ठ पत्रकार राजेन्द्र कुमार श्रौत्रिय

बी.एस.सी. जोधपुर विश्वविद्यालय (वर्तमान में जयनारायण व्यास विश्व विद्यालय) लगभग 25 वर्षों से पत्रकारिता में सक्रिय।

सनसिटी न्यूज़, दृष्टि न्यूज़, मारवाड़ न्यूज़, चैनल 24 न्यूज़ सहित दैनिक समाचार पत्र में सेवायें।

पता – हाथीराम का ओड़ा
दाऊजी मन्दिर के पास,
जोधपुर (राज.)

संपर्क– 94606 83514

अहल्या चित्र व कविता कलाप

राजा रवि वर्मा ने अनेक भारतीय पौराणिक चरित्रों और देवी-देवताओं चित्र बनायें। हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र बनाने के लिए अनेक स्थानों का भ्रमण किया। इसके लिए उन्होंने पुरातन वेशभूषाओं की खोज की। धार्मिक पौराणिक तथा हिन्दू पुराकथाओं का अध्ययन कर अपने चित्रों का विषय बनाया। राजा रवि वर्मा ने पौराणिक घटनाओं और चरित्रों को अपने अंकन के लिए चुना और उन्हें वह रुप दे दिया, जिस रूप में वे आज जाने जाते हैं।

राजा रवि वर्मा के चित्रों की सबसे बड़ी विशेषता स्त्रियों का विविधतापूर्ण चित्रण है। चाहे मलयाली नायिका हो, केरल व गोवा की स्त्रियां हो, वैष्णव कन्या हो, नायक-नायिका हो या मराठी नवयोवना, ये सभी राजा रवि वर्मा की तुलिका से अमर हो गई। एक अंकन उन्होंने ऐसा भी बनाया है जिसमें विभिन्न जातियों की स्त्रियां एक साथ बैठे दिखाई गई हैं। इनमें बंगाली, पारसी, मुस्लिम, गुजराती, मारवाड़ी, मराठी, सिंधी व मलयाली जाति की स्त्रियां शामिल हैं।

राजा रवि वर्मा ने अनेक पौराणिक नारी चरित्रों को चित्रित किया। जैसे शकुन्तला पत्र लेखन, नल-दमयन्ती, सीताराम, राधा-कृष्ण, अर्जुन-सुभद्रा, शुक-रम्भा, गंगा-भीष्म, उर्वशी-पुरुखा, हरिशचन्द्र-तारामती, कीचक-सारिन्ध्री, मदालसा- ऋतुध्वज जैसे युगलों के चित्र बनाएं, वही दुसरी और शकुन्तला, मन्दोदरी, बसंत सेना, रम्भा, तिलोत्तमा, राधा, ऊषा, चित्रलेखा, सुदेष्णा, द्रोपदी, तपदिणी, वारिणी, पद्मिनी, मानिनी, प्रियदर्शिका, मालती, मनोरमा, वासतिका, कुसुमावती, तारा, लालारुख, मेनका, दमयन्ती, अहल्या आदि को। पौराणिक ऐतिहासिक तथा साहित्यिक स्त्री चारित्रों को भी अपने रंगों और रेखाओं में जीवन्त किया।

राजा रवि वर्मा ने अहल्या का चित्र सन् 1895 ई. में बनाया था। वर्तमान में यह चित्र ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है। अहल्या का यह चित्र बड़ा ही मनोहारी है। यह चित्र अपना ही सात्विक-सा सौंदर्य प्रदर्शित करता हैं। इस चित्र को पुस्तक का आमुख पृष्ठ बनाया है।

राजा रवि वर्मा के द्वारा बनाये गये अहल्या के चित्र को आधार बना कर एक कवि ने कविता लिखी जो कि कविता-कलाप नामक सचित्र कविताओं संग्रह में सन् 1909 ई. में प्रकाशित हुई। कविताओं का सम्पादन महावीरप्रसाद द्विवेदी ने किया। 'कविता कलाप' पुस्तक का प्रकाशन इंडियन प्रेस, प्रयाग-इलाहाबाद ने किया। कविता पुस्तक के 15-16 पृष्ठ पर 12 अनुक्रमांक में प्रकाशित की गई है। जिसका शीर्षक 'अहल्या' रखा गया है। कविता में दस पद है, जो बड़े ही मनोहारी है।

अहल्या

काम-कामिनी सी छवि-राशि, उपवन की लहलही लता सी।
गौतम-मुनि की यह नारी है, पति को प्राणों से प्यारी है।।1।।

रहती हैं यह मुनि-संग वन में, प्रेम-गर्व की माती मन में।
पति की प्रबल प्रीति के बल पर, कानन इसे नगर है सुन्दर।।2।।

मुनि की दिव्य देह की छाया, नहीं चाहती यह जग-माया।
पर्ण-कुटी ही इसे महल हैं, राज-भोग सम स्वामि-टहल हैं।।3।।

पति भी निरत भजन-पूजन में, प्रेम-बंधे रहते है वन में।
पत्नी पुष्प बीन, रच धुनी, सहज भक्ति पाती हैं दूनी।।4।।

आज अहल्या बहुत थकी हैं, फूल बीनने में भटकी है।
घबराई-सी श्रम के मारे, शिथिल खड़ी हैं विटप सहारे।।5।।

तो भी दृष्टि भाव आतुर है, अधरों पर मुसक्यान मधुर हैं।
कंचन सा उज्जवल मुख-मण्डल, करता है सहसा चित चंचल।।6।।

काले केश घने सटकारे, लहराते हैं कुण्डल मारे।
गोरी गोल गढ़ी मृदु बाँहे, शोभा की मानों सीमा हैं।।7।।

फूलदान अटका अंगुली से, आकर्षित मानो बिजली से।
उठा से रहे फूल हैं ऊपर, पंकज तुल्य चूमने को कर।।8।।

कटि हैं कसी कदाचित उर में, खो न जाय यह कहीं डगर में।
पाओं की सुकुमार अँगुलियाँ, शोभित मानो चंपक कलियाँ ।।9।।

यद्पि अहल्या यहाँ खड़ी है, मनसा मुनि के पास अड़ी हैं।
इस दुचिताई की छवि बाँकी, जाती नहीं सहज ही आँकी।।10।।

- राजेन्द्र कुमार श्रोत्रिय
वरिष्ठ पत्रकार

डॉ. डोली जैन

एसोसिएट प्रोफेसर – संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

पता – 14ए, राधा मुकुट विहार
चीलगाड़ी रेस्टोरेंट के पास,
पटेल मार्ग के पीछे,
मानसरोवर, जयपुर (राज.)

संपर्क– 9314082973

वाल्मीकि रामायण में अहिल्या प्रसंगः एक दृष्टि

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'', ''न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते'', ''यो भर्ता सा स्मृताना'' इत्यादि सुभाषित वाक्य भारतीय जीवन में नारी के महत्त्व को सूचित करते हैं। संस्कृत वाङ्मय में नारी के विभिन्न स्वरूपों तथा पतिव्रता, सहिष्णुता, कर्त्तव्यपरायणता इत्यादि गुणों के साथ नारी-सौन्दर्य का तार्किक एवं विशद चित्रण किया गया है। वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उस समय स्त्री को अधिकाधिक अधिकार प्राप्त थे। गार्गी, मैत्रेयी, अनसूया जैसी विदुषियाँ गुरुकुल पद्धति का पूर्ण अनुसरण करती हुई शास्त्र पारंगत थीं अर्थात् उस समय नारी को शिक्षा का सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त था। उपनिषद् में नारी को परब्रह्म परमेश्वर की अभिन्न शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है तथा नारी को नर की अर्द्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया गया है। दर्शनशास्त्र के अनुसार नारी प्रकृतिरूपिणी है।

वाल्मीकि रामायण में सीता का उदात्त चरित्र भारतीय समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार संस्कृत साहित्य में दमयन्ती, तारा, देवहूति, सावित्री आदि स्त्रियों का वर्णन उपलब्ध होता है जिन्होंने सतीत्व धर्म का दृढ़तापूर्वक पालन करते हुए भारतीय समाज के लिए आदर्श स्थापित किया है। वहीं साहित्य में कुछ ऐसी स्त्रियों का भी वर्णन प्राप्त होता है जिन पर स्वेच्छा से अथवा बलात् व्यभिचार किए जाने के आरोप लगे। ऐसा ही एक नाम है ''अहिल्या''। अहल्या अथवा अहिल्या हिन्दू मिथकों में वर्णित एक स्त्री पात्र है, जो गौतम ऋषि की पत्नी थीं। ब्राह्मणों और पुराणों में इनकी कथा संक्षिप्त रूप से कई जगह प्राप्त होती है और रामायण तथा बाद की रामकथाओं में विस्तार से इनकी कथा वर्णित है।

अहल्या की कथा मुख्य रूप से इन्द्र द्वारा इनके शीलहरण और इसके परिणामस्वरूप गौतम द्वारा दिए गए शाप का भाजन बनना तथा राम के चरणस्पर्श से मुक्ति के रूप में है। अहल्या को पंचकन्याओं में गिना जाता है और इन्हें प्रातः स्मरणीय माना जाता है। अहल्या के बारे में प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है:-

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशिन्याः।।

इसी प्रकार देवीभागवत पुराण में अहिल्या को एक प्रकार से उन देवियों में स्थान दिया गया है जिन्हें शुभ, यशस्विनी और प्रशंसनीय माना गया है। इनमें तारा और मन्दोदरी के अलावा पंचसतियों में से अरून्धती और दमयन्ती इत्यादि भी शामिल की गई हैं।

अहल्या की व्युत्पत्ति

''अहल्या'' शब्द में नञ्ञ तत्पुरुष समास है। अर्थात् अ + हल्या। जिसका संस्कृत अर्थ हल, हल जोतने अथवा विरूपता से सम्बन्धित है। इसका अर्थ बिना किसी असुन्दरता के बताया गया है। ब्रह्मा ने सृष्टि की सुन्दरतम रचनाओं से तत्त्व लेकर अहल्या के अंगों में समावेश करके अहल्या की रचना की[1] हिन्दी साहित्य कोश में भी इसका यही अर्थ बताया गया है। हल का अर्थ है- कुरूप, अतः कुरूपता न होने के कारण ब्रह्मा ने इन्हें अहल्या नाम दिया।[2] कतिपय शब्दकोश अहल्या का अर्थ ऐसी भूमि लिखते हैं, जिसे जोता न गया हो। बाद के लेखक इसे पुरुष समागम से जोड़कर देखते हुए, अहल्या को कुमारी अथवा अक्षत के रूप में निरूपित करते हैं।[3]

अहल्या की कथा

वाल्मीकि रामायण में दो जगह अहिल्या की कथा वर्णित है। बालकाण्ड व उत्तरकाण्ड। बालकाण्ड के अनुसार अहिल्या की कथा इस प्रकार है- राम और लक्ष्मण जब विश्वामित्र के साथ जाते हैं और मिथिलापुरी के वन-उपवन देखने के लिए निकलते हैं तो उन्होंने एक उपवन में एक पुराने आश्रम को देखा जो अत्यन्त रमणीय होकर भी

सुनसान दिखाई देता था। तब श्रीरामचन्द्र ने विश्वामित्र से पूछा[4] भगवन्! यह कैसा स्थान है, जो देखने में तो आश्रम जैसा है, किन्तु एक भी मुनि यहाँ दृष्टिगोचर नहीं होते हैं।[5]

तब विश्वामित्र उनको उत्तर देते हैं कि यह स्थान महात्मा गौतम का आश्रम था। महर्षि गौतम अपनी पत्नी अहल्या के साथ यहाँ तपस्या करते थे। उन्होंने वर्षों तक यहाँ तप किया था।[6]

एक दिन जब महर्षि गौतम आश्रम में नहीं थे, उपयुक्त अवसर समझकर शचीपति इन्द्र गौतम मुनि का वेष धारण किए वहाँ आए और अहल्या से रति की इच्छा व्यक्त करते हुए बोले कि मैं तुम्हारे साथ समागम करना चाहता हूँ।[7] महर्षि गौतम का वेष धारण करके आए हुए इन्द्र को पहचान कर भी अहल्या ने उनके साथ समागम का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।[8] रति के पश्चात उन्होंने सन्तुष्टचित्त होकर देवराज इन्द्र को शीघ्र ही जाने के लिए कहा और महर्षि गौतम के कोप से स्वयं की व इन्द्र की भी रक्षा करने का निवेदन किया। जब इन्द्र उस कुटी से बाहर निकल कर गौतम के आ जाने की आशंका से वेगपूर्वक भागने का प्रयत्न करने लगे, तभी तपो बल सम्पन्न, दुर्धर्ष, महामुनि गौतम ने हाथ में समिधा लिए हुए आश्रम में प्रवेश कर लिया। उनका शरीर तीर्थ के जल से भीगा हुआ था और वे प्रज्वलित अग्नि के समान उद्दीप्त हो रहे थे।[9]

उन पर दृष्टि पड़ते ही देवराज इन्द्र भय से थर्रा उठे। उनके मुख पर विषाद छा गया। तब दुराचारी इन्द्र को मुनि का वेष धारण किए देखकर सदाचार सम्पन्न मुनिवर गौतम ने रोष में कहा कि तूने मेरा रूप धारण करके यह न करने योग्य पापकर्म किया है इसलिए तू विफल हो जाएगा। गौतम के ऐसा कहते ही इन्द्र के दोनों अण्डकोष पृथ्वी पर गिर पड़े।[10]

गौतम ने अपनी पत्नी को भी श्राप दिया कि तू भी यहाँ कई हजार वर्षों तक केवल हवा पीकर या उपवास करके कष्ट उठाती हुई राख में पड़ी रहेगी। समस्त प्राणियों से अदृश्य रहकर इस आश्रम में निवास करेगी। जब दशरथ कुमार राम इस घोर वन में पदार्पण करेंगे, उस समय तू पवित्र होगी। उनका आतिथ्य-सत्कार करके तेरे लोभ-मोह आदि दोष दूर हो जाऐंगे और तू प्रसन्नतापूर्वक मेरे पास पहुँच कर अपना

पूर्व शरीर धारण कर लेगी।[11]

ऐसा कहकर महातेजस्वी महातपस्वी गौतम इस आश्रम को छोड़कर चले गए और सिद्धों तथा चारणों से सेवित हिमालय के रमणीय शिखर पर रहकर तपस्या करने लगे।[12]

इसके बाद इन्द्र अण्डकोष से रहित होकर बहुत डर गए और वे कहने लगे कि महात्मा गौतम की तपस्या में विघ्न डालने के लिए मैंने उन्हें क्रोध दिलाया है। ऐसा करके मैंने देवताओं का ही कार्य सिद्ध किया है।[13] तब इन्द्र देवताओं से प्रार्थना करने लगे कि उन्हें किसी प्रकार पुनः अण्डकोष से युक्त करें। तब विचार-विमर्श के पश्चात् पितृदेवताओं द्वारा भेड़े के अण्डकोषों को इन्द्र के शरीर में संयोजित कर दिया गया।[14] इस कथा को सुनाकर विश्वामित्र राम को अहल्या का उद्धार करने के लिए कहते हैं।[15] तब श्रीराम ने वहाँ जाकर देखा कि अहल्या अपनी तपस्या से देदीप्यमान हो रही हैं। इस लोक के मनुष्य तथा सम्पूर्ण देवता और असुर भी वहाँ आकर उन्हें देख नहीं सकते थे।[16]

उनका स्वरूप दिव्य था। वे मायामयी सी प्रतीत होतीं थीं। धूम से घिरी हुई प्रज्वलित अग्निशिखा सी प्रतीत होतीं थीं। ओले और बादलों से ढकी हुई पूर्ण चन्द्रमा की प्रभा-सी दिखाई देतीं थीं तथा जल के भीतर उद्भासित होने वाली सूर्य की दुर्धर्ष प्रभा के समान दृष्टिगोचर होती थीं।[17]

गौतम के शापवश श्रीरामचन्द्र का दर्शन होने से पहले तीनों लोकों के किसी भी प्राणी के लिए उनका दर्शन होना कठिन था। श्रीराम का दर्शन मिल जाने से जब उनके शाप का अन्त हो गया, तब वे उन सबको दिखाई देने लगीं।[18]

उस समय श्रीराम और लक्ष्मण ने बड़ी प्रसन्नता के साथ अहल्या के दोनों चरणों का स्पर्श किया। महर्षि गौतम के वचनों का स्मरण करते हुए अहल्या ने बड़ी सावधानी के साथ उन दोनों भाइयों को अतिथि के रूप में अपनाया और पाद्य, अर्घ्य आदि अर्पित करके उनका आतिथ्य-सत्कार किया।[19] महर्षि गौतम के अधीन रहने वाली अहल्या अपनी तपःशक्ति से विशुद्ध स्वरूप को प्राप्त हुई। यह देखकर सम्पूर्ण देवता उन्हें साधुवाद देते हुए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे।

महातपस्वी गौतम भी अहल्या को अपने साथ पाकर सुखी हो गए। उन्होंने श्रीराम की विधिवत पूजा करके तपस्या आरम्भ की।[20]

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में अहल्या की यह कथा उपलब्ध होती है।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में यह कथा कुछ परिवर्तन के साथ वर्णित है। मेघनाद द्वारा इन्द्र पर विजय प्राप्ति के समय यह कथा वर्णित है। इस कथा के अनुसार ब्रह्मा ने स्वयं अहिल्या की रचना की। सब प्रजाओं की अपेक्षा विशिष्ट प्रजा को प्रस्तुत करने के लिए ब्रह्मा जी ने एक नारी की सृष्टि की। प्रजाओं के प्रत्येक अंग में जो-जो अद्‌भुत विशिष्टता-सारभूत सौन्दर्य था, उसे उसके अंगों में प्रकट किया गया। ब्रह्मा जी स्वयं ही कहते हैं कि उन अद्‌भुत रूप-गुणों से उपलक्षित जिस नारी का मेरे द्वारा निर्माण हुआ था, उसका नाम था - अहल्या। इस जगत् में हल कहते हैं कुरूपता को, उससे जो निन्दनीयता प्रकट होती है, उसका नाम हल्य है। जिस नारी में हल्य (निन्दनीय रूप) न हो, वह अहल्या कहलाती है, इसीलिए वह नवनिर्मित नारी अहल्या नाम से विख्यात हुई।[21]

तब ब्रह्मा जी ने धरोहर के रूप में महर्षि गौतम के हाथ में उस कन्या को सौंप दिया। वह बहुत वर्षों तक उनके यहाँ रही। फिर गौतम ने उसे ब्रह्मा जी को लौटा दिया। महामुनि गौतम के उस महान् स्थैर्य तथा सिद्धि को जानकर वह कन्या ब्रह्मा जी ने पुनः गौतम मुनि को दे दी। इससे देवगण निराश हो गए।[22]

इन्द्र के क्रोध की सीमा नहीं रही। काम के अधीन होकर इन्द्र ने मुनि के आश्रम पर जाकर अग्निशिखा के समान प्रज्वलित होने वाली उस दिव्य सुन्दरी को देखा। इन्द्र ने कुपित और काम से पीड़ित होकर उसके साथ बलात्कार किया। उस समय महर्षि ने अपने आश्रम में इन्द्र को देख लिया। उन्होंने इन्द्र को शाप दे दिया। इन्द्र को मेघनाद द्वारा बन्दी बनाये जाने का कारण वही शाप कहा गया है।[23]

गौतम मुनि ने इन्द्र को शाप देते हुए कहा कि तुमने निर्भय होकर मेरी पत्नी के साथ बलात्कार किया है, इसलिए तुम युद्ध में जाकर शत्रु के हाथ में पड़ जाओगे।[24]

गौतम मुनि इन्द्र से कहते हैं कि तुम जैसे राजा के दोष से मनुष्य लोक में भी यह जारभाव प्रचलित हो जाएगा, जिसका तुमने स्वयं यहाँ सूत्रपात किया है। जो जार भाव से पापाचार करेगा, उस पुरुष पर पाप का आधा भाग पड़ेगा और आधा तुम पर पड़ेगा, क्योंकि इसके प्रवर्तक तुम्हीं हो। देवराज के पद पर प्रतिष्ठित होने वाले के लिए यह शाप स्थिर नहीं रहेगा, यह शाप मैंने इन्द्रमात्र के लिए दिया है।[25]

इसके बाद गौतम मुनि ने अहल्या को भी आश्रम के पास ही अदृश्य होकर रहने और अपने रूप-सौन्दर्य से भ्रष्ट होने का शाप दिया। वे कहते हैं कि जिस एक रूप-सौन्दर्य को लेकर इन्द्र के मन में यह काम-विकार उत्पन्न हुआ था, उस रूप-सौन्दर्य को समस्त प्रजाएँ प्राप्त कर लेंगीं।[26]

अहल्या विनीत वचनों से गौतम मुनि से कहती है कि देवराज ने आपका ही रूप धारण करके मुझे कलंकित किया है। मैं उसे पहचान न सकी थी, इसलिए अनजान में मुझसे यह अपराध हुआ है, स्वेच्छा-चारवश नहीं। इसलिए आप मुझ पर कृपा करें।[27]

तब गौतम उन्हें इक्ष्वाकु वंश में राम के अवतरित होने के बारे में बताते हैं कि महाबाहु श्रीराम के रूप में साक्षात् भगवान् विष्णु ही मनुष्य शरीर धारण करके प्रकट होंगे। वे विश्वामित्र के कार्य से तपोवन में पधारेंगे। उनका दर्शन करके तुम पवित्र हो जाओगी। उनका आतिथ्य सत्कार करके तुम मेरे पास वापस आ जाओगी और फिर मेरे ही साथ रहने लगोगी। तब अहल्या बड़ा भारी तप करने लगीं।[28]

आधुनिक दृष्टिकोण

अहल्या के विषय में अनेक आधुनिक विद्वानों द्वारा भी विचार-विमर्श किया गया है। भट्टाचार्य जो ''पंच कन्या : दि फाइव वर्जिन्स ऑफ इण्डियन एपिक्स'' के लेखक हैं वे पंच कन्याओं और पंचसतियों (सती, सीता, सावित्री, दमयन्त्री और आरून्धती) के मध्य तुलनात्मक विचार करते हुए पूछते हैं कि तो क्या तब अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मन्दोदरी सच्चरित्र पत्नियाँ नहीं हैं क्योंकि इनमें से प्रत्येक ने अपने पति के अलावा एक या एकाधिक पर पुरुष को जाना।[29]

भट्टाचार्य के अनुसार, अहल्या नारी के उस शाश्वत् रूप का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने अन्दर की अभीप्सा को भी अनसुना नहीं कर पाती और न ही पवित्रता की उच्च भावनाओं को ही जो उसकी शारीरिक कामनाओं की पूर्ति न कर पाने वाले उसके साधु पति में निहित है और उसकी निजी इच्छाओं के साथ विरोधाभास रखती हैं। लेखक अहल्या को एक स्वतन्त्र नारी के रूप में देखता है जो अपना खुद का निर्णय लेती है, उत्सुकता के वशीभूत होकर जोखिम उठाती है, और अन्त में अपने कृत्य का दण्ड भी उस शाप के रूप में स्वीकार करती है जो पुरुष प्रधान समाज के प्रतिनिधि उसके पति द्वारा लगाया जाता है।[30] शाप की अविचलित होकर स्वीकृति ही वह कार्य है जो रामायण की इस पात्र की प्रशंसा करने को विवश कर देता है तथा उसे प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय चरित्र के रूप में स्थापित कर देता है।[31]

भट्टाचार्य की तरह ही ''सबार्डिनेशन ऑफ वुमन : अ न्यू पर्सपेक्टिव'' पुस्तक की लेखिका मीना केलकर कहतीं हैं कि अहल्या को इसलिए श्रद्धेय बना दिया गया क्योंकि वह पुरुष प्रधान समाज के लिंगभेद के आदर्शों को स्वीकार कर लेती है, वह शाप को बिना किसी प्रतिरोध के स्वीकार कर लेती है और मानती है कि उसे दण्डित किया जाना चाहिए था। इसके अलावा केलकर यह भी जोड़ती हैं कि ग्रन्थों में अहल्या को महान् घोषित किए जाने का एक अन्य कारण उसको मिले शाप द्वारा स्त्रियों को चेतावनी देना और उन्हें निरुद्ध किए जाने के लिए भी हो सकता है।[32]

अहल्या तीर्थ

वह स्थान जहाँ अहल्या ने अपने शाप की अवधि पूर्ण की और जहाँ शापमुक्त हुईं, ग्रन्थों में अहल्या तीर्थ के नाम से उल्लेखित और पवित्र स्थान के रूप में प्रतिष्ठित है। अहल्या तीर्थ की वास्तविक स्थिति के बारे में विवाद है, कुछ ग्रन्थों के मुताबिक यह गोदावरी नदी के तट पर स्थित है, जबकि कुछ ग्रन्थ इसे नर्मदा के तट पर स्थित मानते हैं। अहल्या तीर्थ होने का दावा सबसे मजबूती से प्रस्तुत किया जाता है बिहार के दरभंगा जिले में। डॉ. रामप्रकाश शर्मा के अनुसार अहिल्या नगरी अथवा गौतम आश्रम मिथिला में ही थी।[33] अहल्या अस्थान नामक

मन्दिर और अहल्या ग्राम भी इसी जिले में स्थित हैं जो अहल्या को समर्पित हैं।[34]

पुराणों में कामदेव के समान रूपवान बनने और नारियों को आकर्षित करने की कामना रखने वाले पुरुषों को अहल्या तीर्थ में जाकर अहल्या की उपासना करने का मार्ग सुझाया गया है। यह उपासना कामदेव के माह, चैत्र में करने को कहा गया है और ग्रन्थों के अनुसार इस तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति अप्सराओं का सुख भोगता है।[35]

कथा साम्य

हिन्दू ग्रन्थों में वर्णित इस कथा से कुछ मिलती-जुलती कथा यूनानी मिथकों में भी प्राप्त होती है, जहाँ ज्यूस, देवताओं का राजा, जो एक तरह से इन्द्र के ही समान है, आलक्मीनी के पति का रूप धरकर छलपूर्वक उसके साथ संसर्ग करता है जिससे प्रसिद्ध कथापुरुष हर्क्युलिस का जन्म होता है। इस ग्रीक कथा के दो प्रकार हैं जिनमें से एक के अनुसार आलक्मीनी ज्यूस के कपट को पहचानने के बावजूद उसके साथ संसर्ग करती है, जबकि दूसरी कथा के अनुसार वह निर्दोष है और प्रवंचना की शिकार है। दोनों कथाओं में प्रमुख अन्तर यह है कि अलक्मीनी के साथ संसर्ग द्वारा हर्क्युलिस जैसी सन्तान की उत्पत्ति के कारण से ज्यूस का कार्य न्यायोचित ठहराया जाता है और आलक्मीनी पर भी दुष्चरित्रा होने का कोई आरोप नहीं लगता। जबकि अहल्या के कार्य को कामुक आचरण मानकर न केवल उसे इसके लिए बुरा साबित किया जाता है बल्कि शाप के रूप में सजा भी प्राप्त होती है।[36]

निष्कर्ष

इस प्रकार प्राचीन ग्रन्थों से लेकर आधुनिक काल तक ''अहल्या व इन्द्र जार प्रसंग'' साहित्यकारों की लेखनी का विषय रहा है।

एक कथा प्रचलित कर दी गयी है कि त्रेता युग में श्री राम ने जब पत्थर बनी अहिल्या को अपने चरणों से छुआ तब वह पत्थर से मानव बन गई और उसका उद्धार हो गया।

प्रथम तो तर्क शास्त्र से किसी भी प्रकार से यह संभव ही नहीं

है कि मानव शरीर पहले पत्थर बन जाये और फिर चरण छूने से वापिस शरीर रूप में आ जाये।

दूसरा वाल्मीकि रामायण में अहिल्या का वन में गौतम ऋषि के साथ तप करने का वर्णन है, कहीं भी वाल्मीकि मुनि ने पत्थर वाली कथा का वर्णन नहीं किया है। वाल्मीकि रामायण की रचना के बहुत बाद की तुलसीदास रचित रामचरितमानस में इसका वर्णन है।

तीसरे दो विषयों पर विरोधाभास है एक क्या अहिल्या इन्द्र द्वारा छली गयी थी अथवा दूसरा अहिल्या चरित्रवान नहीं थी?

इसका हल भी बालकाण्ड सर्ग 51 में गौतम के पुत्र शतानंद ने अपनी माता को यशस्विनी तथा देवों में आतिथ्य पाने योग्य कहा है।

अपि ते मुनिशार्दूल मम माता यशस्विनी।
दर्शिता राजपुत्रय तपोदीर्घमुपागता।।
अपि रामे महातेजा मम माता यशस्विनी।
वन्यैरूपाहरत् पूजां पूजार्हे सर्वदेहिनाम्।।

– वाल्मीकि रामायण (1/51/45)

बालकाण्ड 49/19 में लिखा है कि राम और लक्ष्मण ने अहिल्या के पैर छुए। यही नहीं राम और लक्ष्मण को अहिल्या ने अतिथि रूप में स्वीकार किया और पाद्य तथा अर्घ्य से उनका स्वागत किया। यदि अहिल्या का चरित्र संदिग्ध होता तो क्या राम और लक्ष्मण उनका आतिथ्य स्वीकार करते?

सत्य क्या है?

विश्वामित्र ऋषि से तपोनिष्ठ अहिल्या का वर्णन सुनकर जब राम और लक्ष्मण ने गौतम मुनि के आश्रम में प्रवेश किया तब उन्होंने अहिल्या का जिस रूप में वर्णन किया है उसका वर्णन वाल्मीकि ऋषि ने बालकाण्ड 49/15–17 में इस प्रकार किया है–

स तुषार आवृताम् स अभ्राम् पूर्ण चन्द्र प्रभाम् इव।
मध्ये अंभसो दुराधर्षाम् दीप्ताम् सूर्य प्रभाम् इव।।

– बालकाण्ड (49/15)

सस् हि गौतम वाक्येन दुर्निरीक्ष्या बभूव ह।
त्रयाणाम् अपि लोकानाम् यावत् रामस्य दर्शनम्।

– बालकाण्ड 41/16

तप से देदीप्यमान रूप वाली, बादलों से मुक्त पूर्ण चन्द्रमा की प्रभा के समान तथा प्रदीप्त अग्निशिखा और सूर्य के तेज के समान अहल्या तपस्या में लीन थी।

सत्य यह है कि देवी अहिल्या महान तपस्वी थी जिनके तप की महिमा को सुनकर राम और लक्ष्मण उनके दर्शन करने गए थे। विश्वामित्र जैसे ऋषि राम और लक्ष्मण को शिक्षा देने के लिए और शत्रुओं का संहार करने के लिए वन जैसे कठिन प्रदेश में लाये थे।

किसी सामान्य महिला के दर्शन कराने हेतु नहीं लाये थे। कालांतर में कुछ अज्ञानी लोगों ने ब्राह्मण ग्रंथों में इन्द्र के लिए प्रयुक्त शब्द ''अहल्यायैजार'' के रहस्य को न समझ कर इन्द्र द्वारा अहिल्या से व्यभिचार की कथा गढ़ ली। प्रथम इन्द्र को जिसे हम देवता कहते हैं व्यभिचारी बना दिया। भला जो व्यभिचारी होता हैं। वह देवता कहाँ से हुआ?

द्वितीय अहिल्या को गौतम मुनि से शापित करवा कर उस पत्थर का बना दिया जो असंभव है। तीसरे उस शाप से मुक्ति का साधन श्री राम जी के चरणों से उस शिला को छूना बना दिया। मध्यकाल को पतन काल भी कहा जाता हैं क्यूंकि उससे पहले नारी जाति को जहाँ सर्वश्रेष्ठ और पूजा के योग्य समझा जाता था वही मध्यकाल में व अधम समझी जाने लगी।

इसी विकृत मानसिकता का परिणाम अहिल्या इन्द्र की कथा का विकृत रूप है। सत्य रूप को स्वामी दयानंद ने ऋग्वेद भाष्य भूमिका में लिखा है कि यहाँ इन्द्र सूर्य है, अहिल्या रात्रि है और गौतम चन्द्रमा है, चन्द्रमा रूपी गौतम रात्रि अहिल्या के साथ मिलकर प्राणियों को सुख पहुँचाते हैं, इन्द्र यानि सूर्य के प्रकाश से रात्रि अहिल्या निवृत्त हो जाती हैं अर्थात गौतम और अहिल्या का सम्बन्ध समाप्त हो जाता है।

इन सब तर्को और प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि अहिल्या

उद्धार की कथा काल्पनिक है। अहिल्या न तो व्यभिचारिणी थी न ही उसके साथ किसी ने छल किया था। सत्य है कि वह महान तपस्विनी थी जिनके दर्शनों के लिए, जिनसे ज्ञान प्राप्ति के लिए ऋषि विश्वामित्र श्री राम और लक्ष्मण को वन में ले गए थे।

- डॉ. डोली जैन

सन्दर्भ :

1. ततो मया रूपगुणैरहल्या स्त्री विनिर्मिता।
   हलं नामेह वैरुप्यं हल्यं तत्प्रभवं भवेत्।।
   यस्या न विद्यते हल्यं तेनाहल्येति विश्रुता।।
   अहल्येत्येव च मया तस्या नाम प्रकीर्तितम्।।
   वाल्मीकि रामायण - 7/30/22, 23
2. हिन्दी साहित्य कोश, भाग-2, प्रकाशक - ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1986, पृ. सं. 30
3. भट्टाचार्य, मार्च-अप्रेल 2004, पृ. सं. 4-7
4. मिथिलोपवने तत्र आश्रमं दृश्य राघवः।
   पुराणं निर्जनं रम्यं पप्रच्छ मुनिपुवम्।।
   वाल्मीकि रामायण - 1/48/11
5. इदमाश्रमसंकाशं किं न्विदं मुनिवर्जितम्।
   श्रोतुमिच्छामि भगवन् कस्यायं पूर्व आश्रमः।।
   वाल्मीकि रामायण - 1/48/12
6. गौतमस्य नरश्रेष्ठ पूर्वमासीन्महात्मनः।
   आश्रमो दिव्यसंकाशः सुरैरपि सुपूजितः।।
   वाल्मीकि रामायण - 1/48/15
7. तस्यान्तरं विदित्वा च सहस्राक्षः शचीपतिः।
   मुनिवेषधरो भूत्वा अहल्यामिदमब्रवीत्।।
   ऋतुकालं प्रतीक्षन्ते नार्थिनः सुसमाहिते।
   संगमं त्वामिच्छामि त्वया सह सुमध्यमे।।
   वाल्मीकि रामायण - 1/48/17, 18

8 मुनिवेषं सहस्राक्षं विज्ञाय रघुनन्दन।
मतिं चकार दुर्मेधा देवराजकुतूहलात्।।

वाल्मीकि रामायण – 1/48/19

9 अथाब्रवीत् सुरश्रेष्ठं कृतार्थेनान्तरात्मा।
कृतार्थास्मि सुरश्रेष्ठ गच्छ शीघ्रमितः प्रभो।।
आत्मानं मां च देवेश सर्वथा रक्ष गौतमात्।
एवं संगम्य तु तदा निश्चक्रामोटजात् ततः।।
स सम्भ्रमात् त्वरन् राम शतिो गौतमं प्रति।
गौतमं च ददर्शाथ प्रविशन्तं महामुनिम्।।
देवदानवदुर्धर्षं तपोबलसमन्वितम्।
तीर्थोदकपरिक्लिन्नं दीप्यमानमिवानलम्।।
गृहीतसमिधं तत्र सकुशं मुनिपुवम्।।

वाल्मीकि रामायण – 1/48/20–24

10 दृष्ट्वा सुरपतिस्त्रस्तो विषण्णवदनोऽभवत्।
अथ दृष्ट्वा सहस्राक्षं मुनिवेषधरं मुनिः।।
दुर्वृत्तं वृत्तसम्पन्नो रोषाद् वचनमब्रवीत्।
मम रूपं समास्थाय कृतवानसि दुर्मते।।
अकर्तव्यमिदं यस्माद् विफलस्त्वं भविष्यसि।
गौतमेनैवमुक्तस्य सुरोषेण महात्मना।।
पेततुर्वृषणौ भूमौ सहस्राक्षस्य तत्क्षणात्।

वाल्मीकि रामायण – 1/48/28

11 तथा शप्त्वा च वै शक्रं भार्यामपि च शप्तवान्।
इह वर्षसहस्राणि बहूनि निवसिष्यसि।।
वातभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी।
अदृश्या सर्वभूतानामाश्रमेऽस्मिन् वसिष्यसि।।
यदा त्वेतद् वनं घोरं रामो दशरथात्मजः।
आगमिष्यति दुर्धर्षस्तदा पूता भविष्यसि।।
तस्यातिथ्येन दुर्वृत्ते लोभमोहविवर्जिता।

मत्सकाशं मुदा युक्ता स्वं वपुर्धारयिष्यसि।।

वाल्मीकि रामायण – 1/48/29–32

12 एवमुक्त्वा महातेजा गौतमो दृष्टचारिणीम्।
इममाश्रममुत्सृज्य सिद्धचारणसेविते।।
हिमवच्छिखरे रम्ये तपस्तेपे महातपाः।।

वाल्मीकि रामायण – 1/48/33

13 अफलस्तु ततः शक्रो देवानग्निपुरोगमान्।
अब्रवीत् त्रस्तनयनः सिद्धगन्धर्वचारणान्।।
कुर्वता तपसो विघ्नं गौतमस्य महात्मनः।
क्रोधमुत्पाद्य हि मया सुरकार्यमिदं कृतम्।।

वाल्मीकि रामायण – 1/49/1, 2

14 तन्मां सुरवराः सर्वे सर्षिसाः सचारणाः।
सुरकार्यकरं यूयं सफलं कर्तुमर्हथ।।
अग्नेस्तु वचनं श्रुत्वा पितृदेवाः समागताः।
उत्पाट्य मेषवृषणौ सहस्राक्षे न्यवेशयन्।।

वाल्मीकि रामायण – 1/49/4, 8

15 तदागच्छ महातेज आश्रमं पुण्यकर्मणः।
तारयैनां महाभागामहल्यां देवरूपिणीम्।।

वाल्मीकि रामायण – 1/49/11

16 ददर्श च महाभागां तपसा द्योतित प्रभान्।
लोकैरपि समागम्य दुर्निरीक्ष्यां सुरासुरैः।।

वाल्मीकि रामायण – 1/49/13

17 प्रयत्नान्निर्मितां धात्रा दिव्यां मायामयीमिव।
धूमेनाभिपरीतीं दीप्तामग्निशिखामिव।।
सतुषारावृतां साभ्रां पूर्णचन्द्रप्रभामिव।
मध्येम्भसो दुराधर्षां दीप्तां सूर्यप्रभामिव।।

वाल्मीकि रामायण – 1/49/14, 15

18 सा हि गौतमवाक्येन दुर्निरीक्ष्या बभूव ह।
त्रयाणामपि लोकानां यावद् रामस्य दर्शनम्।।
शापस्यान्तमुपागम्य तेषां दर्शनमाग ता।।

वाल्मीकि रामायण – 1/49/16

19 राघवौ तु तदा तस्याः पादौ जगृहतुर्मुदा।
स्मरन्ती गौतमवचः प्रतिजग्राह सा हि तौ।
पाद्यमर्घ्यं तथाऽतिथ्यं चकार सुसमाहिता।
प्रतिजग्राह काकुत्स्थो विधिदृष्टेन कर्मणा।।

वाल्मीकि रामायण – 1/49/17, 18

20 साधु साध्विति देवास्ताम हल्यां समपूजयन्।
तपोबलविशुद्धीं गौतमस्य वशानुगाम्।।
गौतमोऽपि महातेजा अहल्यासहितः सुखी।
रामं सम्पूज्य विधिवत् तपस्तेपे महातपाः।।

वाल्मीकि रामायण – 1/49/20, 21

21 सोऽहं तासां विशेषार्थं स्त्रियमेकां विनिर्ममे।
यद् यत् प्रजानां प्रत्यं विशिष्टं तत् तदुद्धृतम्।।
ततो मया रूपगुणैरहल्या स्त्री विनिर्मिता।
हलं नामेह वैरूप्यं हल्यं तत्प्रभवं भवेत्।।
यस्या न विद्यते हल्यं तेनाहल्येति विश्रुता।
अहल्येत्येव च मया तया नाम प्रकीर्तितम्।।

वाल्मीकि रामायण – 7/30/22, 23

22 सा मया न्यासभूता तु गौतमस्य महात्मनः।
न्यस्ता बहूनि वर्षाणि तेन निर्यातिता च ह।।
ततस्तस्य परिज्ञाय महास्थैर्यं महामुनेः।
ज्ञात्वा तपसि सिद्धिं च पत्न्यर्थं स्पर्शिता तदा।।
स तया सह धर्मात्मा रमते स्म महामुनिः।
आसन्निराशा देवास्तु गौतमे दत्तया तया।।

वाल्मीकि रामायण – 7/30/26-28

23 त्वं क्रुद्धस्त्विह कामात्मा गत्वा तस्याश्रमं मुनेः।
दृष्ट्वांश्च तदा तां स्त्रीं दीप्तामग्निशिखामिव।।
सा त्वया धर्षिता शक्र कामार्तेन समन्युना।
दृष्टस्त्वं स तदा तेन आश्रमे परमर्षिणा।।
ततः क्रुद्धेन तेनासि शप्तः परम तेजसा।
गतोऽसि येने देवेन्द्र दशाभागविपर्ययम्।।

वाल्मीकि रामायण – 7/30/29–31

24 यस्मान्मे धर्षिता पत्नी त्वया वासव निर्भयात्।
तस्मात् त्वं समरे शक्र शत्रुहस्तं गमिष्यसि।।

वाल्मीकि रामायण – 7/30/32

25 अयं तु भावो दुर्बुद्धे यस्त्वयेह प्रवर्तितः।
मानुषेष्वपि लोकेषु भविष्यति न संशयः।।
तत्रार्धं तस्य यः कर्ता त्वय्यर्धं निपतिष्यति।
न च ते स्थावरं स्थानं भविष्यति न संशयः।।
यश्च यश्च सुरेन्द्रः स्याद् ध्रुवः स न भविष्यति।
एष शापो मया मुक्त इत्यसौ त्वां तदाब्रवीत्।।

वाल्मीकि रामायण – 7/30/33–35

26 तां तु भार्यां सुनिर्भर्त्स्य सोऽब्रवीत् सुमहातपाः।
दुर्विनीते विनिध्वंस ममाश्रमसमीपतः।।
रूपयौवनसम्पन्ना यस्मात् त्वमनवस्थिता।
तस्माद् रूपवती लोके न त्वमेका भविष्यति।।

वाल्मीकि रामायण – 7/30/36, 37

27 तदाप्रभृति भूयिष्ठं प्रजा रूपसमन्विता।
सा तं प्रसादयामास महर्षि गौतमं तदा।।
अज्ञानाद् धर्षिता विप्र त्वद्रूपेण दिवौकसा।
न कामकाराद् विप्रर्षे प्रसादं कर्तुमर्हसि।।

वाल्मीकि रामायण – 7/30/39, 40

28 अहल्यया त्वेवमुक्तः प्रत्युवाच स गौतमः।
उत्पत्स्यति महातेजा इक्षवाकूणां महारथः।।
रामो नाम श्रुतो लोके वनं चाप्युपयास्यति।
ब्राह्मणार्थे महाबाहुर्विष्णुर्मानुषविग्रहः।।
तं द्रक्ष्यसि तदा भद्रे ततः पूता भविष्यसि।
स हि पावयितुं शक्तस्त्वया यद् दुष्कृतं कृतम्।।
तस्यातिथ्यं च कृत्वा वै मत्समीपं गमिष्यसि।
वस्त्यसि त्वं मया सार्धं तदा हि वरवर्णिनि।।
एवमुक्त्वा तु विप्रर्षिराजगाम स्वमाश्रमम्।
तपश्चचार सुमहत् सा पत्नी ब्रह्मवादिनः।।

वाल्मीकि रामायण – 7/30/41–45

29 Pradip Bhattacharya, Panch-Kanya : The Five Virgins of Indian Epics, A Qust in Search of Meaning, Writers Workshop, Calculla, 2005, P.No. 13

30 Pradip Bhattacharya, Panch-Kanya : The Five Virgins of Indian Epics, A Qust in Search of Meaning, Writers Workshop, Calculla, 2005, P.No. 4-7

31 Pradip Bhattacharya, Panch-Kanya : The Five Virgins of Indian Epics, A Qust in Search of Meaning, Writers Workshop, Calculla, 2005, P.No. 31

32 Subordination of woman (A New Perspective) : M.A. Kelkar, Discovery Publications House, New Delhi, Feb. 1995, P.No. 59-60

33 मिथिला का इतिहास, लेखकः डॉ. रामप्रकाश शर्मा, प्रकाशकः कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, पृ. सं. 455

34 Official Site of Darbhanga District, 2006

35 ततो गच्छेत् राजेन्द्र अहल्यातीर्थमुत्तमम्।
स्नानमात्रादप्सरोभिर्मोदते कालमुत्तम्।।

चेत्रमासे तु सम्प्राप्ते शुक्लपक्षे त्रयोदशी।
कामदेवदिने तस्मिन्नहल्यां पूजयेत्ततः।।
यत्र तत्र समुत्पन्नो नरोऽत्यर्थंप्रियो भवेत्।
स्त्रीबल्लभो भवेच्छ्रीमान्कामदेव इवापरः।।

कूर्मपुराणम् – 41/43–45

36 The Mahabharata Patriline : Gender Culture and the Royal Hereditary, Sohnen, 1991, P.No. 73

अहल्या

आत्मा का सर्वश्रेष्ठ रूप गौतम कहलाता है। मन के ऊर्ध्वमुखी होने पर, पश्यन्ती वाक् प्रकट होने पर व्यक्तित्व सहस्राक्ष (हजार आंख वाला) इन्द्र बन जाता है। यदि सहस्राक्ष व्यक्तित्व अपनी शक्तियों का दुरूपयोग करता है, अन्तर्दष्टि से काम नहीं लेता तो इन्द्रियों से काम लेने वाला जीवात्मा सहस्राक्ष नहीं रह पाएगा, सहस्रयोनि बन जाएगा और उसकी बुद्धि भी अहल्या-पत्थर बन जाएगी। अहल्या रूपी बुद्धि जब तक गौतम के पास है, तब तक तो ठीक है, लेकिन जब जीवात्मा रूपी इन्द्र उसका उपभोग करना आरम्भ कर देता है तो वह पत्थर बन जाती है। अहल्या को मैत्रेयी, मित्र की पुत्री कहा गया है। इस प्रकारगौतम के पास जो अहल्या है, वह मित्र की शक्ति है । मित्र की शक्ति व्यक्तित्व के ऊर्ध्वमुखी पक्ष में, मनोनय कोश से ऊपर के कोशों में रहती है। मनोमय तथा उसके नीचे से कोशों में मित्रावरण की शक्ति इला रूप में या प्रज्ञा रूप में रहती है। अहल्या को अहर्या कहा जा सकता है-ऐसी शक्ति जिसका हरण नहीं किया जा सकता । यदि इन्द्रियों के स्वामी इन्द्र को, हमारे निचले व्यक्तित्व को अहल्या की कामना हो तो वह गौतम रूप धारण करने पर ही मिल सकती है। लेकिन नीचे आने पर ब्रह्मशक्ति शिथिल होकर शिला बन जाती है।

वैदिक साहित्य में अहल्या का एकमात्र उल्लेख सोमयाग में सुबह्मण्या आह्वान में आता है। सोम याग में प्राय: तीन सवनों के सबसे आरम्भ में और सबसे अन्त में उत्कर नामक गर्त (वेदी के बाहर स्थित एक गर्त जहां यज्ञ का कचरा फेंक जाता है) के निकट यजमान व यजमान-पत्नी विराजमान होते हैं और एक सामवेदी ऋत्विज सुब्रह्मण्या आह्वान करता है जिसके शब्द यह हैं :-

सुब्रह्मण्यों सुब्रह्मण्यों सुब्रह्मण्यों इन्द्रागच्छ हरिव आगच्छ मेधा-

तिर्थेर्मेष वृषणश्वस्य मेने गौरावस्कन्दिन्नहल्यायै जार। कौशिक ब्राह्मण गौतमब्रुवाण। देवा ब्रह्माण आगच्छ। अद्य सुत्यां आगच्छ (श्वः सुत्यां आगच्छ)। सासि सुब्रह्मण्ये तस्यास्ते पृथिवी पादः। सासि सुब्रह्मण्ये तस्यास्ते अन्तरिक्षं पादः । सासि सुब्रह्मण्ये तस्यास्ते द्यौः पादः। सासि सुब्रह्मण्ये तस्यास्ते दिशः पादः। परोरजास्ते पञ्चमः पादः। सा न इषमूर्जं धुक्ष्च। वीर्यमन्नाद्यं धेही।

सवनों के आरम्भ में निगद में अद्य सुत्या शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जबकि अन्त में श्वः सुत्या शब्दों का। उद्देश्य यह होता है कि यज्ञ को, कर्म को, प्रकृति को श्रेष्ठतम रूप में सम्पादित करने का जो प्रयास अद्य सुत्या में होना संभव है, उसे किया जाए। जिन कर्मों को अथवा प्रकृति को अद्यसुत्या में तीव्र गति में सम्पादित करना सम्भव नही है उन्हें श्वः सुत्या में सम्पादित किया जाए। देवगण अद्य सुत्या द्वारा प्रगति करते हैं, अंगिरस गण श्वः सुत्या द्वारा।

चूंकि इस निगद में गोतम नाम प्रकट हुआ है, अतः गो के विषय में अन्य विचारकों द्वारा प्रस्तुत धारणा का उल्लेख करना उचित होगा। कहा गया है कि गो वह है जो सूर्य से ऊर्जा ग्रहण करने में समर्थ हो ओर फिर उस ऊर्जा के प्रतिदान में भी समर्थ हो। आधुनिक भौतिक विज्ञान के आधार पर हम जानते हैं कि कोई भी द्रव्य जो ऊर्जा का ग्रहण करता है, किसी न किसी अंश तक उस ऊर्जा का रूपान्तरण करके उसका उत्सर्जन भी करता है (ब्लैक होल की स्थितियों को छोड़कर)। ऊर्जा का यह अवशोषण और उत्सर्जन कितनी दक्षता वाला हो सकता है, यही गौतम की प्रकृति का निर्धारण करेगा। यदि ऊर्जा के उत्सर्जन की क्षमता बिल्कुल समाप्त हो गई, तो उसे अहल्या या ब्लैक होल नाम दिया जा सकता है। इस कथन का आध्यात्मिक पक्ष यह हो सकता है कि हमारा चेतन व्यक्तित्व गोतम है और जहां-जहां से भी यह उत्सर्जन प्राप्त नहीं करता, वह सभी अहल्या है। कहा जाता है कि सिद्ध पुरुषों को पादाङ्गुष्ठ के माध्यम से, पादों के माध्यम से सिद्ध पीठ से उत्सर्जित तरंगों का अनुभव दूर से ही होने लगता है। यह राम की स्थिति हो सकती है।

ऊपरलिखित निगद का उल्लेख तैत्तिरीय आरण्यक 1.12.4,

शतपथ ब्राह्मण 3.3.4.19, जैमिनीय ब्राह्मण 2.79, षड्-विंश ब्राह्मण 1.1. 19 आदि में मिलता है। इस व्याख्या के अनुसार एक ब्रह्म है, एक सुब्रह्म है। ब्रह्म को सुब्रह्मम बनाना है, ऐसा ब्रह्म जो सर्वत्र सु, स्वस्ति फैलाता हो। इस निगद में इन्द्र के आगमन की कामना की गई, ऐसा इन्द्र जिसके रथ में दो हरी जुते हैं, ऐसा इन्द्र जिसने मेष बनाकर मेधातिथि का हरण किया? ऐसा इन्द्र जिसकी वृषणश्व की दुहिता मेनका को प्राप्त करने की कामना है?, ऐसा इन्द्र जो अहल्या का जार है। इस प्रसंग में कहा गया है कि देवों और असुरों के बीच संग्राम में गौतम थक कर बैठ गए और इन्द्र के कहने पर भी नहीं उठे। तब इन्द्र ने गौतम का रूप धारण करके विचरण किया। यज्ञ में यजमान ही इन्द्र का रूप होता है। और स्कन्द पुराण 2.7.19.20 में उल्लेख आया है कि इन्द्र की स्थिति प्राणों से श्रेष्ठ और गिरिजा से अवर है। कहा जा सकता है कि सबसे अधिक जाग्रत अथवा सबसे अधिक विकसित प्राण ही इन्द्र हैं, जैसे शीर्ष भाग के प्राण सारे शरीर में सबसे अधिक विकसित प्राण हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार आंख,नाक, कान, मुख आदि अवयव शरीर के निचले हिस्सों में भी हैं लेकिन वह अविकसित अवस्थाओं में है। कहा जा सकता है कि विकसित प्राण ही सूर्य की शक्ति का सर्वाधिक उपयोग करने में समर्थ हो पाते हैं, अत: उन्हें गो-तम, गो की पराकष्ठा कहा जा सकता है। सूर्य की शक्ति का उपयोग करने की यह पराकाष्ठा भौतिक जगत में विषुवत अह में देखने को मिलती है जब पृथिवी सूर्य की अधिकतम ऊर्जा का उपयोग कर पाती है क्योंकि सूर्य की किरणें पृथिवी पर सीधे पड़ती है। इस दृष्टि से देह का शीर्ष भाग गोतम ओर कबन्ध भाग अहल्या हुआ।

षड्-विंश ब्राह्मण का कथन है कि इन्द्र ने मेष बनाकर मेधातिथि का हरण किया लेकिन शब्दों का अर्थ इससे विपरीत निकल रहा है। अर्थ यह हो रहा है कि इन्द्र ने मेधातिथि के मेष का तथा वृषणश्व के मेष का हरण? किया होगा। डा. फतहसिंह के अनुसार मेधातिथि का अर्थ होता है मेधा अतिथि है जिसकी, अर्थात् मेधा सर्व काल में विद्यमान नहीं रहती अपितु अतिथि की भांति अचानक प्रकट हो जाती है। जैसा कि गौ की टिप्पणी में कहा गया है, अवि सूर्योदय की स्थिति, उच्चतर

चेतना के विकास के आरम्भ की स्थिति है। अत: यह स्वाभाविक है कि मेष का सम्बन्ध भी अतिथि की आकस्मिक स्थिति से होगा। जब सूर्य का विकास अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है तो उससे अगले स्तर पर सूर्य के अतिरिक्त तेज को काट छांट कर उससे विभिन्न अलंकारों, अस्त्रों व सोम का विकास करना होता है। यह सब वृषणश्वस्य मेने में निहित होनाचाहिए। उपरोक्त निगद में जिन शब्दों का प्रयोग हुआ है, उन्हीं शब्दों की पुराणों ने कुछ दूसरे प्रकार से व्याख्या की। उदाहरण के लिए, जहां ब्राह्मणों मेने वृषणश्वस्य मैंने शब्द आया है, वहां पुराणों में अहल्या को वध्रि (बांझ?) अश्व तथा मेनका की दुहिता कहा गया है। पुराणों में गौतम ऋषि द्वारा इन्द्र के वृषणों का उच्छेद कर देने पर मेष के वृषण इन्द्र से जोड़ने का उल्लेख है। निहितार्थों की व्याख्या अपेक्षित है।

अहल्या कूर्म 2.41.44 (अहल्या तीर्थ : चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को अहल्या की पूजा), प४ 1.54 (अहल्या व इन्द्र की कथा), 3.18.89 (अहल्या तीर्थ का माहात्म्य), ब्रह्म 2.16 (अहल्या संगम तीर्थ : अहल्या व इन्द्र की कथा, अहल्या का शाप से शुष्क नदी बनना, गौतमी से संगम द्वारा मुक्ति), ब्रह्मवैवर्त्त 4.45.34 (अहल्या द्वारा शिव विवाह में हास्योक्ति), 4.47 (इन्द्र द्वारा अहल्या के धर्षण की कथा), 4.61 (इन्द्र द्वारा अहल्या का धर्षण, राम द्वारा मोक्ष), भविष्य 4.103.15 (शाण्डिल्य-भार्या योगलक्ष्मी की माता), भागवत 9.21.34 (मुद्गल-कन्या, गौतम-पत्नी), मत्स्य 50.7 (विन्ध्याश्व व मेनका-पुत्री), विष्णुधर्मोत्तर 1.128.30 (ब्रह्मा द्वारा अहल्या के सृजन, गौतम द्वारा पालन की कथा), स्कन्द 1.2.52 (अहल्या सरोवर : गौतम के तप का स्थान), 5.3.136 (अहल्येश्वर तीर्थ का माहात्म्य : राम द्वारा शिला की मुक्ति के पश्चात् अहल्या द्वारा तप, शतानन्द व गौतम सहित लिंग की स्थापना), हरिवंश 1.32.31 (वध्यश्व व मेनका-कन्या, दिवोदास-भगिनी, गौतम-भार्या), योगवासिष्ठ 3.89.5 (कृत्रिम अहल्या व कृत्रिम इन्द्र का आख्यान, अहल्या का स्वपति इन्द्रद्युम्न को त्याग इन्द्र नामक विप्र से अनुराग) वा.रामायण 1.49 (राम द्वारा अहल्या का उद्धार), 7.30 (ब्रह्मा द्वारा अहल्या का निर्माण, निरुक्ति, इन्द्र द्वारा जार की कथा), लक्ष्मीनारायण 1. 375 (अहल्या द्वारा अतिवृष्टि रोकने के लिए देवों का क्रमश: आह्वान

इन्द्र द्वारा चन्द्रमा की सहायता से अहल्या का घर्षण, अहल्या का उपल/शिला बनना) कथा सरित् 3.3.137 (इन्द्र द्वारा अहल्या का घर्षण, इन्द्र द्वारा मार्जार रूप धारण)

- साभार (INTERNET) अर्न्तजाल

पत्रकार नवनीत सॉरवी

शिक्षा एम.कॉम व एम.ए. हिन्दी पत्रकारिता, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

अनेक पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े हुए साथ ही सम्पादक थार बैल्स न्यूज़।

पता - 219, शिव मन्दिर
गांधी मैदान, द्वितीय बी रोड़
सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

संपर्क- 90017 95078

अहल्या–गौतम त्र्यम्बकेश्वर आश्रम

महर्षि गौतम स्वायम्भुव और वैवस्वत मन्वन्तर के सप्तर्षियों में एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि हैं। उत्तर भारत में पापविमोचनी गंगा का जो महत्व है वहीं दक्षिण में गोदावरी का है। जैसा गंगावतरण का श्रेय महातपस्वी भागीरथ को है वैसे ही गोदावरी प्रवाह महर्षि गौतम की महान तपस्या का फल है, जो उन्हें भगवान आशुतोष से प्राप्त हुआ था। भगीरथ के महान प्रयत्न से भूतल पर अवतरित हुई माता जाह्नवी जैसे भागीरथी कहलाती है वैसे ही महर्षि गौतम की तपस्या के फलस्वरूप आई हुई गोदावरी का नाम गौतमी गंगा है।

पुराणों में महर्षि गौतम की शिवभक्ति, योग, संयम, क्षमा, शील, ज्ञान तथा तप की बहुत महिमा कही गयी है। स्कंद पुराण के माहेश्वर कुमारिका खण्ड में गौतमेश्वर की महिमा वर्णन प्रसंग में महर्षि गौतम को अक्षपाद और महायोगी कहा गया हैं। गोदावरी नदी को पृथ्वी पर लाने के पूर्व महर्षि गौतम ने गौतमेश्वर लिंग की उपासना की। इससे शिव ने गंगा (गोदावरी) को पृथ्वी पर उतारा। ब्रह्म पुराण में गौतमी गंगा महात्म्य वर्णन के प्रसंग में आया है कि इस पृथ्वी पर गंगा को लाने का सर्वप्रथम श्रेय महर्षि गौतम को ही है। ब्रह्म पुराण में यह कथा इस प्रकार है–

वामन अवतार में जब भगवान ने अपना दूसरा पांव बढ़ाया, तो वह ब्रह्म लोक में जा पहुंचा। ब्रह्म ने अपने कमण्डलु के जल से उस पांव को धोया। वह मंत्र युक्त कमण्डल का जल विष्णु के चरणों से होकर ब्रह्म मेरू पर्वत पर गिरा और पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण चार दिशाओं में बांटकर पृथ्वी पर जा पहुंचा। दक्षिण में गिरे जल को भगवान विष्णु ने ग्रहण किया और पूर्व में जो जल गिरा उसे देवताओं, पितरों व लोकपालों ने ग्रहण किया।

भगवान शंकर की जटा में जो दिव्य जल आकर स्थित हुआ। उसके दो भेद हुए, क्योंकि उसे पृथ्वी पर उतारने वाले दो व्यक्ति थे। एक भाग को तो व्रत, दान और समाधि में तत्पर में रहने वाले ब्राह्मण

महर्षि गौतम ने भगवान शंकर की तपस्या करके गोदावरी नदी को भूतल तक पहुंचाया तथा दूसरा भाग बाद में क्षत्रिय राजा भगीरथ ने तपस्या के बल पर भागीरथी गंगा के रूप में इस भूतल पर उतारा। इस प्रकार एक ही गंगा के दो स्वरूप हो गए।

महर्षि गौतम ने गौतमी गंगा को पृथ्वी पर किस प्रकार उतारा। इस बारे में ब्रह्मपुराण में कहा गया है - एक बार महर्षि गौतम तपस्या करने कैलाश पर्वत पर गए और शिव स्त्रोत का जप करने लगे। इस प्रकार गौतम की स्तुति करने पर साक्षात भगवान शिव उनके समक्ष प्रकट हुए और वर मांगन के लिए कहा। गौतम ऋषि ने मानव जाति के कल्याणार्थ वर मांगा कि भगवन! समस्त लोकों को पवित्र करने वाली अपनी जटा में स्थित गंगा को आप ब्रह्मगिरी पर छोड़ दीजिए, जिससे स्नान करने मात्र से मन, वाणी और शरीर द्वारा किए ब्रह्महत्या आदि समस्त पाप नष्ट हो जाए। चंद्रग्रहण, सूर्य ग्रहण, अयानारम्भ, विषुवयोग, संक्रांति तथा वैधृति योग आने पर अन्य पुण्यतीर्थ में स्नान करने से जो फल मिलता है वह इनके (गौतमी गंगा) के स्मरण मात्र से ही प्राप्त हो जाए। इसके अतिरिक्त यह गंगा समुद्र में जिस-जिस मार्ग से पहुंचे, वहां आप अवश्य ही निवास करें। इसके तट के एक योजन (चार कोस) से लेकर दस योजन तक की दूरी के अंतर्गत आए हुए महापातकी की मनुष्य भी यदि स्नान किए बिना ही मृत्यु को प्राप्त हो जाए, तो वे भी मुक्ति का भागी हो।

गौतम ऋषि की यह बात सुनकर शंकर ने कहा - 'तथास्तु। इससे बढ़कर दूसरा कोई तीर्थ न तो हुआ है, न होगा। यह सत्य है, सत्य है, सत्य है। वेद में भी निश्चित किया गया कि गौतमी गंगा सब तीर्थों से अधिक पवित्र है।' यह कहकर भगवान शंकर अन्तर्धान हो गए। इसके पश्चात भगवती गंगा स्वयं को तीन स्वरूपों में विभक्त करके स्वर्गलोक, मृत्युलोक व रसातल में फैल गई। स्वर्गलोक में भी चार धाराएं हो गई। इस प्रकार एक ही गंगा के महर्षि गौतम की कृपा के अनुसार पन्द्रह स्वरूप हो गए।

ऐसा माना जाता है कि आदिदेव भगवान शिव अपने भक्त की आराधना से शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। ऐसे ही भक्तों की आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शिव अलग-अलग स्थानों पर ज्योर्तिरूप से अविर्भूत हुए और ज्योतिर्लिंग रूप में सदा के लिए वहां विद्यमान हो गए। पृथ्वी

पर वर्तमान शिवलिंगों की संख्या असंख्य है। तथापि इनमें द्वादश ज्योतिर्लिंगों की प्रधानता है। भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में एक त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग है। यह ज्योतिर्लिंग मुम्बई से 200 किमी पूर्व तथा नासिक रोड रेलवे स्टेशन से 25 किमी दक्षिण में त्र्यंबकेश्वर नामक ग्राम में हैं। इस लिंग की कथा सम्पूर्ण पापों का शमन करने वाली है। प्राचीन काल में महर्षि गौतम थे। परम धार्मिक अहल्या उनकी पत्नी थी। एक समय भयंकर अकाल पड़ा। इससे सभी प्राणी दु:खी हो गए। गौतम ऋषि परम परोपकारी थे। उन्होंने दक्षिण दिशा में ब्रह्म गिरी पर्वत पर दस हजार वर्ष तक तप किया था। प्राणियों के इस दारुण कष्ट को देखकर मुनि ने प्राणायाम चढाकर वरूण के निमित छ: माह तक उग्र तप किया। तब वरूण देवता प्रकट होकर बोले मुनिवर! मैं प्रसनन हूं, वर मांगिए। तब ऋषि ने वृष्टि के लिए प्रार्थना की। वरूण ने कहा कि मैं देवताओं की आज्ञा का उल्लंघन करके कैसे वृष्टि कर सकता हूं। परोपकारी गौतम ने विशेष आग्रह किया और कहा कि यदि आप प्रसन्न है तो हमें अक्षय, दिव्य, नित्यफलप्रद जल दीजिए। वरूण ने एक गर्त बनाने के लिए कहा। गौतम ऋषि ने एक हाथ गहरा गड्ढा खोदा। तब वरूण ने उसे दिव्य जल से भर दिया। वरूण ने कहा कि तुम्हारा यह अक्षत जल तीर्थस्वरूप होगा और पृथ्वी पर तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा। यहां जो भी धार्मिक कृत्य होंगे, वे सभी तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होंगे। उस अक्षय जल से सभी धन-धान्य उत्पन्न हो गए। सभी प्राणी, ऋषि, पशु-पक्षी वहां आने लगे। पृथ्वी तल से अनावृष्टि समाप्त हो गई और मंगलमय वातावरण छा गया।

एक बार ऋषि ने अपने शिष्यों को हाथ में कमण्डलु देकर वहां से जल लाने के लिए कहा। वहां अनेक ऋषि-पत्नियां जल लाने के लिए आई थी। उन्होंने जल के समीप शिष्यों को देखते हुए जल लेने से मना किया और कहा कि जल पहले हम लोग लें ले, फिर आप लोग ले लेना। ऐसा कहकर वे धमकाने लगी। शिष्यों ने लौटकर सारी बातें ऋषि-पत्नी से कहीं। ऋषि पत्नी ने उन्हें सांत्वना दी और स्वयं उनके साथ वहां गई और जल लाकर ऋषि गौतम को दिया। तदन्तर ऋषि ने अपना नित्यकर्म पूरा किया। इधर क्रोधाविष्ट हो ऋषि पत्नियों ने अहल्या को धमकाया और वे दुष्ट आशय लेकर लौट गई। उन्होंने अपने स्वामियों को उलटी बाते सुनाई। इन्हें सुनकर उन्होंने गौतम पर आपत्ति डालने के लिए गणेशजी की पूजा की। गणेशजी ने प्रसन्न होकर उनसे वर मांगने

के लिए कहा। ऋषियों ने कहा- यदि आप हम पर प्रसन्न है तो हमें ऐसा बल दें कि हम गौतम का तिरस्कार करके आश्रम से निकाल सकें। गणेशजी ने इस कार्य को अनुचित बताया, किन्तु उन ऋषियों के दुराग्रह पर उन्हें वरदान देकर आश्वस्त करना पड़ा।

इस कार्य की पूर्ति के लिए गणेशजी एक दुर्बल गौ का रूप धारण कर गौतम ऋषि के उस क्षेत्र में पहुंच गए, जहां जौ और धान उगे थे। वह गौ कांप रही थी। वह जौ और धान खाने लगी। देव वश गौतम वहां पहुंचे और तिनकों की मुट्ठी से उसे हटाने लगे। तृणों के स्पर्श से गो पृथ्वी पर गिर पड़ी और ऋषि के सामने मर गई। उस समय छिपे हुए गौतम विरोधी ऋषियों व उनकी पत्नियों ने कहा कि ऋषि गौतम ने अशुभ कार्य कर दिया। इनके द्वारा गौ हत्या हो गई है। इनका मुंह देखना पाप है। अत: इन्हें इस स्थान से बहिष्कृत कर दिया जाए। यह कहकर उन्होंने महर्षि गौतम को वहां से बहिष्कृत कर दिया। गौतमजी को अत्यंत अपमानित होना पड़ा। महर्षि गौतम ने उन्हीं लोगों से इसका प्रायश्चित पूछा- आप लोगों को मुझ पर कृपा करनी चाहिए। आप इस पाप को दूर करने का उपाय बताए। मैं उसे करूंगा। अन्य ऋषियों ने बताया कि- आप पूरी पृथ्वी की तीन बार परिक्रमा करें। मास व्रत करें, ब्रह्मगिरी पर सौ बार घूमे। तब आपकी शुद्धि होगी अथवा आप गंगा जल लाकर स्नान करें। एक करोड़ पार्थिव शिव लिंग बनाकर शंकर की पूजा करें। पुन: गंगा स्नान करें और सौ घड़ों से पार्थिव शिव लिंगों को स्नान कराएं तो उद्धार होगा।

गौतम ऋर्षि ने इस प्रकार कठोर प्रायश्चित किया। भगवान शिव प्रकट हो गए। उन्होंने गौतम से कहा- महामुने! मैं आपकी भक्ति से प्रसन्न हूं। आप वर मांगिए। गौतम ने भगवान शिव की स्तुति की और हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा- महादेव आप मुझे निष्पाप कीजिए। शिवजी ने कहा- मुने! तुम धन्य हो, तुम सदा निष्पाप हो, तुम्हारे साथ तो दुष्टों ने छल किया था। जिन दुरात्माओं ने तुम्हारे साथ उपद्रव किया था, वे स्वयं दुराचारी पापी और हत्यारे हैं। शिवजी की बात सुनकर गौतम आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने कहा कि- उन्होंने मेरा बहुत ही उपकार किया हैं। यदि ऐसा वे न करते तो कदाचित आपका यह दुर्लभ दर्शन न होता। तद्नन्तर गौतम ऋषि ने शिवजी से गंगा मांगी। शिवजी ने कहा- गंगे! तुम महर्षि गौतम को पवित्र करों। गंगा ने कहा कि मैं गौतम

और उनके परिवार को पवित्र करके अपने स्थान चली जाउंगी। किन्तु भगवान शिव ने गंगा को लोकोपरार्थ वैवस्वत मनु के 28वें कलियुग तक रहने के लिए आदेश दिया। गंगा ने उनकी आज्ञा को स्वीकार किया और भगवान शिव को भी अपने परिवार के साथ रहने के लिए प्रार्थना की। इसके बाद सभी ऋषिगण व देवगण, गंगा, गौतम और शिवजी की जय-जयकार करने लगे। देवों के प्रार्थना करने पर भगवान शिव वहीं गौतमी तट पर (त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग) के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। यह त्र्यंबक नामक ज्योतिर्लिंग सभी कामनाओं को पूर्ण करता है। यह महापातकों का नाशक और मुक्ति प्रदायक है। जब सिंह राशि पर बृहस्पति आते हैं, तब इस गौतमी तट पर सकल तीर्थ, देवगण, नदिया में श्रेष्ठ गंगाजी पधारती है तथा महाकुंभ पर्व होता है।

– **नवनीत साँखी** (पत्रकार)

''न्याय शास्त्र प्रणेता अक्षपाद महर्षि गौतम और अहल्या का यह अति प्राचीन मंदिर है जो कि महाराष्ट्र प्रदेश के नासिक क्षेत्र में पंचवटी से 30 किमी दूर ब्रह्मगिरी के प्रदक्षिण में स्थित है। महर्षि गौतम ने तपस्या करके गोदावरी नदी को पृथ्वी पर उतारा था। यहां पर स्वयं भू त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थापित किया गया।'' जिसमें दर्शन करने के लिए शिव भक्त आते हैं। गौतम अहल्या का यह सबसे प्राचीन मंदिर माना जाता है।

डॉ. वीणा जाजड़ा

शिक्षा– एम.ए. (हिन्दी–साहित्य, बी.एड., नेट, पी.एच.डी.)

लेखन कार्य में रूचि।

पुस्तक– सन्त सुखरामदास व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सम्प्रति– व्याख्याता – हिन्दी

निवास– पावटा 'सी' रोड़, जोधपुर (राज.)

पंच कन्याएँ

1. अहल्या -

देवी अहल्या, द्रौपदि, तारा, कुन्ती, मन्दोदरि धन्या।
प्रभुकी परम अनुग्रहभाजन पावन ये पाँचों कन्या।।

जब हम प्राचीन धर्म ग्रन्थों का अनुशीलन करते हैं तो हमें प्राचीन भारत की अनेक स्त्रियों के विलक्षण व्यक्तित्व की जानकारी प्राप्त होती है। प्राचीन धर्म ग्रन्थों में नारी का बड़ा ही गौरवस्पद वर्णन प्राप्त होता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में सोलह माताएं बतायी गई हैं। पाँच सतियों - सावित्री, शैव्या, सीता, दमयन्ती और देवहुति।

सावित्री, शैव्या, सीताजी, देवहुति और दमयन्ती।
आर्य जगत् की परम पावनी, पाँच सती ये कुलवन्ती।।

धर्म ग्रंथों में पाँच दिव्य धामेश्वरियों भी मिलती हैं वे इस प्रकार है -

रमा, राधिका, सीता, गौरी, ब्रह्माणी देवी अनुरूप।
दिव्य धाम स्वामिनी ये पाँच दिव्य नारि के हैं शुभ रूप।।

पाँच कन्याओं का जो वर्णन प्राचीन धर्म ग्रंथों में मिलता हैं। इन पाँच कन्याओं में प्रथम तीन अहल्या, मन्दोदरि और तारा रामायण महाकाव्य की पात्र है तथा शेष दो कुन्ती व द्रौपदी महाभारत की नारी पात्र हैं। पंच कन्याओं में सर्वप्रथम नाम अहल्या का आता है। यह ब्रह्मा की मानस पुत्री हैं। एक बार ब्रह्मा ने विचार किया कर सभी स्थानों से सौन्दर्य को एकत्रित कर एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री बनाई। उसके सम्पूर्ण अंगों में सौन्दर्य ही सौन्दर्य था। ब्रह्माजी ने उसका नाम अहल्या रखा। 'हल' कहते हैं पाप को जिसमें पाप नहीं हो उसे 'अहल्या' कहा जाता है। जो कथायें हमें अहल्या के बारे में मिलती हैं वे कथायें अनेक प्रश्न

खड़े करती है साथ ही मंथन करने के लिए प्रेरित करती है। अहल्या की कथा तुलसीदास की रामचरित्रमानस में आते-आते बहुत ही बदल गई।

हम यहाँ पर अहल्या के बारे में ज्यादा विचार-विमर्श नहीं करेंगे क्योंकि अन्य आलेखों में अहल्या के बारे में विशाद वर्णन किया गया है।

2. मंदोदरी -

भारतीय वाङ्मय में जिन पंच कन्याओं की बात की गई हैं, रामायण में तीन कन्यायें तथा महाभारत की दो नारी पात्र है। रामायण की पात्र मंदोदरी के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है। वाल्मिकी रामायण के अनुसार मयासुर दानव दानवों का विश्वकर्मा था। उसका परिणय अप्सरा हेमा से हुआ। ऐसी लोक मान्यता है कि मयासुर ने एक नगर का निर्माण किया जो कि थार के रेगिस्तान के बीच मण्डोर के नाम से जाना जाता है। जब हेमा अप्सरा वय-सन्धि को प्राप्त हुई तो उसने मयासुर को छोड़ कर स्वर्ग चली गई। उसके एक पुत्री थी जिसका नाम उसने मन्दोदरी रखा। जब मन्दोदरी विवाह योग्य हुई उस समय दानवेन्द्र ने उसका विवाह लंकापति रावण से कर दिया। मन्दोदरी अत्यंत बुद्धिमती और नीति निपुण महिला थी। मंदोदरी अत्यंत सुन्दर थी। रावण ने अनेक देव, गान्धर्व एवं नाग कन्याओं से विवाह किया, इन सभी में मंदोदरी सर्वप्रधान तथा रावण को सबसे प्रिय थी। मंदोदरी हमेशा रावण के कल्याण के बारे में विचारती थी, सदा सत् पथ पर चलाने का प्रयत्न करती थी।

पौलस्त्य मुनि की पौत्रवधु वह,
पुत्रवधु विश्रवा की।
लंकेश रावण की संगिनी,
पुत्री हेमा मया की।।1।।

पिता मयासुर माँ हेमा ने,
नाज़ों से था पाला।
कर विवाह मेरा रावण से,
झोली में सुख डाला।।2।

ठौर-ठौर मंडोर के प्रिय थे,
जहाँ तुम्हें था पाया।
चंवरी, जहाँ एक हुये हम,
केसर कुमकुम छाया।।3।।

तुलसीदास जी द्वारा विरचित 'रामचरितमानस' में मन्दोदरी का वर्णन प्राप्त होता है। जब श्रीराम जी की सेना समुद्र के तट पर आ जाती है। इसका समाचार दूत के द्वारा महारानी मन्दोदरी को दिया जाता है तब राजभवन में निवास करने वाली मन्दोदरी विचलित हो जाती है।

दूतिन सन सूनि पुरजनवानी।
मन्दोदरी अधिक अकुलानी।।

मन्दोदरी अपने पति रावण को समझाती है।

रहसि जोरि कर पति पग लागी।
बोली वचन नीति रस पागी।।

मंदोदरी अपने पति रावण को हाथ जोड़ चरणों में प्रणाम किया और नीति वचनों के साथ समझाने का प्रयास किया। परिवार के हित के लिए पति को पत्नी हमेशा मधुर वाणी में, विनम्रता व मनोहर भाषा में ही अपनी बात रखती है। मंदोदरी ने शत-प्रतिशत एक अच्छी पत्नी होने का धर्म निभाया। मंदोदरी ने रावण की सकारात्मक सोच विकसित करने का पूर्ण प्रयत्न किया। मंदोदरी निर्भयता व आंतरिक प्रेम की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। मंदोदरी के विचार मनोवैज्ञानिक थे वह जीवन में उच्च आदर्शों को प्राप्त करने की बात रावण से करती है। हिन्दू धर्म में वन्दनीया मानी जाने वाली मंदोदरी ने रावण को समझाने का बहुत प्रयत्न कर अपने स्त्री धर्म का निर्वाह किया। रावण की मृत्यु के पश्चात राक्षस समाज की परंपरा के अनुसार रावण के भाई विभीषण से पुनर्विवाह किया। उसके तटस्थ हृदय में न अपेक्षा थी और न उपेक्षा थी। मंदोदरी को वरदान प्राप्त था कि वह चिर यौवना रहने और कभी वृद्ध न होने और न ही जल सकने वाली नारी रहेगी।

Mandodari was a graceful woman.

3. तारा –

सती तारा की गणना पंचकन्याओं में है। यह किष्किंधा के राजा ऋक्षरजा की पुत्रवधु और वीर वानरराज बलि की धर्मपत्नी थी। तारा के पिता महान यौद्धा सुषेण थे। रामचरितमानस में वानराज बालि की पत्नी तारा का ज्यादा वर्णन नहीं मिलता है। इसने भी मंदोदरी की भाँति अपने पति को बहुत समझाया कि युद्ध मत करो। रामायण में किष्किंधा काण्ड में तारा का वर्णन मिलता हैं। जब बलि के भाई सुग्रीव ने बलि को युद्ध के लिए आह्वान किया तो तारा ने अपने पति को इस बात पर समझाया कि दुर्बल व्यक्ति जब गर्जन करता है तब दो ही बातें होती है – प्रथम तो उसे किसी सबल का साथ है। दूसरा उसकी मृत्यु निकट है। तारा बुद्धिमती और चिन्तनशील नारी थी। रामचरितमानस में तुलसीदासजी ने बहुत ही संक्षिप्त में तारा के प्रकरण को समाप्त कर दिया। पर वाल्मिकी रामायण में तारा की थोड़ी अधिक जानकारी प्राप्त होती है। वाल्मिकी रामायण में तारा दूतों के समाचार के विश्वास करने पर बाली पर जोर देती है। वाल्मिकी रामायण में तारा एक विदुषी और नीति कुशल महिला के रूप में योगदान देती है। वाल्मिकी रामायण के अनुसर तारा राजनीति और धर्म नीति में कुशल थी। बालि की मृत्यु के पश्चात तारा वानर जाति के नियमानुसार सुग्रीव की पटरानी बनी।

4. कुंती –

पाँच कन्याओं के अंतर्गत महाभारत की दो नारियां आती है। प्रथम कुंती और दूसरी द्रौपदी है। कुंती का मूल नाम पृथा था। मथुरा के राजा शूरसेन व उनकी धर्मपत्नि मारिषा की पन्द्रह संतानों में से एक कुंती थी। जब पृथा की आयु आठ वर्ष की थी उस समय शूरसेन ने अपने अंतरंग मित्र व चचेरे नि:संतान भाई कुंतीभोज को गोद दे दिया। इसलिए पृथा का नाम कुंती पड़ गया। कुंतीभोज का राज्य चर्मण्यवती की सहायक अश्वनदी के तट पर स्थित भोज नगर था। राजा कुंतीभोज के राजमहल में कोई स्त्री नहीं थी। कुंती का पालन-पोषण एक धात्री नाम की दासी ने ही किया था। कुंती अपने पोष्य पिता के घर अतिथि सत्कार में लगी रहती थी। अतिथि सत्कार से ही कुंती को महर्षि दुर्वासा से वरदान प्राप्त हुए। महाभारत के अनुसार कुंती सौन्दर्यवान तथा चरित्रवान

थी। वह अपने धर्म और व्रत का निरंतर पालन करती थी। कुंती का विवाह कुरूवंश के राजा पाण्डू के साथ हुआ और वह हस्तिनापुर आ गई। पाण्डू ने दूसरा विवाह माद्री से किया। पाण्डू की मृत्यु के पश्चात कुंती ने अपने व माद्री के पुत्रों का पालन-पोषण किया। कुंती कृष्ण की भुआ थी वह कृष्ण के देवीय स्वरूप को जानती थी। कौरवों द्वारा अनेक कष्ट देने पर भी वह कभी विचलित नहीं हुई कुंती की शिक्षाएं भागवत के प्रथम स्कन्द के आठवें अध्याय में श्लोक संख्या 18 से 43 तक है। इनकी कुल संख्या 26 है। कुंती के यह श्लोक उत्कृष्ट, दार्शनिक, धार्मिक, साहित्यिक निधि माने जाते है।

नमस्ये पुरुषं त्वाऽऽद्यमीश्वरं प्रकृतेः परम् ।
अलक्ष्यं सर्वभूतानामन्तर्बहिरवस्थितम् ।।1।।

मायाजवनिकाच्छन्नमज्ञाधोक्षजमव्ययम् ।
न लक्ष्यसे मूढदृशा नटो नट्यधरो यथा ।।2।।

तथा परमहंसानां मुनीनाममलात्मनाम ।
भक्तियोगविधानार्थं कथं पश्येम हि स्त्रियः ।।3।।

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च ।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः ।।4।।

नमः पङ्कजनाभाय नमः पङ्कजमालिने ।
नमः पङ्कजनेत्राय नमस्ते पङ्कजाङ्घ्रये ।।5।।

यथा हृषीकेश खलेन देवकी
कंसेन रूद्धातिचिरं शुचार्पिता।
विमोचिताहं च सहात्मजा विभो
त्वयैव नाथेन मुहुर्विपद्गणात् ।।6।।

विषान्महाग्नेः पुरुषाददर्शना-
दसत्सभाया वनवासकृच्छ्रतः ।
मृधे मृधेऽनेकमहारथास्त्रतो
द्रौण्यस्त्रतश्चास्म हरेऽभिरक्षिताः ॥7॥

विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो ।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम् ॥8॥

जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभिरेधमानमदः पुमान् ।
नैवार्हत्यभिधातुं वै त्वामकिञ्चनगोचरम् ॥9॥

नमोऽकिञ्चनवित्ताय निवृत्तगुणवृत्तये ।
आत्मारामाय शान्ताय कैवल्यपतये नमः ॥10॥

मन्ये त्वां कालमीशानमनादिनिधनं विभुम् ।
समं चरन्तं सर्वत्र भूतानां यन्मिथः कलिः ॥11॥

वेद कश्चिद्भवंश्चिकीर्षितं
तवेहमानस्य नृणां विडम्बनम् ।
न यस्य कश्चिद्दयितोऽस्ति कर्हिचिद
द्वेष्यश्च यस्मिन् विषमा मतिर्नृणाम् ॥12॥

जन्म कर्म च विश्वात्मन्नजस्याकर्तुरात्मनः ।
तिर्यङ्नृषिषु यादःसु तदत्यन्तविडम्बनम् ॥13॥

गोप्याददे त्वयि कृतागसि दाम तावद्
या ते दशाश्रुकलिलाञ्जनसम्भ्रमाक्षम् ।
वक्त्रं निनीय भयभावनया स्थितस्य
सा मां विमोहयति भीरपि यद्बिभेति ॥14॥

केचिदाहुरजं जातं पुण्यश्लोकस्य कीर्तये ।
यदोः प्रियस्यान्ववाये मलयस्येव चन्दनम् ॥15॥

अपरे वसुदेवस्य देवक्यां याचितोऽभ्यगात् ।
अजस्त्वमस्य क्षेमाय वधाय च सुरद्विषाम् ॥16॥

भारावतारणायान्ये भुवो नाव इवोदधौ ।
सीदन्त्या भूरिभारेण जातो ह्यात्मभुवार्थितः ॥17॥

भवेऽस्मिन् क्लिश्यमानानामविद्याकामकर्मभिः ।
श्रवणस्मरणार्हाणि करिष्यन्निति केचन ॥18॥

शृण्वन्ति गायन्ति गृणन्त्यभीक्ष्णशः
स्मरन्ति नन्दन्ति तवेहितं जनाः ।
त एव पश्यन्त्यचिरेण तावकं
भवप्रवाहोपरमं पदाम्बुजम् ॥19॥

अप्यद्य नस्त्वं स्वकृतेहित प्रभो
जिहाससि स्वित्सुहृदोऽजीविनः ।
येषां न चान्यद्भवतः पदाम्बुजात्
परायणं राजसु योजितांहसाम् ॥20॥

के वयं नामरूपाभ्यां यद्भिः सह पाण्डवाः ।
भवतोऽदर्शनं यर्हि हृषीकाणामिवेशितुः ॥21॥

नेयं शोभिष्यते तत्र यथेदानीं गदाधर ।
त्वत्पदैरङ्किता भाति स्वलक्षणविलक्षितैः ॥22॥

इमे जनपदाः स्वृद्धाः सुपक्वौषधिवीरुधः ।
वनाद्रिनद्युदन्वन्तो ह्येधन्ते तव वीक्षितैः ॥23॥

अथ विश्वेश विश्वात्मन् विश्वमूर्ते स्वकेषु मे ।
स्नेहपाशमिमं छिन्धि दृढं पाण्डुषु वृष्णिषु ॥24॥

त्वयि मेऽनन्यविषया मतिर्मधुपतेऽसकृत् ।
रतिमुद्वहतादद्धा गङ्गेवौघमुदन्वति ॥25॥

श्रीकृष्ण कृष्णसख वृष्ण्यृषभावनिध्रुग्-
राजन्यवंशदहनानपवर्गवीर्य।
गोविन्द गोद्विजसुरार्तिहरावतार
योगेश्वराखिलगुरो भगवन्नमस्ते ।।26।।

जैन धर्म में सोलह महासतियों में कुन्ती और द्रौपदी की गणना की गई है वैसे तो जैन धर्म में अनेक सतियों के वर्णन मिलते हैं परन्तु सोलह सतियों के नाम अधिक ग्रंथों में प्राप्त होते है। संस्कृत के एक श्लोक में 16 सतियों के नाम इस प्रकार से प्राप्त होते हैं –

ब्राह्मणी चन्दनबालिका भगवती राजीमती द्रौपदी।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा।।
कुन्ती शीलवती नलस्यदयिता चूला प्रभावत्यपि।
पद्मावत्यपि सुन्दरी प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंङ्गलम्।।

इन सोलह सतियों की अनेक ग्रंथों से जानकारी प्राप्त होती हैं वे ग्रंथ इस प्रकार हैं –

1. जैन सती रत्नों, प्रकाशक – जैन सस्ती वाचनमाला भवनगर, संवत् 1986
2. सोलसती – धीरजलाल धनजी शाह, प्रकाशक गुर्जर ग्रंथ रत्न, अहमदाबाद, संवत् 1991
3. सोलह सती – रत्न कुमार जैन प्रकाशक साधना मन्दिर, बड़ी सादड़ी, सन् 1948
4. सोलह सती – रत्नकुमार जैन (द्वितीय संस्करण) प्रकाशक सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा, सन् 1951
5. महासती सोलह – स्वतंत्र 16 कथाएँ, कल्याण ऋषिजी प्रकाशक अमोल जैन ज्ञानालय, धुलिया, संवत् 2011
6. सोलह सतियाँ – धनराज, प्रकाशक मदनचन्द सम्पतराय, गंगानगर, सन् 1962
7. महासती सोलह – मधुकर मुनि, प्रकाशक मुनि हजारीमल स्मृति प्रकाशन, सन् 1971

8. सतियाँ सोलह, जैन सिद्धान्त बोल संग्रह – सम्पादक भैरूदान सेठिया, प्रकाशक भैरूदान सेठिया बीकानेर, संवत् 1999

ग्रंथों में इन सोलह महासतियों का वर्णन प्राप्त होता है – ब्राह्मी, सुन्दरी, चन्दनबाला, राजीमती, द्रौपदी, कौशल्या, मृगावती, सुलसा, सीता, सुभद्रा, शिवा, कुन्ती, दमयन्ती, पुष्पचुला, प्रभावती, पद्मावती। यह सोलह महासतियां श्वेताम्बर समाज में प्राप्त होती है।

5. द्रौपदी –

विश्व के सम्पूर्ण साहित्य में द्रौपदी के समान कोई स्त्री चरित्र नहीं मिलता है। द्रौपदी एक सम्पूर्ण नारी पात्र है। द्रौपदी एक असाधारण नारी चरित्र है। द्रौपदी के ज्ञान, तर्क, बुद्धि और विवेक जैसे असंख्य गुणों की खान है। द्रौपदी को अनेक नामों से जाना जाता है – द्रौपदी, याज्ञसेनी, पाञ्चाली, कृष्णा, पृषती, अग्निकन्या। यज्ञ से उत्पन्न होने के कारण याज्ञसेनी, पांचल नरेश के द्वारा पालन-पोषण करने के कारण, पाञ्चाली, द्रुपद नन्दिनी के कारण द्रौपदी, अग्नि कुण्ड से उत्पन्न होने के कारण अग्निकन्या नाम से जानी गई। अद्भूत सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति, सौन्दर्य की भांति द्रौपदी के केशों का सौन्दर्य भी अद्भूत था। द्रौपदी के पिता द्रुपद तथा माता सोत्रामणि। यज्ञ में उत्पन्न भाई धृष्टद्युम्न। इसका एक पूर्व भाई शिखंडी भी है। यज्ञ में द्रुपद के द्रौपदी व धृष्टद्युम्न के अवतरण के पश्चात आठ अन्य पुत्र भी हुए उनके नाम इस प्रकार है- सुमित्र, प्रियदर्शन, चित्रकेतु, ध्वजकेतु, वीरकेतु, सुरथ, सकेतु एवं शत्रुंजय।

द्रौपदी के विवाह के लिए द्रुपद राजा ने स्वयंवर रखा। उस स्वयंवर की शर्त के अनुसार अर्जुन जीत गया। माता कुंती की आज्ञा के अनुसार पाण्डव के पाँचों पुत्रों को अपना पति स्वीकार किया। जुआं में जब पाण्डवों ने सभी कुछ दाव पर लगा दिया साथ ही द्रौपदी को भी दाव पर लगा देने पर वे सब कुछ हार गये। इस पर दुर्योधन ने दु:शासन को उसे वस्त्र हीन करने को कहा है। जब दु:शासन उसे वस्त्र हीन कर रहा था तो उसने भगवान श्री कृष्ण से प्रार्थना कि 'हे कृष्ण! हे द्वारकानाथ। हे करूणावरूणालय! दौड़ों! कौरवों के समुद्र में मेरी लज्जा डूब रही है। रक्षा करो। रक्षा करो।''

पाण्डवों का बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञात वास खत्म होने पर पाण्डवों ने अपने राज्य की दुर्योधन से मांग की पर दुर्योधन ने सुई की नोंक के बराबर जमीन देने से इनकार कर दिया। जब श्री कृष्ण दुर्योधन को राज्य देने के शान्तिदूत बन कर हस्तिनापुर जा रहे थे तब द्रौपदी ने अपनी शपथ कृष्ण को बताकर कहा कि, हे कृष्ण आज बारह वर्षों से मैंने अपने केशों में तेल नहीं लगाया व ना ही इन्हें बांधा है। जो केश भरी सभा में खींचे गये थे। क्या मेरे यह केश खुले ही रहेंगे। मैं दुष्ट दु:शासन के भुजा के रक्त से धो कर कब बांधूंगी।

करूणा-सदन! तुम कौरवों से सन्धि जब करने लगो।
चिन्ता व्यथा सब पाण्डवों की शान्ति कर हरने लगो।।
हे तात्! तब इन मिलन मेरे मुक्त केशों की कथा।
हे प्रार्थना, मत भूल जाना, याद रखना सर्वथा।।
यह कृष्णा श्री कृष्ण से कहती है हे तात्।
सन्धि समय मत भूलना इन बालों की बात।।

श्री कृष्ण की पत्नी सत्यभामा ने एक बार द्रौपदी से गृहस्थाश्रम के बारे में पूछा तो द्रौपदी ने सुखी घर-परिवार के लिए उसने अनेक शिक्षाप्रद बातें बताई। घर में सभी के साथ सद्व्यवहार करना। घर को साफ रखना। गुप्त रूप से अन्न का संचय करना। कभी किसी का तिरस्कार नहीं करना। दुष्ट मानसिकता वालों के साथ व्यवहार नहीं करना। घर के बड़े बुजुर्ग लोगों को जो वस्तुएं पसंद नहीं हो उसका उपयोग नहीं करना। घर के पूजनीय लोगों ने जो भी परिवार के धर्म बताये है उनका पालन करो। द्रौपदी ने कहा कि भिक्षा देना, अतिथि सत्कार, श्राद्ध तथा त्यौहारों पर मिष्ठान बनाना, माननीयों का सत्कार करना, सुखी परिवार का आधार है। परिवार की आय-व्यय व बचत का हिसाब रखना आदि शिक्षाएं द्रौपदी ने सुखी परिवार के लिए बताई।

द्रौपदी के पाँच पुत्र प्रतिविन्ध्य, सुत, सोम, श्रुतकीर्ति, शतानिक एवं श्रुतकर्मन को अश्वथामा ने रात्रि में शिविर में अग्नि से जलाकर निर्दयता पूर्वक मार दिया।

- डॉ. वीणा जाजड़ा

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. महारानी मंदोदरी, प्रतिभा अखिलेश, पृ. 14
2. महारानी मंदोदरी, प्रतिभा अखिलेश, पृ. 28
3. महारानी मंदोदरी, प्रतिभा अखिलेश, पृ. 28
4. जैन ग्रंथ प्रस्थावना, अगरचन्द नाहटा, पृ. 7
5. कविता-कलाप, सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदी, पृ. 27
6. श्रीमद् भागवत - कल्याण, गीताप्रेस गोरखपुर, प्रथम स्कन्ध, आठवां अध्याय, श्लोक 18 से 43 तक, पृ. 74-76

आधार ग्रंथ :

1. महारानी मंदोदरी काव्य कथा, प्रतिभा अखिलेश, वर्ष 2016
2. पौराणिक महिलायें, रमेश तिवारी, वर्ष 2015
3. नारी अंक, गीताप्रेस गोरखपुर, वर्ष 1948
4. मानस में नारी, राजेन्द्र अरूण, वर्ष 2014
5. Deccan Chronicle - Married to Frog Queen, Sadhguru Jaggi Vasudev, 17 Oct. 2012
6. जैन ग्रंथ प्रस्तावना, अगरचन्द नाहटा, बीकानेर,
7. कुंती, नरेन्द्र कोहली, वर्ष 2014
8. कविता-कलाप, महावीर प्रसाद द्विवेदी, वर्ष 1909
9. तमाश मेरे आगे, हेमंत शर्मा, वर्ष 2014
10. द्रौपदी, प्रतिभा शर्मा, वर्ष 2015
11. अग्निकन्या, ध्रुव भट्ट, वर्ष 2015
12. द्रौपदी की आत्मकथा, मनु शर्मा, वर्ष 2014
13. द्रौपदी, काजल ओझा वैद्य, वर्ष 2014
14. पाञ्चाली, शत्री मिश्र, वर्ष 2015
15. एक पहेली पाञ्चाली, हरिशंकर पारीक (तिवाडी), वर्ष 2017
16. अहल्या, मथुरादत्त पाण्डेय, वर्ष 2014
17. अहल्या, नरेन्द्र कोहली, वर्ष 2019
18. महामोह अहल्या की जीवन कथा, प्रतिभा राय, वर्ष 2014
19. महाभारत में मातृ वंदना, दिनकर जोशी, वर्ष 2011
20. अक्षर वार्ता, अंक 17, जनवरी 2021, अहल्या का चरित्र चित्रण - डॉ. दीपशिखा

राजराजेश्वरी उपाध्याय

संप्रति- अध्यापिका
लेखिका- कल्याण, सृजन
निवास - एस-10, बिदावत मार्ग, अम्बावाड़ी, जयपुर (राजस्थान)
संपर्क 8949951226

अहल्योपाख्यान

हमारे आर्य वाँग्मय के अंतस्तलीय गंभीर अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि हमारी प्रातः स्मरणीया सतीयां, कन्याएं व सौभाग्यवर्धिनी 'उमा उषा च बैदेही' आदि देवियों का जीवन चरित्र सुतप्त स्वर्ण 'कंचन' या कुन्दन किये गये- निर्मल धातु जैसा धूतपाप पुण्यशील परम पवित्र व जगत्पवत्रि करने वाला है।

हमारी आर्य सतियां, देवियां व कुलवधुएं जिनको आज हम आराध्या पुज्या व अग्र पुज्या रखते है। उनके जीवन का पौर्वापपर्य अनुशीलन नितांत अपेक्षित है, आज हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है हमारे समाज में समग्र शिक्षा का अभाव हमारा विशाल वैदिक औपनिषद् व पौराणिक वांग्मय विश्व की सबसे बड़ी प्राचीन प्रामाणिक व पुरुषार्थ चतुष्टय की देने वाली अकूत सम्पदा को आंचल में समेटे हुए वाग्देवी लिपिनु 'लिपितनुंवागीश्वरी माश्रये' ऋतंभरा प्रज्ञा से कामधेनु को दोहन करने वाला वत्स व गोपाल हमारे मध्य में नहीं है, वेदार्थ का निरूपण विश्लेषण मीमांसा व अनुसंधान पराश्रित प्रायः हो गया है वेदमास्य विषयक ज्ञान में भी हमारा राजव समाज - मेनडानल कीथ बेकर मेक्समुलर आदि के विकृत ग्रहित व मिशनरी नियंत्रित वेद विकृति की कूटनीति के षडयंत्राधारित रचित भाष्यों व अनुवादों पर ही निर्भर है।

पाश्चात्य विश्लेषकों व फ़िलासफरों ने ईशा, मूशा जुड़ा को ही महामहिमा मंडित करने का भगीरथ प्रयास किया है साथ ही वेद वेदानुगामी स्मृति तदुक्त धर्माचरण विधि निषेधों को मिटाने का कुत्सित प्रयत्न भी तह दिल से किया है, वेरी का घाव भी प्रशंसनीय होता है। तदरीत्पा उनकी कार्यशैली आज भी अनवरत कार्य कर रही है उत्तरोत्तर प्रगति पथारूढ है, लेकिन हमारी परंपराएं हमारा अध्ययन शून्यतर शून्यता की तरफ ही बढ़ता जा रहा है।

वेदों की विकृत व्याख्या, पौराणिक कथानकों व उपाख्यानों में विकृत मानसिकता, अश्लीलता व दिव्य जन्मा अयोनिजा सृष्टि को संदेहास्पद दृष्टि से देखना उपेक्षा वृत्ति से प्रस्तुत करना ही जिन का ध्येय व उद्देश्य रहा है, उनके द्वारा रचित परवर्ती काव्य ग्रंथ व व्याख्याएं 'क्षेपक' व विदेशी आक्रांताओं द्वारा जलाये व नष्ट किये गये वांग्मय का पुनः लेखनादि कार्यों में उत्थान व उद्धार के नाम पर पतन विकास के नाम पर ह्रास ही हुआ है अस्तु

इन्हीं दुर्निंतियों कुत्सित विचारों व भ्रामक तथ्यों की एक मिशाल है अहल्या इन्द्र प्रसंग –

वैदिक निरूक्तादि ग्रंथों का चुडान्त अध्यनाभाव ही ऐसी कथा को समाज में उपस्थापित किया है, वेदानुसंधान सायण उव्वर महीधर 'हरिहरानन्द सरस्वती श्री स्वामी करपात्रोपाह्व के वेदार्थ परिजातादि भाष्य व भाष्य ग्रंथों की उपेक्षा ही वर्तमान परिस्थितियों का जनक है।

देवी अहल्या का लोकोत्तर सतीत्व सौन्दर्य व ललित ललालम लावण्य – नारी सौन्दर्य भी सहज़ सुषमा सतीतव पतिव्रतता की प्रति मूर्ति देवी अहल्या का इन्द्रजारत्व विषय अनुसंधेय व पुनर्निरीक्षण योग्य है, इन्द्र की पद लिप्सा, सती सावित्रियों के साथ छेड़छाड़ की घटनाएं हमारे आधुनिक नवयुगीन सभ्य सभ्रांत कहलाने वाले यही उदाहरण देकर प्रस्तुत करते है। अजी! ये तो परम्परा से चला आया है। क्य – इद्र का गुठपत्नि गमन, चन्द्रकत, तारापहरण और रावण का सीताहरण – यदि उदाहरण प्रस्तुत करते है श्री कृष्ण की रासलीला तर्ज पर युवतियों संग हास परिहास नृत्य नाच की अभद्र प्रस्तुति 'रासानुकरण' कहा जाने लगा हे, पूर्व में भी ऐसा ही होता था, कह देने में संकोच भी नहीं करते श्रीकृष्ण द्वारा विष पान, गोवर्धन धारण आदि कार्य भी हुए है – क्या । उनका भी अनुसरण करने का कभी मानस बनाया? उत्तर मिलेगा – नहीं जी! वो कैसे संभव हो सकता है – वो संभव नहीं तो रास कैसे संभव?

नुतन शिक्षा संपन्नों की परंपराएं डार्विन के विकासवाद की व कम्यूनिस्ट व वामपंथी विचारकों की प्रस्तुती है। आर्य परंपराएं उन्हें कपोल कल्पित प्रायः लगती है। यदि रामायण इतिहास नहीं है। कपोल कल्पित कल्पना प्रसूत काव्य है तो फिर अहल्या इन्द्र उपाख्यान भी

क्षेपक किवा – पाश्चात्यों की भारतीय सतीत्व धर्म पर उछाला गया कीचड़ की समझना चाहिए। वेदोक्त 'अहल्या इन्द्रजारः' का तात्पर्यानुसंधान मिमांसारीत्या विश्लेषण का अभाव व हमारी कमजोरी है।

अहल्या के पाद पद्मों श्री राम का वन्दन यह प्रसंग हमारे आधुनिक वक्ता व प्रवक्ता गण अनदेखा कर देते हैं। उन्हें रामायण वांग्मय के समग्र अध्ययन अनुशीलन एवं पठन पाठन की परमावश्यकता प्रतीत होती है, हमारा स्वर्णिम अतीत व गोल्डन हिस्ट्री स्वर्णाक्षरों में लेख्य है। उन्हीं स्वर्णाक्षरों में टंकित लिखित भारतीय नारी गौरव का प्रथम पृष्ठ अहल्या को ही समर्पण होगा। ऐसी मेरी मान्यता है।

जहां तक सवाल है कि तुलसी के 'राम' मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम तो है। लेकिन अवतारी भगवान भी है। इसलिए उनके काव्य की रचना में श्रीराम का ईश्वरत्व प्रतिपादन करना उनको अभिष्ट है। वहां अहल्योद्धार को ही चित्रण किया है, लेकिन अन्यार्स रामायणों में सती अहल्या के पद वन्दन का शास्त्रीय मण्डन है। आज के तथाकथित उपदेशक इस तथ्य से अनभिज्ञ है या अंधानुकरण 'अन्धे अन्धा ढेलिया दोन्यूं कूप पड़न्त' ही चरितार्थ हो रहा है।

'नारी सशक्तिकरण', 'महिला आत्मरक्षा' महिला दिवसादि की सार्थकता जब ही सिद्ध होगी कि हम समाज को यह बता दें कि अहल्या हेया नहीं अपितु पूज्यावन्धा एवं जगद्वन्धा जगदीश्वर वन्धा है।

– राजराजेश्वरी उपाध्याय

विश्व का गौरव : महर्षि गौतम

महर्षि गौतम वैदिक काल के प्रमुख ऋर्षियों में से एक माने गये है। वैवस्वत मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक अलौकिक चरित्र वाले ऋर्षि है। महर्षि गौतम का चरित्र, जीवन अलौकिक और अद्वितीय है। महर्षि गौतम का जन्म सातवे मन्वन्तर के प्रथम सत्ययुग चैत्रशुक्ला प्रतिपदा को हुआ- अत: इस तिथि में गौतम जयन्ती मनाई जाती है ।

गौतम शब्द के अनेक अर्थ है - ''सबसे तेज चलने वाला'', शरीर की गति की एक सीमा होती है । असीम गति की मानसिकता एवं चिन्तनशीलता के कारण ही उनको गौतम नाम से जाना जाता है । जीवन, समाज और राष्ट्र का अभिवर्धन करने वाले को गौतम कहा जाता है। आत्मा का सर्वश्रेष्ठ रूप गौतम कहलाता है। ''गोभिध्वस्तं तम: यस्य स गौतमं:'' अर्थात् ज्ञान रश्मियों के द्वारा अज्ञानान्धकार को जिसने ध्वस्त कर दिया हो वह गौतम है। वैदिक शब्दकोष के अनुसार 'गच्छति पारं ज्ञानं यस्य स गौतम'' अर्थात् जिसके ज्ञान का सवरूप अपरम्पार हो वह गौतम है। महर्षि गोतम को अक्षपाद गौतम के नाम से भी जाना जताा है। अक्षपाद का अर्थ है जिनके चरणों में दर्शन की शक्ति हो। अक्षपाद का लाक्षणिक अर्थ है प्रत्येक बिन्दू पर सोच-समझकर कार्य किया जाय। तर्क सम्मत अर्थ को अक्षपाद कहा जाता है।

महर्षि गौतम ने अनेक धर्म ग्रन्थों की रचना की। महर्षि गौतम के दर्शन के सूत्र हमें दूसरे धर्म ग्रन्थों में मिलते है पर दूसरे धर्म ग्रन्थों के सूत्र गौतम के धर्म ग्रन्थों में नहीं मिलतें है। इससे गौतम के धर्म ग्रन्थों की प्राचीनता प्रमाणिकता सिद्ध होती है। न्याय सूत्र, धर्मसूत्र, गौतम

स्मृति, गौतमीय तन्त्र, पितृमेघ सूत्र, वृद्ध गौतम स्मृति, धनुविद्या आदि। इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना न्याय शास्त्र है न्याय शास्त्र को अन्वीक्षा दर्शन भी कहा जाता है। अन्वीक्षा दर्शन के दो अर्थ है हेतु विद्या और आत्मविद्या। न्याय शास्त्र में 5 अध्याय व 16 विषय का वर्णन है। महर्षि गौतम की गणना बीस प्यासों में की गई। महर्षि गौतम द्वारा रचित वैदिक मन्त्रों की संख्या 375 है जिसमें ऋग्वेद के 213, युर्जवेद के 67, सामर्वेद के 68, अर्थेवेद के 27 मन्त्रों के रचियता है।

महर्षि गौतम तर्क शास्त्र के पांरगत विद्वान थे। आप प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य थे। कुल 12 व्याकरण है, जिसमें से एक व्याकरण के रचियता महर्षि गौतम है। सूर्य भगवान को 12 व्याकरणों का ज्ञान था। सूर्य से 12 व्याकरण का ज्ञान हनुमानजी ने प्राप्त किया। महर्षि गौतम ने आयुर्वेद पर अष्टांग हृदय (Heart) में अपने मंतव्य दिये। आप कृर्षि कर्म को विधिवत करने के प्रर्वतक भी है। आपका जीवन मानव मात्र के कल्याण के लिए अर्पित था।

पृथ्वी पर गंगा लाने का श्रेय दो व्यक्तियों को है प्रथम महर्षि गोतम को जिन्होंने गोदावरी नदी के रूप में भूतल पर लाये तथा दूसरी नदीं गंगा को क्षत्रिय राजा भागीरथ ने तपस्या के बल से भूतल पर उतारा।

सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्माजी ने एक अद्वैत रूपवती स्त्री की सृष्टि की। वह सौन्दर्य की मूर्ति थी। उसका नाम अहल्या रखा। उसका विवाह महर्षि गौतम से किया।

महर्षि गौतम की उपस्थिति के प्रमाण भी हमें अनेक स्थानों पर मिलते हैं।

1. रावण पर विजय पाकर अयोध्या लोटे राम के दर्शनार्थ उत्तर दिशा से आये मुनियों में महर्षि गौतम थे।
2. महाराजा परीक्षित के प्रायोपवेश में वे उपस्थित थे।
3. कुरूक्षेत्र युद्ध के दिनों में कुरूक्षेत्र के मैदान में पहुँच कर द्रोणाचार्य से मिले तथा युद्ध को रोकने की आवश्यकता बताई।
4. सत्यवान के पिता धुमत्सेन का उसके अंधत्व से मुक्ति का

वरदान दिया।

5. शुक्राचार्य ने तुंडिऋषि से शिवसहस्त्र नाम सीखा और उसे गौतम को समझाया।

6. लक्ष्मण जी ने गौतम के आश्रम के पास वैजयंत नामक महल बनवाया था।

7. दशरथ की मृत्य पर अयोध्या में समागत ऋषियों में गौतम थे।

8. द्वारका में श्री कृष्ण-बलराम के दर्शनार्थ पहुँचे मुनियों में गौतम थे।

9. इन्द्र और ब्रह्मा की सभा में गौतम की उपस्थिति थी।

10. शिव-पार्वती के विवाह के समय सप्त ऋषियों में महर्षि गौतम उपस्थित थे।

11. श्री लक्ष्मी ने महर्षि गौतम का अर्घवन्दन किया।

कलयुग के अन्दर मनु द्वारा निर्दिष्ट धर्म संहिता की प्रधानता है। उसी प्रकार त्रेता युग में महर्षि गौतम धर्म संहिता की प्रधानता थी। महर्षि गौतम अच्छे विचार और कर्म पर जोर देते थे। सादा जीवन और उच्च विचार के प्रवर्तक गौतम ऋषि है। गौतम ऋषि जीवन में मधुरता भरने की कामना करते थे। महर्षि गौतम भारत का ही नहीं विश्व का गौरव है।

- डॉ. माला शर्मा

।। श्री ।।

नाम	:	श्रवण कुमार उपाध्याय	पिता का नाम	: चेतनराम उपाध्याय
माता का नाम	:	श्यामादेवी उपाध्याय	जन्म तिथि	: 1 अप्रेल 1975
जन्म स्थान	:	गांव कुड़ी, तहसील भोपालगढ़, जिला जोधपुर (राजस्थान)		
शिक्षा	:	एम. ए. (दर्शन शास्त्र, हिन्दी साहित्य, समाज शास्त्र, इतिहास, लोक प्रशासन), एल. एल. बी., बी. एड.		
डिप्लोमा	:	Introduction of Budhism, Adult & Continuing Education		
संप्रति	:	पत्रकारिता एवं स्वतन्त्र लेखन		

सम्पादक व लेखन

गौतम गुंजन	गौतम समन्वय
गौतम अन्वीक्षा	हीरक जयन्ती स्मारिका
हरिद्वार लोकार्पण विशेषांक	द्वारिकापुरी स्मारिका
महर्षि गौतम नमामी (महर्षि गौतम के सहस्त्र नाम)	
``यात्रा'' सामाजिक विरासत की	``या देवी सर्व भूतेषु'' (गुर्जरगौड़ ब्राह्मण समाज की कुलदेवी)
काक कबि की कुण्डलिया एवं कविताएँ	अहल्या विमर्श

सम्मान व पुरस्कार

राज्य पुरस्कार – 2005 (स्वनियोजन क्षेत्र), जयपुर
गौरव सम्मान – 2006 (ठः न्याति पत्रिका, बीकानेर)
शिक्षा ज्ञान वारिधी – 2011 (अखिल भारतवर्षिय श्री गुर्जारगौड़ ब्राह्मण महासभा, हीरक जयन्ती, पुष्कर)
युवा रत्न – 2015 श्री गुर्जारगौड़ ब्राह्मण युवक संघ, जैतारण
नवरत्न – 2014 श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण नवरत्न सम्मान, सवाई माधोपुर
राज्य सरकार – 2019 (प्रेरणा स्त्रोत पुरस्कार, जयपुर)
गौतम सभा जोधपुर द्वारा सम्मानित

समाज सेवा

देश की अनेकानेक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक संस्थाओं से सम्बन्ध ट्रस्टी : अखिल भारतवर्षीय श्री महर्षि गौतम शैक्षिणिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट, त्र्यम्बकेशर गौतम आश्रम नासिक, आजीवन सदस्य : अखिल भारतीय दर्शन परिषद नई दिल्ली, गौतम सभा जोधपुर, अखिल भारतवर्षिय श्री गुर्जारगौड़ ब्राह्मण महासभा

संस्थापक

श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण इतिहास संरक्षण एवं सवर्धन समिति, जोधपुर।
शब्द संधान, जोधपुर

वर्तमान सम्प्रति

सम सामयिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में नियमित लेखन

सम्पर्क सूत्र

श्री सन्देश, 427/अ, प्रथम सी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर – 342 003(राज.)
दूरभाष : 0291–2640109, मो. 7220824564 ई–मेल : shrawanuppadhyay@gmail.com

शब्द संधान,
जोधपुर

8 906116 050897